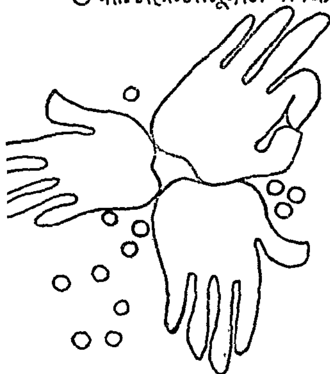
वात वेहाणा

(राजस्थानी कहाणिया)

क कविता प्रकाशन, बीकानेर

बात बेदाणा

आ. महो. नानूराम संस्कर्ता



मोल : चालीस रिपिया मात्र
संस्करण, 1991
प्रकाशक : कविता प्रकाशन, [illegible], बीकानेर (राज.)
छापणियो : विकास आर्ट प्रिंटर्स शाहदरा, दिल्ली 32

VAT VAIDANA (Short Stories)
By NANURAM SANSKARTA @ Rs

निरख-परख

वडी खुशी री बात है क राजस्थानी भाषा रा स्याणा पुराणा बूढा कहाणीकार साहित्य महोपाध्याय श्री नानूराम संस्कर्ता री फ्रखो लिखो कहाण्या री पोथी 'बात बदाणा' मिली। बाची बचाई, घणी आछी दाय आई। समाज वीचारी गुलाबी कहाण्या रा सरस-सुवादला, खट्ट मीठा सफेद दाणा मन मुफीद रूच्या-पच्या। भाषा साहित्य री वधोतरी देखाव हरख उपज्यो। पोथी सरळ हेत मिमता साथै लोक भाषा रै ऊडै महतव नै उजाळै।

श्री संस्कर्ता जी सैंड्कड् कहाण्या लिखी है। पण इण पोथी मे पुराणा री, इतिहास री, राजनीति तथा मिनख समाज रै सुख दुख री कहाण्या माडी ओपाई है। धम ईमान, सर्म वडो बलवान, फर भापूट, मजाकियो माणस, मूळी री गूग सुहागरासो, गाव री लारली बात, गुरु-बैरागी, गांवाबू इलाज, भर्ल्ले मल्ले री चुघरै इत्याद कहाणी-दाणा जोख लुभाणा भावै जचै, धरा पुराण अर कूड साच दो कहाण्या सरगल सराबोर इधकै रग व्यग तणी है। श्री संस्कर्ता गाव मे वसै, अणछूया सदभ खोजै-लिखै। गावा री भीतरी समस्यावा रा समाधान जाणै-पिछाणै। नीत-मुरजादा रीत प्रथावा तथा गाव मिनखापै रै मोलाकण म पूरी आस्था प्रगटावै। वयू कै इणा रो लिखणो सदा सू गावाबू रयो है, जको राजस्थानी लोक जीवण री साचडत सीवी उघाडणो चावै। शहरी

लोगा नै, बाहरी बखाण भावै नी भावै पण हीयै कमती समझ ढूकै बैठै। राजस्थान री निजू कहाणी परम्परा नै सस्कर्ता जी तो सागी ढब लिया बगै-ढोवै। गांवा रा लू ठा हादसां हसै रीझै। वै कवै—"गावा नै जाण्या बिना शहरी लोगा रो जीनवो कठै ?" इण वात मे म्हारी जोख-परख सस्कर्ता जी नै घणैमान वधाई अरपै। बूढा रै लिखणै मोज् बरकत वधै-सवै, मालिक सू या ही चावना करी जावै।

(दिपावली-2043) जयपुर

लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत

विगत

सारा विद्वाना बतायो है क लोक कथा रो सस् वडो उत्स भारतवष है। कहाणी रो मूळ तत्व विश्व साहित्य रै पुराणं ग्रथ रिगवेद री स्तुत्या रै रूप म मिलै। भाषा साहित्य रै विग्यानिया, अग्रेजा अर दूजा-दूजा साहिति क्रिया इ यात लोगा इयै कॅगाट नै खरी करी मोहर छाप मानी है। बकी तो यो तथ्य ही सिद्ध कर दियो'क ससार री लाक का'ण्या रो मूळ स्थान भारत है अर उवै काण्या बठै सू पछ सार चराचरत या खुलक मुलक म फैली है। उणा तो जावण रा सग रास्ता ही लिख बताया है।

इतिहास, रामायण, अवदान अर जातक कथावा रा अठै थेड'र ढिग, ढळे गळै तथा खिड-पजै। गुणाढ्य री 'वृहत्कथा', पचतत्र एव हितोपदेश मे नीति शिक्षा आद मनोरजण प्रधान का'ण्या है, जका सूं सारै ससार मे कहाणी मडार भरीज्या है। जूनी का'ण्या रो वेग-बहाव व्यजना प्रधान रूपका, ख्यात माण वारता, चितत चतराया तथा वातावरण री प्रधानता वगैर हबोळा मू उछळतो उफणतो वग्यो है। भारत रै साहित्य म कहाणी रो असो (जीवत) उण्यारो ऋग्वद रायमयमी जैहा असख्य लाक्षणिक सवादां, रिसि मुनियां, गुरू-विद्वाना र वखाण—व्याख्यावा तथा गीता रै प्रवचनां म जोयो जा सक। पण वतमान कहाणी रो ख्यातनावो हुम्मै उनीसवो शताब्दी सू सरु हुयो मानीज। उवै म साध्यै लिख्यै समस्त पुराण साहित्य म अठी का'ण्यां मिली है, जिणा म साहित्य री मोकळी मारी थाम वास'र चतराई रो अड्डो उजाम सिवै चमकै। इणी कहाणी प्रकाश में राजस्थान रो योगदान स गू मिर रयो है, सो राजस्थानी भाषा रै कहाणीकारां अर पढणियां प्रेमियां न आपरै प्रदेश री प्राचीन कथावां रा ताणा-बाणा कदी नीं भुलाणा चाय। प्राचीन वातावरण र रूपां रा तार-तागा अर पढत री सफाई छिब तथा पाटा-पीठ मायपरी म गूगाय र कोई ना मजावा गमाया। दन काढ म दन दोरो, काढ जावै। जुग प्रभाव जुड़ो। नूई कथा वस्तुवा वरता स्यावो, बुना-बुनावो। पण बिना कथा परम्परा अर बिना परम्परा री कहाणी ना पनीटा मिला।

अठ कहाणी कहणै अर लिखण री परम्परा घणी जूनी है। कहाणी गढ कथण रा कारण, कपूरी मीं छाजन रा आयना तथा वरणन-बखाण कथण म बण्या रूपम दायो जुरपा चावे। मेंहूक मास्टर पाठक र सामनै

वरणण अर घटणा रैं पगा पोंचो। हिन्दी कहाणी री पैल भलाई कोई, अंगेजी अर बगला री गल्प सू मानो पण राजस्थानी कहाणी साहित्य तो आपरी मदीनी नैं निज् मुरू सम्पदा है।

कहाणी नैं केई जणा आपणी नहीं, शॉर्ट स्टोरी या गळप माण लिखैं गिणैं। वैं लिखार इणी दो ओपरा नावा रा लेखण व अनुवाद करता मावैं नहीं पार्टै पोमावैं अर पळे। कीरैं सारैं ? घरु खीर साहित्य री कढी करैं तो कर। भीड़ री खुशी, साहित्य वधैं, भलाई लिखो। दरसण जाग राजस्थानी रैं कहाणी देवरैं, सिंघ दवार दरूजैं आग गळप स्टोरी रैं गळत चयण-काकरा डगळिया मे घूड फूस रळाय'र सदीनी कथावात कळा नैं जडा मूळ सू जळा देवण रो भरम दम्म भरै। आज री मुडदी तालीम रैं थोथ मोथैं जोर, आपनैं साबित करणैं खातर ठाळा वणाय'र सगलो जुग बोघ ओढैं। पुराणा प्रयोजणा माथैं गोंजियैं धाल्यैं ग्रामर ग्यान, रोमास भावना अर आग्ल भापा-साहित्य सास्तर रैं पग फेरैं रेणका री रेत वणावता दीखैं। एक मनोरजण री प्रधानता रो प्राचीन चलणसार सिक्को काकड वध, खडहर मद गद मच्यो खडयो है। सस्कृति माण, कारी-कुटको चेपा साघो करघा राखा। रयात जात, देस री घात, नीव नामून वण्यो रैव तो चोखो काम हुवै। पग तो पूरा लागण दयैं नहीं, कूड-कसर रो अम्र हर वखत खिडावैं बखेरैं।

विग्यानी वाता, बिरादरी रा नेम तथा वणावटी करम मरम रा कबाडिया काय सैं जणा समझै। घिगाडिया पच ना वणो, पळगोड तकवाद री पडोक माथैं ठाया मत फिरा। हाफेई काई पूछ लेसी। वधणदयो हरेक रो माण-लाभ, सैं न टावर ज्यू थपथपाई रीत ना टाळो। तीखा टो, निमळा नैं क्यू तडाछो ? अणभणिया पखेरुवा ज्यू उडणदयो सुख-सुख गिगण पथ, पण था आप आणद सू मल्लाई रैं मोटैं रथ बैठा [illegible] निहारो उणा रो चढण गिगरथ ! पैलोडी पीढी आळा न गादीरू [illegible] इतिहासी रूप वणन रजैं, कोई अणगढ टोळ मेलैं, माटी [illegible] वणावैं—सजाव तो सीमट बजरी र पडपच क्यू रेत राग, [illegible] लगावो ? रैचणदयो सहरी वाजा अर सागा, गावणदया [illegible] टा गीत तथा भजन, साहितिया सुहणैं खेता म तीखी मृगी[illegible] अदीर-

[illegible]

णिया अगुवा नैं लाघडा लघणदयो ! दुखी अर मन मरियोडा तथा कोरो मिनख नाव धरावणिया साथैं वैठण-उठण रो मेल मिलाप करणदयो हुम्मैं तो ! भखावटै री कुदरती वेळा मे झरतैं इमरत रा छेकडला दो च्यार गुटकिया लेवणा चावा । रोही रा महकता फूल पानडा, ज्होडा-सरावरा रैं दूधियै जळ तथा दडाछट भाजत वेग वाय साथैं म्हारी काय जिनडो नैं बेथाग तिरती वगणदयो ! तिक्कडम, दरबआळ तथा लूठाई जस नैं जरू झालेचालो, कुण खोस पालैं ? पण कीरी फकीरी फाकामस्ती मौज नैं प्रगतिवाद रैं फरेब म क्यू कचोवो फमावो ? जावणदयो रसातळ मे कोई जावैं तो थारो काई खावैं ? क्यू हान चून राईमीरी लगावा ? थे तो ऊचा मठधारी हो—जठैं लोक लाज, लोक धरम इत्याद पाप पुण्य ही नी पाँच सकैं । कूड कथण, छळगारी नूत अर मदद सैंजोग उच्छाव रा थोथा भरोसा रो भार म्हा माथैं मत लादो । अनोखैं चिमत्कार बिना काला भखणा अर सर खपाणो खारो आक लागैं ।

पण लोक-चावणा ! मिनख री जलमजात साथण, आथण दिनगैं नानी दादी अर डाढी ढोल्या सू सुणी गुणी आटू वाण एक स्यात नी छूटैं ! कैर रै लाम खूटैं टगग्या । 'चाहू जठ राहू, झलग्या उळझग्या । जकडि-योडा चढा-ऊतरा, हाफळा मारा ! कोई वाचैं ना बाचैं, साचैं विसवास तरळो करा ! विद्वाना री तेज तुरसाई लखा तोखिया राखा ! पण पाणा पथ्या रा खोटा तुरा खुर्या नी झाला । पोथी लेय र वणा सामैं जास्या तो पतबो नी चास्या, अळगलै उर अरपण कर आस्या । चावैं सो साख राख देखा—कहाणी खडियो सळियो वातो हू । सो, नैंडै छपी अर घणी सारी लिखियोडी है । पर हुम्मैं हाथा जाडी रो कार है, नूईं कहाणी म म्हारी सामी पडी हार है तथा मेंट भाव से दाडिम-अनार री आ 'वात वेदाणा' मनवार है । इण मे गावा र सुख दुख री अनुमूत्या साहित्यागी चेस्टावा अर हेत मिमताळी सीख चेतणावा नैं दिल खोल'र लिखी भाखी है । जबान मीठापो कमती होसी, पण हिडदै री ऊडी सवेदणा सू सरगळ *डब्बाडोळ है । प्यारा जी पाठक इण रैं साचैं मिनखापैं रैं दरसणा सू प्रसण* होमी तो निस्तैं म्हारो कल्याण हो जासी ।

—लेखक

समैं वडो वलवान

वटखाणा कुळ कीडा मकोडा ज्यू वध्या अर अडभिडर आगीनैं गया। पाप ऊपड्या, फोड भपोड पसरचा अर मतवाला जादव दारू रै जोर आपसरी री राड मूं मरघा नीवड्या। छेकड आत्म गिलाणी अर भरपूर उदासी रै सणक मणक सोपै अपवाद अवसाद री लाय भळा मे माटा मनख्वा ही तुरडीजग्या। राजा क्रिस्ण रया न कोई दाऊ ! द्वारिका डरी-मरी अर जळजळाकार वणी-तणी खाऊँ खाऊँ करबा लागी। राण्या, कुळ बहुवा समस्त लोगी अर आखी जीया जूण विलविला उठी। भाजता न्हासता कडूबा आप अपरा भेढा तवया। सूर वीरा री सरणा सभाळी। सैंसू लूठो उबारणियो अर अलौकी मिनखपणो क्रिस्ण रा हा सो ही गया। हम्मैं लागा ऊणा र सागडद साथी अरजण नैं वलायो अर बतायो के-' दवा-राखसा री नया विदवै वश मिरी क्रिस्ण र रावळै री मिनखा बायरी विलखी अेकली महिलावा छोळा रोळा सू कापती डिडावती कळप कुढै है।"

समदर रै पाणी रो हबोळो दूर सू फलता आवतो सुण्यो अर समरथ जन आप आपरो जावतो करणँ ढूक्या। उवै मोकै उद्धव रै बलावै मुजब वीर अरजण द्वारका आय र राजराण्या कुवराण्या नै सारो माल मत्ता समेत रथ बैल्या म विठाय'र हथनापुर ले टुरघा। आग उवा नै लामी घोडी जातरा सारू बीहड वन मारगा म लूटेरा आभीर, जाट, माट इत्याद मोकळा तस्कर डाकुवा रा छोटा मोटा अणगिणत टोळा मिल्या। वै आखा, वीर-भादर अरजण रै आडा बारकर फिरग्या अर उवैंरै सरणारथी रथ-

घोडा तथा हाथ्या नैं घेरा परा ऊभ खडा हुया। सगळा धन, आभूखण अर कुवराण्या वराण्या नैं हठ पैदल करणैं खातर खोस ले जावण री आपरो सदोनो कीत्तो बताया। अरजण नैं दकाल मारी अर दीखतैं द्रिव क्या कै—"दळ रा सारा रथ घोडा हाथी, माल मत्ता साथी, अस्तर-सस्तर, गैणा-गाभा, हीरा पन्ना, कनक माणक, अमोलख सागवा-पीटा, गीदवा गलेचा, कचनभारी-लोटा, रेशमी तम्बू चन्दोवा, मेवा मिष्ठान, तेल फलल वगैर बघका धन वभव आखो म्हानैं मुळावो। पछ दीता तिणा घाल'र मुखिया जणो हाथ जोड र म्हार सागैं वगो आगैं आयर म्हा आभीर जात सुनारैं बुळपत सू प्राणदान मागताण, भाग जोग सू मिलजावैं तो वा खालो आपरो प्यारो जी-जोर लिया तडी लगा जावो। नीं तो अकड कर दयाला पाधरी, म्हारो यो सक्ड हुक्म है।" या बात सुणी, जद अरजण री आम्यारा डारा लाल हुया। काळो खोखीनर साप सो सूमायो फुफाया। बोल्या—"अरे दुस्ट नोगा आ काई जबान काढो म्हारैं सायै राज घराण री राण्या कुवराण्या है। पणथे मनैं जाणो कोनी दीसो ? आळखो तो सरी गाडीव धारी अरजण हू, नठे इसी जबान काढी तो जीभ तालव ही नी नाडवैं सू खीच'र बारैं वाढदयूला। बोली दूजी चूक करी तो चौकाळा गिटा नाखूलो। हम्मैं थारो जाण मूळियो आयोडा है। मूढा मीठा चावळा रैं माफक धुळया गळमा लिया फिरोला? जाणा कनी? म्हारो !"अरजण री बात बाटर बोचाल ही उवैं सारा जणा हसीरा फुवारा सा छोडता बोल्या—"अरे! तू अरजण हैं या थोथो यूल गरजण-जकारो हम्मैं ठा लाग जासी! नहीं तो रथ तू हठें आय र झटपट गऊ वणज्या अर साथ वाळी केसर वरणी, गज गहणी, ऊजळदती मिजाजण दारावा, फूठरी फररी चीतालकी सुहागण्या सोन-वरणी डील धारणी, देवा री परीसी दीदारू रूप धारणी, चाद मुखडारी भलेरी जळे री चादणी फैलावणी, मुळक महक मानखा खेलावणी नख लगाया खून आवैं अडी फूल जेडी कोमळ कायाळी मनोहारी माण माथवा पावणी अमी हलाहल रस सुजस लोयणा-नख सिख मिणगारा दव लदी, पुस्व वास सुगध जिसडी घडकरी गुमानण मद भरी थारी कयी अत-पुरवासणी सुरगी कुळ बहुवा चवल मानेतण सोहणी राजकुवारिया इत्याद सग गोरडया म्हानैं सटकैस सूप र जल्द मना जावा—नौ दो ग्यारैं,

नहीं ता खोपडी तोड दी जावैली तम्हारी तुरन्त ओपरी लाठचा सू !"

"अरे नालायक धाडवी नरो ! म्हारै सामणै सू उलात्तर जाय'र वळो मरा। म्हारै सिर भळै वयू पाप काळूठो चाढो ? हाय रे नीच बदमासो ! जीवणै सू धापग्या लागो। जद ही तो अन्न सू आतरो घालो अर कनै आयर म्हारै सू अड'र चालो ! मूढा खूडा रावण रा सा बणा देवूलो। माथै थारै कडालिया बाध्योडा नी दीसै, भळै ही खुल्ला खेलो हो ? मरो नाव पार्थ, हथनापुर रो अमीर-इन्द्रप्रस्थ रो धणी ! आखी दुनिया साखी भरै। बापडा गेलै वगता विणजारा सार्था नै थे लूट'र हिल्योडा हवोला ? हरेक हथियार चलावण म ससार आघूतो हू ! म्हारै गाडीव री गुणगाथा सू थे ओजू अजाण हो, जक रा साण चढया तीखा वाण समस्त चराचर म अटाळ काळ-फाळ गिणी ज ! उवै सू तकडबध सूरवीर भूपत भादर खाया, जका रा धरण माथै लोटग्या बळी माथा ! छाती ताई लोही भरी सरिता मे भुलाया। दम रा हजारा भीखम, करण, जैदरथ सा करडा अडक अममानी नरेसा नै म्हैं हराया सागी अरजण हू। हुक्म धा वाही रो देवाळ लेवाळ, सत्रवारी जिनडी नासणो कूर धनुरधर वाजू। अरे खरो कूकरो ! थे म्हारै सू परिया आपरा'र डाको मारा ! अरजण भले लताडै—अधम माणसा ! म्हारै सू वयू कुबध कमावा ? अै अन्तपुर री गुणसील ओरता जका रै सूरज दरसणा रो ही टोटो हो। सेंग द्वारकाधीस क्रिसण रा धरम सख्या, बेटया तथा बेटा-पोता अर कुटम्ब्या री बहुवा हैं। इणा रा सीळोम्र तवडा सभाव, बेजोड ग्यान जान, दया-म्हा देख्या रो सरव पूज पुण्य नाव मालक सिरी क्रिस्ण सरव थान-मुकाम प्रचलित, जक न थे वन कुटिया कुजीव वे जाणो ? कुरुखेत र जुद्ध मे ठाण साली हाथा, जुग-जुग री रीत मुरजादावा भाग'र खत्रा री चतुरगणी-अट्ठारै अखोणी फौज नै परा पौढाई। म्हा पाण्डु पुत्रा रा मायमाप करमो अर गयो राज, पूठो दरायो। या सारो काम जगत पूज सिरी क्रिस्ण रा ही यो। गऊवा रो रुखाळो, करम जोग रो अवधू जोगी अध्यातम आगीवाढ तथा मरण आयोडा रो पर हितकारी सालोणी भेळो हूँतो। उणी ग्यानी ध्यानी, स्वाभिमानी सिरी क्रिस्ण री मरी पर लिछमी अर धरम बहना बदया, पोता अर बन्धु-बाधवा री बहुवा आद भेळो है। आज आखी भागहीणी

वणी पाख कटी री भात अघ जग, सगवग नणा नीर बुवाव है। आपसरी री कटबढ, राड भ्होड म दारू पी पियर सारा जादव मरग्याजको सोक भूलगी, पण सिगी त्रिस्ण भगवान आणद घण, राजावा री राजेस्वर, सता महता मन न्हालो, दव नरा रुखाला, आतमग्यानी जीव, हुम्मैं वैकुठवास रमण करण, घरण सू चरण चक अमरा सग ऊचो वा सिघा गयो। उवो दु ख माड री धूणी ज्यू इया महिलावा रैं हिवडा म धुखै साले है। क्यूके हण री रावती जगत जूण रो अेक माटा मानखो विलीण हुग्यो। मरघट ज्यू मथरा, दाभती मी द्वारका, जिकोलडो भुजा पाथ, भो भरघा परिजण अर बलदाऊ आथ-यैं रो तो कठैई पत्तो बुदबुदो ही नीं चाल्यो। पण एक रात पूरैं कोप सू समदर वघ आयो। परबत री चट्टाणा सो उवैरी ऊची तरगा, उमडी अर पुरा-नगरा गढ-नगरा रा गढ कोट, महल माळिया, हाट-बाजर अर हर जीव जगम नैं मगम जोड लिपटाय'र अडड गडड भडड गाजती भाजती परळ मचावती परी वघ रयी। 'गतस्य सोचन नास्ति बीती सो गई। पण म्हैं अरजण ओजू जीवू भलोक ? वै ही भुजा अर वो ही गाडीव, त्रिस्ण नी तो काई हवैं ? पाथ तो सागी हूँ। अरे नीच तस्करो खरो ! म्हारैं रास्तैं सू आघडा गिडो रिडो पिडो ! म्हैं था जैडी छोटी जगळी जात-जूण माथ, हाथ उठाणो नी चावू। था नैं मारणैं री टक्कर नी, टीको लेणो है। जावो छोडू, खावो-कमावो, म्हार हाथ सू कुमौत क्यू मरो ?" धाडवी बाल्या—तू अरजण, खरजण कुई हवा-म्हानैं काई मुतळब ? पण लाय रो पावणो कया वण ? सिधा रैं वन किसो सनेसा भाळ ? अठैं आभीरजात सुना रो जनपद मेतर है। इन्दर प्रस्थ हथनापुर, द्वारका अर त्रिम्ण, मथरा री वरडो वाता अठैं जाजक नी चालैली। गाडीव रैं रोब री जरूत नही ! म्हे तो थारैं भलरी कैवा हाँ ! रथ सू हठ आज्या म्हारैं आगैं उबाण पगा होयर म्हारैं साग, जको थाला अठै रैं अघपत कनैं! उव ही थनैं जीवणदान बक्स सक। वार साम सारा रतन जवाहर, गणा गाभा, जुवान राण्या कुवराण्या कचण कामण्या, सा की म्हान उव वस्तुवा समळादयो। की भल बुर सार समझ है तो म्हारी मयी मान, नही ता अबार घडी आध घडी म आभीर जातारा जरथा, टाटिया रा छता सा चिमट चूय खाजावला। मोटा मोटा टुडगरा, टाड

तथा तकडबध टाइूर, लटूर रा लैंटूर आवैला। बैं आपरैं धुतका, बरगा तडा खोटणा अर भाठा दगडा सू भोडका भान नाखैला। हाडका झिगर-झिगत कीचरडो काढ देवैंला। पछ वात काई ताबैं खावैली नही ! थारैं जीव री खैर चावै तो आखी माल मत्ता देय'र हथनापुर द्वारिका जठै जवैं, अठै सू सावत हाड गोडा लिया होळे सै कढज्या।" अरजण रैं भावगी वणगी करे ता सफा जोजरो काई करैं ?

वोल्यो—"आ के आफत ! आफनाव माथै बादळा रो घेरो ! आभीरा अर जात सुवना रा टिट्टी दळ उमडधा आ पोंच्या है ! रुको ! रुको ! गाडीव झलाओ ! म्हैं अरजण करूँ सगळा रा सिर छेदण ! पण ओह, भारी भो ! या काई वीतै ? हुर्मी ठा लागै, चामडी चरमरावैं, चेतो वापरैं है। गाडीव तो सम ही नही ! पग धूज, हाथ कांपै ! इत्तो भार कया वधग्यो ? घनख बाण हैठ पडै। खैर ! नीच डाकुवो देखो—उवो रथ रणवास रो है, जक म घण मातण राण्या विराजै। राजवश री ऐन-कानून, उठी नै मत जावो। मारया जावोला' म्हैं वणा रो रुखालो, काई भालो ? या आखा न पोडा देवूलो। पण काळजै मे लाट ऊपडै। नरीर छ महीणा रैं तावलै रो सो सूनो, तिखाळा आवैं। नास खुलगी सास वधग्यो जाणो रक्त रो पाणी वणग्यो। डील निरजीव माटी रो ठिरडो जमग्यो। हूँणी रा पावडा है, चायै ऊँचला देव दाना सग, सस आस्या सू अरजण री निपुसकता निहारो। लिलाड माथै पसेवरा खाळिया खुलग्या, आ्ंया सू आसू चौमरा चालग्या। पाथ आज जीवतो ही मरग्यो, लार ता ल्हास ऊबरी है, खाली खाड पडी है। हाय रे ! अै तो धक्का धूम करता तथा गळ गोता देवता ले चाल्या बापडी अमीरलुगायडयां नै ! अरे नाई ! थोडी ता राजवस री आवरू राखा, मरद होय'र लुगाया माथै हाथ उठावा ! इया ओरता नै नही, मन गाळी घाल र ले जावा। गुलामी री तरा थारा सारो हीडो टोवना जो सू जित्तै—औ सू करता रैं सू। वदेई म्हैं दुरजोधण नैं नौकर नी राख्यो, पण थारो सेवक वण र रैवूला करणा करो ! म्हारी नामवरी नैं वन्नाम मत करो। आभीर इघकारया ! पैला मनैं मार नाखो, पछै म्हारे मितर सिरीकिसण री असाह-अभागी, बेकली ओरता रो घीसा-ठरडो पळा सको। पण म्हारी आस्या फोडे बिना

धिगाणँ इया राण्या नैं खच्या-नाण्या ले जावो, बाहु टूटग्या अर भाग फूटग्या म्हारा तो ! धरम-करम सग पियाळा जा धस्या पूग्या। बतावो तो कोई म्हैं हथनापुर जाय'र सिरी धमराज नैं काई बता वूला? बैं पूछैला क्रिश्णरो रणवास कठ आवै ? जद म्हैं पाछो कँवूला ? भीम, नकुल, द्रौपदी, सुभद्रा, बधु बाधव पुरवासी अर स्याणो लुगाया मेरी मैमा माथ फूल वरसावण नैं अडीकै है। हाय ! म्है हम्मैं बठै कदमकाळ ही जावू नहीं ! जीवत जी म्हारो काळो मूढो कुण देखैला ? अभागो पाथ मरग्यो, पण मौत ओजू आर'र ऊभी दीम। भीखम, द्रोण, अधिरथ सुवन से गया वैंकुण्ठ वास, खाली म्है रयो पापी, या कुलखणो दिन देखण अर वस मायँ कळक चाढण खातर ! पर लाचारी म्हारी कान क्रो, जस भोम रा देवाळ सखा क्रिष्ण अर नमा खमा सिकारो ! थारी लाज आज म्हार मूरापँ रळी गई गुजरी ! दुष्ट आभीरा रैं इनाकै मे मेरो खत्रीपणो खतम हुग्यो।'

वन माहैं लाय लागी हवड हलोळा फाळा उठी अर सारा जीव जत, भो नरिया भाज छूटचा। सूर विसूज्यो, परळ माची अर रावा-कूका होय' हाय हुया ! क्या काथ कया—

दिन पळटया, दसा पळटी, पळटचा हाथ क बाण।
काबा लूटी गापिका, बैं अरजण बैं बाण॥

अेकर स लिछमी जी नैं इयैं पूजन औसर माथैं बाठ अर गरीबी री देवी भूवाजी (भूख दावरी) आ टकरया। उवा भूवाजी नैं चिडावन री साची। बोल्या "भूवाजी काई मुवाळी खावता डालो? था सू तो दीन-दुबला का डरैं नी! वैं ता अया ही दिवाळी रा माल अुडावैं। कीसू ही अुधारा पुधारा करो, भला ही माथ मडावो, पण थार वैं कदाच सिर नी नवावैं। म्हारा तो धनवत म्हा सू सागीडा राजी है—कोड करैं गुण गावैं। थैं ता दूबळा माथैं कोरो दळदर खिडावो।"

भूवाजी डोळा काढ र कडक्या। नौ नाहर वारैं चीत्ता वण'र गडक्या! बोल्या "म्है तो कैया रा गोडा टिका दिया! थारला बडा बडा भाग्या, स्याणा अर दानवीरा न म्हैं घणी बार भीख मगाय'र छोडी है। केइ नीम्ब रामार्‌या मरग्या है।"

लिछमी जी बोल्या—"तो काई भलो काज करयो? आज रा लाग थानैं रडकारी गाळया ठाकै। थाडा म्हारा ही अुछब पूजन जोवो चाला आगलैं नगर म चाला।' इत्तो कैय र दोनू जण्या आगी न वहीर हुई अर नगर सेठ रैं ढूकी। सेठ लिछमी जी पधारण री अडीक मे पाठ पूजा कर रया हा। दोनू दव्या न हवेली री पेडया चढता दख'र खुसी हुयो, सामेळैं चाल्या। भरोसा बध्यो हाथ जोडया अर दडवत प्रणाम करयो। पग धायर चरणामत ली'हो। लिछमीजी रो रूप जाणर कयो, "दोनू देवया आज भलाहीं म्हा धरा पधारिया। वारणा लेवू बारम्बार धोक देवू।'

बाणियैं न लटका करतो जोय'र लिछमी जी न उव सू अेक तमासो करण री बात सूझी, अूकळी। पण भोळी भूवा कौतक नी समझी। लिछमी जी बाल्या —'सेठ! म्हे दोनू देवया थारी पूजा सू प्रसण होय र गनैं वगती हवेली आई हा। हम्मैं अठ जम' र रैस्या अर मोकळा लाभ फळ देन्या। पण सेठ पैला म्हारळा राडो मिटा। ठीकसर सुणले, क्या नैण जो म्हारे साथैं आई है केव— वळ बुद्धि अर आवरू मे म्हैं मोटी हू, नपा म्हैं नुद कवू म्हैं मोटी हू। पण म्हा दोनूवा म बडी कुणसी है? जकी सही बात थनैं बताणी पडसी!

सेठ-जीव म जाण्यो के हमकैं कुराणी हुई। पण अुपरला दात दिखाय'र बोल्या "कल्याणी! थारो यो भोड तो मिनटा म सलटा मिटा देसू, पण

आप म्हारै घरा ओपा ! थें भला घरा री धीरा-देव्या दीखा। गैंण गामै अर वेस वानै एक रग हो! म्हारा ही भाग अुघडग्या। हम्मैं एकर विराजौं लिछमी जी बोल्या—"म्हारा यो फिसाग्म था मैंला निबटावो जणा बैंठा।" सेठ सुण र मन मन मे तो घणो घबडायो। पण अूपरला मना सू तुरत त्यार होय'र अेक अुपाव काढयो।

बोल्यो—"भगवत्या! थे दोनू एक'र म्हारै सू अळगा पाच च्यार पावडा चाल'र जावो अर बया ही बरावर चाल'र पाछा म्हार सामै आवो। म्हैं थारी चाल जोवूला अर छोटी बडी फूठरी चाल भेद री जाच सू साचेतो नतीजो दवूला।" लिछमी जी अर भूवा जी (अणहूँत कगाली री अधिस्ठानी) दोनू खन खन बरावर खडी हुई अर वणिक पूत सू चाल बहीर होण री इग्या न अडीकबा लागी। सेठ— 'अे अे अे! जे!!" करर आन टुरण रो कैंया। दोनू देव्या अेक बरोबर मोर रा सा पजा पगला मेलती सुहणी चाल, चाल दी। थोडी दूर अळग ताई पौच्या, लार सू सेठ हेलो कियो।

बोल्यो—"देव्या! अैया ही सागी चाल दोनू पाछी मुड'र चालती आवो, म्हैं देख रयो हूँ।" सेठ रैं हेल सागै लिछमी जी अर भूवाजी फूठरा पाळा-पाछा फुर'र चाल दिया। सेठ दोना री चाल देखी अर मुळक्या! लिछमी जी री पूजा लगन सू निर्णायक वणग्यो। अुवा न आगीवालबालता गोख र ठीक तरा पिछाणा करग्यो। जाणग्यो—"अै तो अवस लिछमी जी है अर साथै इया रै विरोध म भूवाजी होवणा चायै सा इणी भात सम्मान रो अुथळो देवणो पख मे पडसी।"

लिछमी जी रै बालण सू पैली सागी सुर मेठ बोल पडयो अर बात नै मिठास री जुगती सू मठोर-गाटर क्यो—"दे'याजी! बया तो था दोनुवा री चाल चोखी-अनोखी है अर उवै सारू ही थे दोनूग्यान गुणा वाजीदी हो। पण, आप (लिछमी जी नै) भगवती जी घरा आवता आछा ओपो अर अै (भूवाजी नै) देवी जी घर सू पाछा जावता चोखा अूघड। बैंया चाल-ढाल, रूप रग था दोनुवा रो बरोबर है।"

पण चालता वखत अेक घर मे वडता आछा लाग अर दूजा घर,सू कढता चोखा लागै। (लिछमी आई भली भूख गई भली) ओ अतरा

जरूर मैं है। बाकी ता दानू माय मवानी दिखाव ओप हो।" लिखमी जी सेठ री चवुराई नै समझ'र मन मन मे ही गुन गुणाया "वाणियो वाण न वीसर, जे सुरगापत्त नाय। साहब स लम्बो करै, (ना) टक्को पइसा पाय। दोना र भाळ डर भो म गरा गोता खाय'र आछा फैसलो सुणाया है।' सेठ री जबान-जुगती अर सूदी पूजा सू लिछमी जी तुस्टमाण हुया अर सात्कार भवै रा रूख वाज्या। ओजू ही भणी गुणी जात कही जै अर वाणिय री पीढी रो माल नी आकीजै। पुराणी परम्परा सू महाजना री देखा-देखी आखै लोक म दिवाळी री रात लिछमी जी पूजीजै। हे देवाळ माता! सुख सपन री धिराणी दाता। मीठी जबान जुगती बक्स'र सग लागा न साचा पूत वणावजो!

धरम ईमान

मुगलिया बळी वखत, देस राजधानी री बात, एक बादस्या री बेटी सहनाई नावै सुप्यार जबान सरबजाण, भणी गुणी अर नाच गाण कळा-कुसळ हुती। उवा दयावाण, दातार अर प्रेमी सुभाव री स्या जादी ही। आपरै बापर आम लूठ रगीलै देस राज्य माथै आछो सासण करती अर वडी बेगम रै नाव सू जाणीजती। बादस्या उवै राजकुमारी न दूजी औलाद सू अलदा साही मोहर छापण राही इधकार दे राख्यो।

नाच अर गाण आदमी री जलम जात जाण पिछाण, किन्नर-गन्धर्वां री दैवत कळा, राग रगरी बिरिया आवै सग देखणिया सुणनिया रा हिया डोल जावै। जद कदे मैफिल जमै, नसो छा जावै नाच गाण रैं सभा मडपा रो सिणगार, सफाई छिडकाव, फूलमाळावा, इत्र-अगरबत्या, चास-प्रकास, गलेचा गीडवा सू खूबसूरत हुव। जद इयै कौसळ रा रीझाळू जीव इत्ता उदात्त भातरा छूम्न्दर चतर वण जाव के देखत फूटराप अर गाव-णिया बजावणियों नैं मन धन हो नही, आपरी जिनडीताई नैं नौछावर कर देव।

बेगम दाखा र दारू मू त्रिपत रती। उवा आपरी जाणकारी भू वध-की सोमरम वणवाया करती। उव मे गुलाब, अगूर अर मेवा मिष्ठान्न ही रळाया जाता। बेगम रात विरात राग रग रैं समै कदे वद विदकती आस्या इत्तो धणो रस चोस लेंवती, जक सू उवरी पीडचा थरक जाया करती। अेड मौकैं दासी-बादी, सख्या साथण्या निवता हाथा बाथा निर-ढाल डोल नैं पिलग नाख पोढावती थकी वो प्रेम-नसो पार घालती।

फडकती मुजावा, गळवढै दोलडी तग तरवार सइकडू सिफाई सवार, नौकर चाकर, अनुचर अर मन्त्री-मुमाहिब, समूह रूप उवै साथै हुता। दरबारी उमरावा सू इयै राजकुवार री शान शौक्त चढी रँगत लागती ही। राजकुवार छतरसिंघ सहनाईरी सुवारी आवता जोई अर मारग सू सो पावडा उलात्तर घाडै सू उतर'र सडक रै एक पासै खडया हुया। उवै धणियाणी री नैहै आई सुवारी नै भुकर मुजरो करयो। कासीद जै बोली तथा सचिव स्या जादी नै राजकुवार बगणरी सूचना सुणाई। बेगम आपरी सुवारी थाडी रोकी, पछ एक हीरा-पन्ना जडी डबडी मे पान रो बीडो भेंज्यो तथा राजकुमार नै कवाडया के—"म्हारी सुवारी साथै चालै अर मोकळो सोभता आणद वधेर वधारै।"

सुवारी—टुर चाली। शामखोर कुवर छतरसिंघ सामण मुड सलाम कियो, मोट माण पान रो बीडो लियो अर अपूठो चाल'र थोडा अळगो खडो व्हियो। भिस्तीडा सुवारी सू भोत आग सडक माथै पाणीरो पूरम्ळ छिडकाव करता जावा। सईकडा वादी हाथा नागी तरवारा भळकावती, भीट भचीडा खावतीदबी वग ही। उणार काधी तीर क्वाण कस्या हुता तथा सग छाती काढया, सास खीच्या, उमाव भरी चाल सू मूवाळवेग भाजी राजी जा रयी। पालकी रै चौगडदै चालता अवरोखै मूढाळा खोजा सानै चादी री मूठ पकडया अकडया चवर मोरछळ ढुळावै हा। दास खास हाथा मे सोनै चादीरा मुगदर डड लिया पर हटो! परै हटो! रा नारा लगावता आग चाल रया हा। अणीमीत री दासी वादी सान री प्याल्या म जळती सुगध लिया वग ही। बेगम म्हामगेज मे बावळी हुई सोचेडो साचो निसाणो मूलगी, जकोवापडो इसार आयो स्या जादो सिकार, मायो माडया सायो किया बिना बतळायो आपरी फौज सू सज्या सवरयो घोडै चढयो हकारै आस चालै हो। वो दूर देस रो अमीर व्याहण रा मूलो नौकर हो, पण साही राज मरियादा कायदै सू सूको लूखा हो।

पौंचणै री खबर महलायता र दरोगै न पौच चुकी। उवै आछी चळ-पैळ सू बुहारा भाडो अर छिडकाव करा दियो। महलायत र जक भाग मे बेगम री ताक तसरीफ होणी, उवो भवन चोखीतरा सजियोडो हो। दीवारा म रगील पच्चीकारी, पूरा लामा सीसा, कोरीज्योडी छत अर

बेगम दरबार जावणै चावती तद पण ठाट राट सू बार निसरती। बा आपर साथै मोकळा हाजरिया मिनख लेय'र टुरती। उफाला, सिपाही घुडसवार, खाजा अर बासीद आन आम्या रै हुक्माण सू हालती। निजो हीजडा 'जो उबै रै च्यारू मेरी टाळ बणाया रता हर किणी नै सामण आवतो देख र धक्का दे नाखता तथा दकाळ रै अपमाण सू जेक पासै ऊभा बर न्यिा करता। वै 'पर हटो। परहटो' रा नारा लगावता चालता इणी भान सहनाई आवती अर मारग वगणिया गैला छाड दिया करता।

राज पथ भीड लथपथ। कोडी नाळ, राज उमराव भिख्यारी जगत जावा हाट-बाजारी सैल सपाटा मारू चाल्या। इणा अमीरा रा बणाव सिणगार ही सरावण जाग, हरेक साथै पाच दस, दस वीस हाळी बाळदी, मोगळिया अर भादर मिनख भाज्या वग ह्या। घोडा, बग्घी वैल्या माथै उबै मौकीन सिरदार पान चिगळता चालता मटकैरी नळी सू धूवा गिटा। चादी मढ्या चमडा हाका, बग्घ्या घोडा रै बरोबर दौडा मिनख हाथा लिया घूट खेंचावण खातर उणा नै लफा फ्फा। पानदान, इत्रदान, उगाल-दान, रूमाल गमछा ही उणारा आपरा यारा न्यारा आदमी लार लिया चाला। अस्तर सस्तर, गाजा बाजा अर खाजा माटा ही सागैहा, पण आज सग अमीरजादा मस्तीराह वगता अचाणचका ही चमक ऊछळ्या। ज्य ही स्या जादीरी पालकी आवती दीसी, तुरत सगळा उफाळा होयर निजू टोळा सू सडक र एक पसवाडै घणमाण न हाथ जोड जा ऊभा 'सामै मूढा उबा राव उमरावा सिर भुकायर तीन बिरिया सलाम करी, जकारी नामावळी निजू सचिव सहनाई न पालकी मे अरज रूप पेश कर दी ही।

बेगम आज किणी सिकार माथै अचूक निसाणा मारण वगी, वळी जारयी। पर उबरो निसाणा खाज्योडी सिकार सू परबारकर दूजी सिकार करण म चलायमान हुयो। वन वगीच रै महलायत मारग म आपरै राजरो तावदार, एक घुडसवार ओहददार तथा रिसालिया राजकुवार टकरायो। राजकुवार वडोनेक मिजाज, खानदानी घराणरो राजस्थानी रहीस हो। सो पालकीरा जवाहरात जड्या पडदारी छीद सू जोयो। बरस तेईसा चोईमा नैडो, कवळ डील दूध गिळोडै दाई, गाळमाळ गाभरू जुवान, मुरडीजती मूछा देखवा जोगो दीस्यो। घोळा गाभा काळानण,

फडकती मुजावा, गळबढ़ै दोलडी तेग तरवार सैंइकडू सिफाई सवार, नौकर-चाकर, अनुचर अर मंत्री-मुसाहिब, समूह रूप उव साथै हुता। दरबारी उमरावा सू इयै राजकुवार री शान शौकत चढी रंगत लागती ही। राजकुवार छतरसिंघ सहनाईरी सुवारी आवता जोई अर मारग सू सो पावडा उलातर घोडै सू उतर र सडक रै एक पाख खड्या हुग्यो। उवै धणियाणी री नड आई सुवारी नै झुकर मुजरो करचो। कासीद जै बोली तथा सचिव स्या जादी न राजकुवार वगणरी सूचना सुणाई। बेगम आपरी सुवारी थोडी रोकी, पछ एक हीरा पन्ना जडी डबडी म पान रो बीडो नेज्यो तथा राजकुमार नै कवाडयो के—"म्हारी सुवारी साथै चाल अर मोकळो सोभतो आणद वधेर-वधारै।"

सुवारी—टूर चाली। शामखोर कुवर छतरसिंघ सामणै मुड सलाम कियो, मोटै भाग पान रो बीडो लियो अर अपूठो चाल'र थोडो अळगो खडो ह्वियो। भिस्तीडा सुवारी सू भोत आग सडक माथै पाणीरो पूरस्ळ छिडकाव करता जावा। सईकडा वादी हाथा नागी तरवारा भळकावती, भीड भचीडा खावतीदबी वग ही। उणार काधी तीर-कबाण कस्या हुता तथा सग छाती काढया, सांस खीच्या, उमाव भरी चाल सू मूचाळवेग भाजी राजी जा रयी। पालकी र चौगडद चालता अररोवै मूढाळा खोजा सान चादी री मूठ पकड्या अकडया चवर-मोरछळ ढुळावै हा। दास खास हाथा मे सोनै चादीरा मुगदर डड लिया पर हटो! परै हटो! रा नारा लगावता आग चाल रया हा। अणीमीत री दामी बादी सोनै री प्याल्या मे जळती सुगध लिया वग ही। बेगम म्हामगेज मे बावळी हुई सोचेडो साचो निसाणो मूलगी, जकोवापडो इसारै आयो स्या जादो सिकार, मायो माडया साथो त्रियाँ बिना बतळायो आपरी फौज नू सज्या सवरयो घोडै चढयो हकारै आस चालै हो। वो दूर देस रो अमीर ब्याहुण री मूखो नौकर हो पण साही राज मरियादा कायदै सू सूको लूखो हो।

पौचणै री खबर महलायता रै दरोगै न पौंच चुकी। उवै आछी चळ पैळ सू बुहारा झाडो अर छिडकाव करा दियो। महलायत रै जक भाग मे बेगम री ताक तसरीफ होणी, उवो भवन चोखीतरा सजियोडो हो। दीवारा मे रगील पच्चीकारी, पूरा लामा सीसा, कोरीज्योडी छत अर

सुहण भाठै रा फरस, ऊपर रेसमी गलेचा विछेड़ा हा। हाथी दांत र काम सूणा पूरा ठाढो चदणियो पिलग, ऊ बो काटवा चन्दो तण्यो चढ्यो ओपै हो तथा खरै मोतया री झालरिया झूरै—हीडै ही। पिलग माथै मख मलो गिदरो, नौसक तकिया अर ममनद ऊधा। चारू मेरी घोवया सारू इन, पुस्वा अर सस भातरै सिणगार री अलबेली चीजा मैली पडी। वगम पूगी अर मीठी महक सूमोहीमूनी मसनद माथ लिटती-सी गुडगी।

विमूणी थाडी लेण रै बाद उवा आपर खास दास नै आदेस दियो के — 'वो राजपूत सिरदार जको सुवारी साथै म्हाबलाया आयो है, म्हारै अठै ठैरणै ताई आपरो सरबरा चोकीदारा राखै तथा अमीर खान पहर वास्त काम काढ वो महलायत बारली धरमसाळा म आपारा सिपाइडा समेत जा जमै। जरद इतजाम कराया जाव।"

सचिव बोल्या—"जो हुकम वेगम साहिबान!"

स्या जादी रो दालडो हुक्म सारै अमलै मे फिरा दियो अर दोनुवा उमरावा नै आप री जगासर तबदील-तैनात कर दिया।

रात, चादणी घणघार दूधिया होवती जावै ही। सहनाइ छाकरिया-दासिया रै हाथा दाखा री दारू चास चाढ रयी। उवै जोस राजकुवार छतरसिघ री सूरत बी माथै मक्त खळभळी मचावै ही। पण ब्याह जोग वात दारी अर माडी पडै ही। अैडा अेक नही, अनेक राजा स्या जादा, सनाई नाम बादस्या जाण जमीताई जुळर सलाम मुजरा कर तो बादस्या बद चावै के आप सू हेठ घराण स्या जादी ब्याह दी जाव। इसडै साख सू म्हाल घराणै री आवरू तो घट। पण प्रीत रै घाव माथै भेद भाव री मनहम पाटोनी वधै। स्या जादो जादा छतरसिघ नै चावै जकी बात दूसर मनसबदार सू छानी नी हैं। उवो पाछो आयर सनाई न कवै—"हम्मै तो बादो (वायदो) पूरो होवणो चायै!'

स्या जादी उथळो दवै— अै आसी वाता पुराणी व्हैगी। स्या जादी री ब्याह सादी जहांपना जावक मना कर दी ही है।

मनमबदार खा—' पण वगम माहिबा! थाँ तो सल्तनत हुकूमत धिराणी हो? बादस्या बाल हरगज अटका नी सक।"

स्या जादी रीस रोस जबाब दियो—"जावो ! जावो ! हम्में आछो यो ही है—बोला बोला आप री तैनाती नौकरी बजावो।" खा सूनै मन उठ चाल्यो !

बोल्यो—"हजूर स्या जादी रो हुकम !" सैनाई फूला रा गुच्छा ऊंवा उछाळ उछाळ थोडी ताळ खेलती रयी। पछे दासी नै कनै बलाणै खातर थाप सू गिदरोवजायो। उवा अगूरी सराब रै झीणै नस में रगरळी ढळी, अलमस्त, मसनद माथै लिटती-गुडकती सी गिलरा करै ही। मौजियो खाजो अर बादी दोनू विसवासी माणस खिदमत में खडा। ढळती रात, मैक्तीवात, चारा कानी देख'र बोली—"उवा राजकुवर पहरै माथै हुसियार खडो हवैला? देखा-बुलावो !"

"जी हुकम खुदाबद !" मौजियो बोल्यो !

स्या जादी कयो—"जल्द हाजिर करा, म्हैं उवै माय म्हारी मैह-रबानगी वरसावणी चावू !" बेगम उठी, उबासी खाई। मौजियो बला त्यायो, बादी नैं डाट र काढी।

छतरसिंघ भवन में पग धरयो अर लुळताक मुजरो करयो। बेगम कडी निजर सू मौजियै न ताक्यो, भोळाक्यो बो बापडो बार जापड्यो थाक्यो। सफा एकलवाणै सर्म बेगम पिलग कानै इसारा करती बोली—"मालिक री मैहर आराम करो !"

नौजवान राजकुवार एक दम हाक्यो दाक्यो अर ठग्यो। सो रैग्या। वो बोल्यो "स्या जादी चोखो यो ही है, मनै वेग म्हारी नौकरी पाळण री हुकम बक्साया जावै !

उवा बोली—' म्हारै हिडद रा देवता ! या काई बोल रया हो ? इयै उथळ स म्हारो जी दोरा पण घणोहवै !" उवै मघरी मुळक मुखडो उठायो अर छतरसिंघ नै मीठै सुरा भळे परचायो !

"आज आपा राजी रजा एक दिल हो जावा अर इयै सुहणी रग भरी रात रा आणद-मजा मनावा ! म्हारै मन रा प्यारा बालम राजा, मनै अवेळ री बिलकुल ना उम्मीद है, थारी हाँ, री पूरी हामल चावू !"

छतरसिंह ठौड स् कुठौड नी हुयो। स्या जादी री दारू छकी हरामी आख्या ओज बाढी चढी, पण रीस मार'र बोली—"दिल भरिया

मालिक ! म्हा ऊ चा बगल बैठ नै डील वधावै मदद बकसो।"

दूर खड़े छतरसिंह कयो—"खुदारो खोफ राखू। खेद है म्है अडो गवार कार कदी नी कर सकू। बाळक मत नी, लाक पाळक बाजू। राज काज परोटणियो हू।'

"राजान कानान आछा कुण कवै ?" उवा बाली।

"पण म्हारै धरम ईमान मे भगवान र धरा जेडा काम अधरम अर बेईमान गिणीजै।' राजकुवर कया।

उवा बोली—' राजी रजा कोई काम अधरम अथवा कुकाम नही, म्हारै मन री मरजी है। काम सारणो वेईमानी नही, इन्सानी अरजी है।'

छतरसिंघ बताया— 'म्हैं एक ऊजळ धरम रो राजपूत अर साधारण जमी जायदाद रो भोगतो ! बेगम स्या जादी रै माटै चरित कायदै न कैया हाथ घाल सकू ? ठग डाकू नही प्रजा प्यारो रक्षक सिरदार हू।"

उवा बोली—"तो हम पद हम ऊमर, थे म्हारी इग्यानै इकार कर रया हो !'

छतरसिंघ—' हाथ जोड नै माफी मागू, मन अठै सू पाछा जावण रा दूजो हीलो सभळवो।'

उवा भळे बोली—"म्हारै नैणा रा बासी ! आज री बहार सूनी जा रही है, थोडो सुणो गुणो ! म्हैं मिनख जूण रै अंतस सू थानै अरपीजू ! डर-भो, सो कूडो पड जासी, मन भरिया ! मागोला वाही जिनस थारी हवैला, देस परगना तकात !"

छतरसिंघ कया—' देवण रो वादो इरादो हवै !'

वा चट बोली—"मजूर है।'

' तो मनै जल्दी बार जावणै री इजाजत बकसी जाव, म्हारी चावना है। भळै इसो मूडो पाठ निराठ काठ पील, कस वस थारै दिल मे ही राखज्यो " कुवर कयो।

उवा बोली—' या म्हारी जिद नही, उजडती प्रेम दुनिया है बसापो करो।"

उवो बोल्या— 'थार मजहब रै मनसबदार बुलारे वाळै खा नै सूपो।"

उवा वोली—"ओहो! समझी वहम, पण म्हैं तो ऊजळैं दिल सू चावू प्यारा, खाली थारी मुहब्बत! जद सू म्है थारो घोडै चढियो रसील रूप रोशन दान दरबार देख्यो है, उणी वखत सू या मोवणी सूरत म्हारै मनड आवसी है। आपो भूल्योडी बावळी वणी जा रयी हू। एक पिलग री रळी मिळी खुमी री गायक हू। सदीव वुलाया, चट्टो मिल्यो। सग भेंट उपहार पाछा मोडया पण आज डाव आयो है। ओ एकान्त वखतवास हाथ है, ऊपर आवो, पान चवावो, अग मिलाय र आग वुझावो।'

कुवर कयो—"श्रीमती वेगम साहिबा, आपरा वावळवडा हम्मैं मनै सफा नीं सुवावै, अणसुण्या करतो जावणो पडै।" भूख भूजी सिघणी ज्यू सैनाई राज नाज जोर, गाज उठी।

बोली—"अरे! म्हलीण नौकर, थारी या हिम्मत! म्हारी प्रेम वीण तीनै थ के जाणी? म्हार कोप री ज्वाळा सू कुण उबर सकैलो?" पण राजपूत रै धरम ईमान री प्रतग्या माथै वेगम री गादड वभकी रो कुई असर नी पडयो! उथळा ही नी दियो! उव तो स्याजादी नैं सिर नवायर अभिवादण कियो अर खटाखट बार कढ आयो। वेगम चिडियाडी चळपती कुढती बाघणी ज्यू पग पटकती दहाडती गुरावती जा गीडवै गुडी। गाभरू कुवर फासी सू कढियाडै खरगासिय दाई मुकळतो कुळकतो कूदतो-उछळतो देग्यो तनाती ओहदै तैतीमा, भळे मुड र पाछो ही नी झाक्यो! नाजरिया ना समझ की नी समझया।

गुरु अर वैरागी

भारत रै इतिहास मे पन्दरवी सताब्दी रो समै पाप-पुण्य मिल्यो, मिस्रा धरम ग्यान बतावणे वाळो वरतारो हो। मुसळमानी पारा, दारा सासण, कट्टर करडा इधकार चालता। सग रजवाडा एक दूजै सू वैर भाव पूरो पाळता अर आप आपरै दुसमणा तथा दुरबल जणा वगरा देस रा लोगा माथै लूट मार, आगजळी जिसडा पीडित वोवार करचा करता हा। ऊपर सू धरम वदळणे री बादसाही धमकी रै भो सू छुडावणियो कोई नैडा नी ढूकतो। तद देस रा मिनख मारकाट अर मंदिरा पीवण मे घणखरा जण सध वधग्या। धरम ग्यान तथा सिद्र्या बन्दण जिमा सग नित-नेम वोवार, वभचार इत्याचार अर बलात्कार कानी मुडग्या। अैडै तूफान अघड रै वखत मे सगत-ग्यान री वरसा-आसा हुई अर माधा सता तथा कल्या-गुण्या री सीख नसीहत आग आई। घूणी धरम मारग माथै ग्यान उपदेस रा व्हाळा खाळा खळक-रळक चाल वहीर हुया। साच धरम तथा मोटै मिनखापाळा सम्प्रदाय ठाळा पण जागा जागा थरपीजणै लाग्या। साधारण लोकी नही, स्याणा पुखता, पढया लिख्या अर मालदार मिनख ही साधा-सता री अलौकी सीख रै साथ लुळ झुकग्या। उव टेम अेक ईस्वर उपा-सणा ही वा री पैलडा अळवाडो उद्देस्य हो।

इयै वखत आख देस म नूवा नूवा धरम, सम्प्रदाय एव जात समाजा-री बौछाड वापरी ओसरी। कबीर पथी, दादू पथी, राम सनही विसनोई जसनाथी अर सिक्ख इत्याद अनेकू सजीदवा समाज आग आया। सम सारू भारत री भोम माथ सता महता, मोकळा लोगा न भगती र गैलै

घाल्या तथा जात सम्प्रदाय वधारचा। अधरम सू घापेडी लोका सत-सूरमा नैं जोवती-टोवती, घिरती गिरती पडती सी झट आ, गलै लागी तथा साचै गुरुवारै सरणै जोग आखी दुनिया जजमगी।

सिक्ख धरम री नीव गुरु नानक नाव रैं अेक अलोकी साध पुरख लगाई। सत जमारो, साहित सूरापै रो इमी झारो, मुळ्ळा मना म जीवण रो सचार हुय गयो। डील धार-घर, माब पधारचा, अघ डूबत जग सता तारचा। त्याग-तप, राग-वराग अर लोक हितकारीभाव ना रा अेक सबळो सगठण वणग्यो। गुरु श्रौनारी, धरम प्राण, अतस रैं अणम ग्यान गिरथ सा'ब री रचणा करी तथा भगत सिरोमणी वाज्या। ईस्वर रै अस्तित्व अर मैंमारी गैहराई ताई पाँच'र आठू पहर गुण गाण, एकान्त ध्यान म बिताई। उणा री आत्मा मे औतार असी उजास प्रगट्यो जको सीख उपदेसा सू साधारण जनता ताई जा पौंच्यो। देस विदेसा मे ग्यान गरिमा फैली अर गुरु नानक देव घूम फिर र बिना भेद भाव र साचोट रो च्यानणो दिखायो पछ गुरु गादी परम्परा चाली अर सिक्ख समाज सूर-वीरता सू नाव कमायो।

गुरुवा री पीढी मे दूजा गुरु अगद अर डोर सिखला सू अमरदास रामदास, अरजुणदेव, हरगोविन्द, हरिराम, हरिकिसन, तेगभादर इत्याद गुरुगण, उपदेस भजना रैं द्वार, ससारी सुखा सू अळग ईस्वर भगती मे लाग्या रया। सार्थ पीडिता री सायता, गरीबा री मदद अर धरमी थान-मुकान वणाणा पळाया। पण मुगल बादसावा रैं मना म इणा र ठास सुकारजा रा खबरी बाण सूळ ज्यू खुभता रया। उवा घणी विरिया गुरुवा तथा उणा रैं सेवक सिक्खा नैं जेळ म राख्या, ऊभी चाकी पिसाई? माथैं तातो चेप्यो-नाख्यो तथा नस काट काट र घणा री जिनडी गमाई। छेकड बादस्या ओरगजेग, छेकडलै गुरु गोबिन्द सिंघ रैं दो बाळका नैं धरम न बदळणै वेगी जीता जी, गढ री भीता (दीवार) मे चिणवा दिया। जद गुरु गोविन्द सिंघ, बेटा रैं बळिदान, मुसळमाना रैं इन्याव अर उवै वखत रैं ढील ढाल सिक्ख सम्प्रदाय सू घणा दुखी होय'र जमानै रैं तपसी सत माधोदास रैं साहरै जा ढूक्या। क्यू कै उवै दिना देस मे माधोदास री चमत्कारी सक्ती-भगती डाढी चढी वधी ही। वै वीरात्मा सत, गोदावरी

तट कुटिया वास करा। उवा तीरथा वरता रै बाद अन्याव, अत्याचार करणिया दुस्टा रा लाटो ले गाग्या। गुरु गोबिन्द सिंघ जा परा र कबायो—'मना ! इण वगत, था जड त्यागी तपसी भोपाळ री सिक्ख सम्प्रदाय न भारी जरून है। हम्मैं आप पजाव पधारो !"

माधोदास कयो—"पण म्है जगत तज'र आयोडो साध पुरस हू।"

मळ गोबिन्द सिंघ—"ससार छोटणे रो समै ओजू कमैं, आप तो दस नै मुसळमाना री लगाई इत्यायी लाय सू उबारणै रा सुकाज भाला। थारै जास बळ रो थोग भोग उपभाग वैराग मे नीं, देस बचावण रो ओग उघाडा है।"

माधोदास बोल्या—"अब साधु न अडो ससारी कार अजोग आप मोमळा अर लारली म्हारी सारी सेवा धूड धाणी, राख छाणी हा जावैला।

गुरु कया—'दम सेवा ता परमात्त्व सेवा है। साधु हव चायै भादर, आप तो भठे सिद्ध पुरस हा। धरम रा रुखाळा व्हीजो। देस सेवा हो ता सत वरदान हुव, मद ग्रथा रो भडा मत है।'

माधोदास सूल सभळ'र वैठ्या, विचार हिडदै चढ्या अर काना म स कारा कढ्या जद आसण छोड'र ऊभा हुया। उवा फट गुरु गोबिन्द सिंघ रो हाथ भाल'र कयो—"म्हैं आपरो बदो हू।'

आपरै हिवडै चेप'र गुरु फरमायो—"आप म्हारा राजनीत रा मुखिया मालिक हो। आवो लवो खड रो पाहुल म्हैं थान सिक्ख धरम म दीक्षित कियो चावू। आज थारो नाव गुरु बक्स सिंघ राखीज्यो है। मुसळमान, सिक्खा माथै पजाब म घणा अत्याचार कर। म्हार दो बेटा न सरहिंद स्थान मे नवाव वजीर खा जीवता न दीवार मे चिणवा दिया। थान पजाब जाव'र काम करणा है। उणा आपरी तरवार, पाच तीर एक नगारो अर भडा तथा पच्चीस सेवक साथै देयर ओजू कया—'सिक्खा रो रयाव ट्याव बधावो थैं आप रा सदीव दास रैसी।

गुरुआदस पजाब गया, लार वैरागी जा पौंच्यो ! बठै हजारा सिक्खा सुवागत करयो अर वार फेर नीच भेळा हुया। बठला स मुगल सूबेदार डरता थका उ नै बुन लायडा-नडो नगाग्या। पैल पात कथल रो एक

दिल्ली जावतो मोटो साही खजाना लूटचो अर आपरा सिफाया मे बाट दिया। कपूरी रै रहीस रो खजाना ही खास'र बाट दिया। आग समाना नगर म जलालुद्दीन—'जकँ गुरु तेग भादर रो तरवार सू सीस काटचो र घर नै बाळ जाळ दियो अर दस हजार नडा मुसलमाना नै मारचा। वीर सिक्ख जीत्या, लडचा अर बा माधादास नै बदा वैरागी री पदवी दी। ब्याह भी हुयो, पण सिक्खा रो मान तो आघूतो साधु रयो। फौज भेळी कर अर अम्बाला, सवारा, कैथल दामला, कजपुर इत्याद गाव कस्बा, हाथवसू करया। ओरगजेब दिखणादा जुद्धा मे मच्याडो हो, बद रा कुढिया कवाडा सुणतो थको सूबदारा न हुकम मार्थ हुक्म उबै बद नै मारण रा मल तोरियो। पण बदो अथोग बल दवत वीर, सघोरा रै धणी उस्मान खा जडै जालम सूबैदार नै जुद्ध जीत मार नाख्यो अर मुखळिसगढ नै कब्जै लेय र लोहगढ बणा लिया। सरहिंद र नबाव, गुरु रै दो बालका न दीवार म चिणाया, जका लारै उणा री दुखी हुयो दादी मरी तथा बठै रै जगळारी रोडघट म लेयर गाबि द सिघ नै भारी दुख दियो हो। बो आखो अणहूणो दु ख चेत्ये अर जुद्ध छिडचा बठ रा दो सूबदारा नै सिक्खा मार नाख्या।

अेकर मै चालतै जुद्ध रै सम वीर वैरागी जुद्ध भोम सू अळगै एकान्त वास मे जाय र मडली म भजन गावणा पळाया। ईस्वर भजना मे सग लीन तल्लीन हो रया हा। अचानक एक सिक्ख दूत आय र हरजस मडली मे बडचा अर जुद्ध री डरावणी हालत बतायी। कयो—"मुसळमाना री फौज तकडी घणी है, सिक्खा न हला राख्या है।" वैरागी चट बाय वग घोडै चढियो अर जुद्ध जगा आढूक्या। बान देखता ही मुसळमाना रा सेना नाज भीर हुई अर दजीर खा मारीजग्यो। मुगळा री तापा, बदूका अर लडाई री मोकळी चीजा वस्ता तथा माल मत्ता खजानो घणा हाथ आयो। वदै रै तीखा वाणा सू भाजता घणा मुसळमान मारीज्या। सिक्ख जीत्या अर सरहिंद नगर म मुसळमान रो बीज नीं छोडचो। सुच्चाणद-जकै गुरु गोविन्द सिघ रै टाबरा न पकडवाया, उबै नै जेवडा सू जरू बाध'र सर म फेरचो अर खल्ला-खूसडा मार मार पूरो करचो।

पजाब न आजाद करवाय वरागी अमरतसर आया अर दरबार

साहब म सोनै जँडो ढेरा धन चाढ्यो। उवै री ताकत तरकीब रै आग हजारा लोगा सिक्ख धरम अपणाय र धन्यवाद लियो। हम्मैं ता तलवडी राहकाट, मलवारा, मलारकोटला, जिगराव जिसडा गाव अर नगर वैरागी रै सासण तल हुया। राव उमराव इत्याद नरेस उणा रा चेला बणग्या। दिल्ली सू लाहौर ताइ रै प्रदेस री राजधानी लाहगढ राखी अर गुरु नानक रै नाव सू सिक्को चलायो।

औरगजेब रै खतम होणै रै बाद बहादरसा (आलम धलो) दिल्ली री गादी बैठ्यो। उवै फौज भेळी करी अर पजाब लेणो चायो। पण बदा वैरागी री तेज ताकत डर सू मुसळमाना रा पग नी लाग्या। सहारणपुर रै राजा अली मुहम्मद इस्लाम र नाव आखा मुला न ऐका करया, पर राड म वो खुद खतम हुयो अर सहारणपुर वैरागी र हाथ आयो। पण गुरुगोबिन्द सिघ री दोवडी औरता दिल्ली जावसी अर बठै फरुखसियर बादसा वणग्यो। साठ गाठ काई इसी हुई के उवा दोनवा मिल र बदा वैरागी ने राजी करणो चायो। गुरु री एक देवी सुन्दरी नाव री वदै न कागज घाल्यो लिख्या— 'गुरु रा सेवक हा, जुद्ध बद करा, बादसा सू जागीर मिलसी !

वन्दे जबाव दियो—"कोरो गुरु सिक्ख नही वैरागी साधु हू। म्हैं म्हारै सठै पराकरम सू गुरु सुता री बदळो घेरणजुद्धलड्र। जागीरतथा दया री भीख हरगज नी मागू !" इय उथळै सू देवी सुन्दरी बडी नाराज हुई अर उवै सिक्ख सिरदारा नै कवाड्यो क "बद वरागी नै कोई 'साथ' नी देवै अर ना राख।' सिक्खा अपमाण सरु करयो, वैरागी हिन्दुवा रो सगठण बणायो। इयै वैर सू बादसा नै मजो हाथ आयो। उवै बदा वैरागी साथै अनेक भातरा भगडा छेड दिया। वरागी जुद्ध सू लाहौर लेणो चायो पण सिक्ख ता उळटा साधु रै सामण लडया। उदास बन्दो गुरदासपुर आवस्यो। बादसा उवै लारा भारी मोटी फौज भेजी अर जबरदस्त जग माच्यो। बदै रा सात सौ चालीस स्यामी भगत सनिक पकड लिया अर उवै न लोह री साकळा सू सठा जकड र बाध लियो तथा मुखियै रूप पागी काजी र सामै खडो कियो। काजी कयो—

'अरे फकीर! मुसलमान वण जावो जिन्दगी बक्स दी जावगी।"

पण सात सौ चालीस वीर हिन्दु सिफाया मे सू कण ही उथळा ना दियो तथा काजी सू मूढा फोर परा'र सूग करता थका अपूठा खडा हुग्या ।

काजी भळे कयो—"खामखा क्यू मरो म्हारी बात पण मानल्या, नही तो हुण राहूण धुवाडा सू काट दिया जावोला।" पण व ता टस सू मस नीं हुया पीठ फोरे खडा रया। आखिर स री क्तल करणे री सजा बोली जी। हर हमेस सगळा रै भेळ सू सौ सैनिका रा माथा वाढणा सरु हुया तथा आठवै रोज बदा वैरागी री बारी आई। काजी पूछ्या—"तू कैंटी मौत चाव ?"

बद हसतै थकै कयो—"जडीया रै मन भावै।" उवै रै च्यारू मेर माला री रोक रोप दी ही, जका सेला ऊपर उण रै सात सौ चालीस सिफाया रा सिर टग्योडा हा। सिर टग्या सेला रै उवै घेरै म तरवार अर बदा वैरागी रै छोट बाळक नैं बठाय'र कयो! "तरवार सू थारै इयैं टाबर रा वेगामा टुक्डा करनाख।" बदा वैरागी घिरणा कग्नो हुया अपूठो फुरग्यो। जद जल्लादडै बाळक नै काट नाख्यों अर उवै रा टुक्डा वैरागी माथै बाय दिया। पछ ताती लाल लौह री सीका वरागी र डील म दबोसी अर खीरा सा लाल ताता चीपिया सू मास तोडयो। जक सू हाट्या दीखण लागी। जल्लादडै अचभ सू पूछ्या—"इत्तो पीडा मिलै तो ही नाखुस नहीं ?"

बदा वरागी बोल्यो—"आतम ग्यानी आखी तक्लीफा सू अळगो हुवै।" जल्लादडै तुरत बदा रै पट म खासी सारी ताती सीका कुसा उडी चुभो दी। वैरागी निरास निरजीव हुग्यो जो जके पापी लोग खुल्ला अत्याचार करै, उव न मरचा कुण चेत राखै, पण जका भला माणम दुस्टा र हाथा मार दिया जावै-वैं बदा जगती रै मन सू कदे नी उतरै।

ऊट दौड

मडाण रो पाणी वारो खारो इलाको, खाखो ही बदळग्यो है। बठ दो-दा, तीन तीत काम री छेनी मेंनी सू मुकलेरा, हसेरा, खीयेरा, दुलमेरा, कळ कलिया, साधेरा, ऊचाईडो, उदसिया, जेमा जिसा छोटा छाटा एक जोड रा घणेरा गाव है। इया म सू केई उजडग्या, केई वस। कइ ता एक एक दो दो घरा रा रैवास रैया है अर कैया, ढाणी रै ढब सू जीवण दु ख सैया है। पण लूणकरनसर री दिखणादी बाड सू ही मीठै पाणी री सरगळ अर साणी भोम री सदीनी सरूआत है। उठ स पाच छ कोस आधा प्र'यात पाघो, विदवा कसवो काळू है।

सइकट्‌ू साल पल्या री वात है, गाव गौरव री खुल्याडी ख्यात है। उवे पार गाव गावतरै आण जाणै म उफालो चालणा या ऊटा चढ र जाणा दा ही साधन हा। आज कळैरी सी रेल अर गाडचा री सेळ भेळ नी ही। एकरग ,एक वटाऊ गिणगौर रै तिवार माथ आपरी नूई परणेत ,न लावण वास्तै कळकळिया (मासर) जा रयो हो। मारग म काळू नाव रा एक माटो अर दडाव गाव आया।

कालू थापाटै चढचोडा गाव, नाव नामून मे चौखळो चावै अर कुरब कायदो दरावै। जक दिना आखै जिल रो घडचो जडचो जेवर जच। तह्सील लूनकरणसर रा दा मो दम गाव, उवैं रै पल्लै पूजीजै। राजा-महाराजा ही इय गाव नै पायर घणा राजी हुवै। उवै वखत इयै मायै कदे सूरतसिघ जी स्याया कद मघसिघ जी फूल्याना समाया जर कद ही

इय नै राज्य सरकार खालसै गखर पामायो। छेकड काळू गाव नै श्री गगासिंघ जी महाराज आपरी छोटी राणी रै वीर वैताल, लाडकुंवार, श्री विजयसिंह जी रै टिकाणै चढाय कर आपरै आदश नेह नै उजाळ्यो।

काळू सदा सू बामण वाणिया रो गाव, तीन बावनी जमीन, जगा जगा ताल-ताळाब अरनाडा जहोडा सावण म मळा मगरिया सू भिन। गाव रै बिचाळै लामा चौरस टाडो, ज्यारा कूटा माथै च्यार मीठै पाणी रा कूवा, दूर दूर रा मिनख सुख सोभा सुणै अर इयै गाव म आर वसै, हाळी दियाळी, वरस रो कोई भी तिवार आवै जद गाव रो कण कण नाचण लग जावै। गिणगौर र तिवार पर तो तीन दिना ताई हार जीत खातर ऊटा री दौड हुवै। सग लोग आप आपरा करला मजार गाव रै बिचाळै भजणै। नडना गाया रा लाग दवण जड अर मनहर मेळा जुड। पलूरा ढोल मूडवै अर चुटालै री पणगट तथा कालू रा गणगोरवागड बाजीदी है।

बटाऊ नै इयै गाव वाला साथी साइना गिणगौर रै मेळैरी आणदभरी बाना बतावणी पळाई अर पूछ्यो के— "भाईडा थू टेढी पाग बाधे अर टोड सजाये कठै जारियो है ?"

बटाऊ बोल्यो—"गाव कळकळिया म्हारो सासरो है। बठै म्हैं लारले साल परणीज्यो। हमे इय तिवार पर जोटायत नै लावण वेगी जारियो हूं। म्हारै घरा म्हारी मा मैंण आपरी वहू भावज नै आख्या फाडया उडीकै। म्हैं उवै न हुणै नही त्याऊ ता आग दुब्बरसो (दूसरी साल) लाग जावै, जकै मे नूई परण्याडी लुगाई पैलपोत घरा आवै नहीं ! सो फूल गुलाबी पाघ बाधकर जाऊ।" कळकळिया रो नाव सुणता ही उठै बैठ्या सैग आदमी हस्या! कियो—"बावळा ! कळकळिया म पूरी तीन टापरी है, इय तिवार र दिन बठ काई देखैलो ? अठै रो गौर मगरियो देखनी ! (कवत चाल- मे देख कळकळिया सासरो, देखनी कालूरी गिणगौर) म्हारे गाव मे आप आपर बासरा ईसर गौर च्यारा कूवा ऊपर आसी, जद गीता रा गुटका दुळसी ! समछडती बन्दूका माथै सूमाड करता चूचाड चिपसी जद रूखा माथै मोरिया गरळा उठसी ! टावर भीता माथै पटाका फोडसी अर मैदान मे भूठा ऊटा रा सजाई सैता टोळ दौडसी जद थू अचूको आणद

जोड़ लेसी। फाग पड़सी, जद थारै टोरडै रा भाग उघड़ जासी। आपो आप चाल पकड़ जासी।"

चौधरी नाथै कयो—"चाल म्हारै घरा वासो ले। ऊट जैकाणदे, लाठो मेल र काठी उतार दे। ऊट नीर परो, ढोकळिया जीम लेई अर मळा देख'र दो दिन पछ सासरै चलचो जाई। बठै थारा आसडली, कूकडलै जिसा जुवाई रा गीत सुणीजे अर आतो लुगाई न लैंतो आइजै। लोट मे लिख्या है तो माल मसीदा ही मिल जासी। पण माफन हाथ लाग्योडो काळू रा मेळो चूक र क्यू करमहीण वण।"

बटाऊ आपरै घर सू जीम-जूठ कर चाल्या हा। पण काळू र गुवाड मे चिलम पाणी पीवण खातर घोडो थमग्यो। कनै चोखो जेवैडो हा, कर्ळकळिया किसा नाबरै वस हो? नो कोस हो, जको उण रै टोरडै री एक दा रो पडा हो। चिलम तम्बाखू करी अर काळू री चालती गिल्लरा गप्पा नै हिडदै म भरी।

चेताचूक हुयो। कसबै रो कोड अर वारलै गावडै रो गूगो मोड! जावक बुसर, वचकूकर अर म्यारियो! भच पूगे ऊट खेंच'र, एक वा साळो गुवाडी ल जा बठाण्यो अर खुद ढोकलिया ढूक र हाल हुयो।

आथण री तीन बजी, ईसर गौर गोर गाव रै गुवाड मळै पधारया। भवाभव बीजळी रा सा भबका सळाव! गाव री गळया मू दैगी आढी लुगाया रा भूनरा च्यारा कानो सू कढ्या अर गीता रा गोट ऊपडया। मिनखारी मराड अर टाबरा री जोड-ताड रा ताव देखर बटाऊ वगनो सोवणगो। ऊटा घोडा री घुड दौड देखी जद तो भूलग्यो सासरै री सारी सेसी! रात नै सूत्यो, इयै त्यूहार रा तिरवाला आया नींद घूळी अर कुपाल म रगीला जुजाल छाया। दिनूग उठ्यो अर पाछो मेळ मे जाय'र मुडा फाडलिया। जी म आई, कारडा लियो अर भाजता ऊटा री बरोबरी म आपरा टोरडो ताहड कर दियो।

काळू म दो दिन रैयो अर मेळ रै कोच-बलोळ म बटाऊ भूलग्या जावक माऊ रो कैया। हार-जीत रै आटै मे काले काट रा टाड नाचो अर वाह वाही री मौज चोज म चित वहद उफणायो। घुडदौड र गुमान मे गैला हुग्या। कठै कळकळिया, कठै काळू? मेळो देख'र मरवण नै

बिसरग्यो रिफ्रानू ! पाछा पलाण माड्यो, तग खेंच्यो अर आप रै गावर सागी गैलै ऊट नै टिचकार दियो। काळू री गौर रो मगरियो देख'र भागी इसो मतवालो वण्यो, जको सासरै जाणो भूलग्या। आयण आणद मगन आपरै घरा पोंचग्र बाखळ म ऊट जकाण्यो। जद उवैगी मा अर बहिन, बीनणी रै कोड म भाजी हाफीजी वन आई। पण उवै नै अैकलो आयो देख'र बै दोनू सूनी सी हुवैगी। होस हुयो जद उवै मावै सागीडी उबळ पडी। बोली—"बीनणी नै ल्यायो नही तो क्यू गयो ? परण्य नै एव साल तो पूरो हुग्यो अर हमैं दुब्बरसा सरू हुवै। जदही ता मेल्यो हो ! पी'र रो के छेडो है ? अेकर थू अठै ले आवतो तो आपा भळे पाछी भेज देवता। मीण मास टाबर रह जावती अर आवण जावण री अड-खना खुल जाती। बहू-बेटया आवती जावती चोखी लागै।" दुब्बरसै रो नाव सुण्या अर सोकीन बटाऊडै रै सिर म चेतो आयो। हमैं मोजीमन समझ्यो के म्हैं तो काळू री गिणगोर देख'र ही पाछो मुड आयो हू। बीनणी ल्यावणी तो दूर रयी, म्हैं तो सासर जावणो ही बिसर बठ्यो। जद बीनणी कठै सू आवती ? मुळकतै कळपत यो साचो समचार उवै आपरी मा अर मण नैल्या दिया। मायड आप रै अेडै अलोल अलगर जी जामरी सुणी वाता, माथै आपरै भोड मे एक भडीड खालियो अर कियो—

'फूट्या भाग फडीदा माथो, राही नै घूमा वैनाथा" (काळू रै नाथ बटाऊ नै गूमायो।)

कूड-साच

मडाणसेनर खनला खानीना गपिया जपिया तपिया तथा पुखना बातपोस पुरसा री आळ् चेत आवै जद सैजरासर रै गोधूराम बिरामण रो च्हैरो वनळ करना मिनखा रै मूढाग घेरा घालण लाग जावै। अभलेखा सा आव अर दाद गोधूराम रा कोकड टाटका बोलीज।

सजराजर गाव म पैल्या सारसुत बिरामणा रो नमूनादार घडो हो। ठाकुर धनपत सिघ र इयै गाव दो वासा रो पटवारी गोधूराम—वडो बोलाक, मिस्ठ मजाकी अर कूडी बात न साच रै ढव ढुका जचाय र कवणियो करामाती तथा सामरथ हो। उवा री वान मातयात गप्प जाणता थका ही सुणनिया लोग साच रो सो रस लेंवता सुणता अर हँसता हँसता लोट पोट हो जाया करता। पण कदे कोई बात कूडो नी बना सकतो। रकम लेणो, छूट मेल तथा याव नपास रा काम तो केई दिना गाव मे गोधू दाजै रै हाथा सळटता ही हा, पण दूर दूर रा मिनख दरसण मेळा जम र उणा री बाता ही सुण्या करता। वा री बात, खुरापात नी, दिल खुस रजण रो रुतबो बण जाया करतो। इस तरा सूरा पूरा, सता महता अर जूझार जत्या सत्या री कीरत कथावा रा सजरासर गाव म सदीव हरिया छोगा हालता लैरावता रवता। कस्बै काळू रो काकड मोमाडो होणै र कारण नखराळो गाव सैजरासर घण माद मुरजाद नाचतो कूदतो लारला वरसा ताई गप्पा गिल्लरा अर कलाळ करतो रवतो।

दाजो केवतो—'जेकरसैं कुमम्नै, कमज्या फजो उडो। अडो मडो वरमाळ री झडी म्है बगाल जा डूवशो। पचास री साल, आछा दरमावा

वाणिया रै वासे रसोइयो रैग्यो। पण मौसम मार मढ करघा। गिचपिच कादो, रात्यू पाणी पडै, लार गळ तथा चीखलै चळा भर वोकरै। बीजळी रा सळाका जमी सचनण कर नाखै अर लूठै दरिया रा दरसण करा दवै। छोन्ड पाणी नदया म रळै, जद की सूक्वा वापरै। अखावटै मुभाखो हुवै, म्हैं सभाव रै चाढै, माढ गमछो लेय'र घटा भर खातर घूमण नै नीसरूँ, पण छाटा छिडको अर बीजळ पळाका ता करता लारो ही नी छोडै। अेक राज तक्टी कडकी, आख मिचा नाखी तथा बीजळ कवरी केळै रै पानकै माथै दे नीच आ पडी। म्हैं दरयो—'अर वीजली!" मुट्ठी भर उठाली! अँगरखै री मायली जेब म घाल'र आडी काठी घूडो जडली तथा जावक मूलग्यो।

लहर वणी भावना जागी, द आया दस न ठोका! गोधू की नै फ्लका खडारै हा! दो महीणा मोफ्त मे धुवा खै आग्या फाड'र आ सूत्या घर री लूठी बाखळ म उघाडो! सुख भर सोय र सागीडी सक्कर नीद धुकाई। जाभरकै उठचो, आडणियो अडायो तो काख नीचलै गूभियै म बसवसिया फाटती बीजल कुवरा रा भवकारा पडघा। भट वटण खाल'र बात र फरणाई, अकास चढती लीक्टी सी दीसी। म्हैं वा ळा पिछनाया। बापडी नै डाढी दबास राखी, सफा मूलग्या। कूड साच कू सूरज भगवान साखी है।'

पछ ता दाग्ो ठाकरा र गढ म रोक्ड राजनामचै सू लेय र ब्याह-सावै री मेहमाणदारी ताई र पातियै रा प्रवध अर नेगचार रा सानरा सुभाव दिया करतो। रैयत, रजवाडा अर वाणिका वोपारा म रैवणै रै जोग आछो अणम धुसळ मजाक्यो कैइजता। पचा म पच अर चौधरया म चौधरा, पण स्याणो समभदार हावता थका गाडै माथै घड र मनोहागे वात बणा दिया क्रतो। कैवणै रो ढग इसो निराळो क सुणनिया मिनखा रै सामणै सिनेमा री सीबी सी उघाड देवता। बौ अडो कळाकार हो अर जाणतो क, 'बात म्हारी मुणनिया बजचनी नी जाणसी। पण वान रा हुँकारा तो फौज रा नगारा ज्यू मधरा—मीठा गूजता ही रै सी। लोगडा गडाछा रै बोल मगन होयर मुळकत मन हँसी रा फुवारा छोड बोक्रसी अर म्हारै मन री हूस पूरीज जासी।"

वरतारा बदळया, राजनीत पसरी ! गोधूराम रा बाण ढीला पड़ग्या। ठाकर-ठरणा गया, मितगलिया भर खटचा अर गाधूराम मायँ बुगापो घर बैठघो। हम्मैं कुण गिणती म लेव ? चुणाव रा दिन आवैं, गाँव मे घणी मोटरा वुवावैं पण नेता लाग गाधूराम नै नी, उणा रैं बेटा-पाना नै बूझै बतळावैं।

एकरस पैलडै चुडाव रैं सम परचारी मिनखा सू भरियोडो एक ट्रक गोधूराम रैं बारण आग आय र ठम्यो। नेतावा नै आया दख र गाव रो लोक डाग्गे राजी हुयो। मोनना मिनखा न ट्रक सू हूठा उतरता देख्या जद गाधूराम रो ही मन हरचा हुयो। बूगापो भिटक्यो, कौतुकी हाडको जूझ्यो तथा मजाकिया ठूढ ठिठोळी करणै वेगी अमूक उठघो। मिनखा रैं उछाव मारच मे राळ रिगटाना री छिया चड आई। जाण्या—"लाग पैल्या मेरी बाता सू किता राजी हुता ? माण करता थका घडा चावता। व सग बात म्हैं मूल्या थाडो ही हू ? कोई वूभ्भा भला ही न वूझो, दाद रैं जी म आज आपरी बात कैवणै री काळजै खुमी खुणस खडी हो रची है। क्ळा, क्ळा रैं दाम्तै ह्वै ! कुण इसा हवला जको दादैरी (म्हारी) बात नै कान नी माडैलो ? आयोडा री आता नै उथळ पुथळ कर नाख सू ! '

बूढी आत्मा म अळवाद आलरी। डोकरा घर म गयो अर छूछ चार रो खारियो भर परो र ट्रक रैं आग ह्या मल्यो। भेला बैठा सग जणा चोकन्ना हुग्या। जैहिन्द रा हाथ अरा बैरा खिचग्या ? पण दादो तो खारिय म फरफरो नीरो रळकाव अर ट्रक र मूडागै सरकावै। बेटो गाव रा सरपच, बापू बापू' कैय र घर म बुलाव। पण डोकरो ता खारिया झाल्या आयोडा नेतावा र बीचाळ रोडघाटी म पज्याडो खडा है।

प्रधानजी पूछै—' दादा अया काई करो ?"

इण बतावैं—' वापडी मटर दूर सू थकयाडी चाली आई है। जाणू दो मु मार लव ! च्यार गुवाळिया खा लेसी तो सारी चालसी। लाम पड पडी उगाळी काढनी वगसी। थाडो फूस चर लेवण दया, ऊपर सू कूड रा मीठा पाणी भले पा दस्यू। आयोगा आखा लोग हस्या।

पछ प्रधान जी भले वाल्या—"दादा म्हारी सिरकार (राजरी)

मोटर है। पाणी कोनी, या तो तेल पीयै "

जद ठोकरो क्वै—"पीय जको तो म्हू जाणू ! तेल नी, आ घी किसा कोनी पी लेवै ! पण है कठै ? घरा रा बिलोवणा ही मूधा मारी-जग्या जर उणा रा सरजाम सफा खतम हुग्या। एकरग गगासिघजी म्हाराजा मटर चढ्या महाजन राजा हरिसिंघ खनै जा रया हा। खेत खनलै गैलै चढ्या वड्या, म्हारै खेत म उवै साल धाणी ही। गाया-भैस्या रा मोकळो धीणो हो, रोही म रोम विराज रिया हा खेत, मोठ मतीरा सू भरियोडो देख्या, महाराजा री थावयोडी मटर जाबक ठमर-टमगी। भगी आगीन नी सरकी। टस सू मस नी हुई। गगासिघजी धाप'र म्हार खनै आया, पालागण करया। म्हैं आसीरवाद दियो अर खनला सगळा मिनखा खम्मा वाली।

बीकाणनाथ बोल्या—"दादा तावडै बळा, मोटर रो तेल निवडग्या।'

म्हैं क्यो—खम्मा अन्नदाता ! धरती रा धणी हो ! मतोरा जोमो अर सिट्टा चाबो। ताती रोटियो करदया, दपारो करो।' दरबार बोल्या—'साथै एडीकम्प है, कँवर सा है। मोडो हवै, आथण पाछो आवणो है। भळ कदई वात !"

जद म्हैं नम्या अर बोल्यो—'तो जणा पधारोसा चढो ! मटर वेगी तेल नी तो घी घालसू अर मावडचो ल्या रचो हू।" म्हाराजा सा व जाय र मटर चढिया, म्हैं झूपड सू घी रा मोटो मूण (बडो घडो) मोढै ऊच्यो अर लार मटर मडै जा पूग्यो। आग—देखो बापडी पडै रै तावडे सू थावयोडी दूवळी, छोटी सी क मटरडी होठ लटकाया अर आग्या फाड्या टीटण सी खुरबली पग फाया ऊभी खडी। म्हैं जाता ही घी री घडा सूंओ, रो मूओ मूढै माथै आज्यो। डलवरियै जाडी पकडी, म्हैं फट उना दी हा। फटकारे हुस्यार होय'र चाल पडी। भोपू बाज्या अर खख उडी। सर्र मे बा जै वा ज हुई। भाजगी, दोखण सू रयगी, जणा, सगजणा खेत मे काम लाग्या।" दाद धाई वाढ काढ'र अँडी घडी बाता सुणाई।

दाद री चालती बात साथे बीकानेर रै गैल कानी सू जीप रा हॉरण सुणीज्यो। परचारी नेता आगलो पडा मूल्या बठा अर दादै री गल्ला-

सल्ला सामैं मूढा तिडका टिडा राख्या। तुरत लारली पारटी भळै आ पौंची, जक मे जिलै रा एक एम० एल० ए० हा। जीप सू उनरता ही एम० एल० ए० सा'ब चिनाम सा वण्या बैठया प्रधानजी नै लिया लबड धक्कै।

बोल्या—"पडगी पार! सीयाळो सूरज सिर चढ आयो, थ अोजू अठै ही बेठा हो?" प्रधानजी लजखाना सा हुया अर आखा नताना नै लेय'र ट्रक चढया। सरपच नै वेरो पडयो, तुरन ट्रक स पाछा उतार र आपरे घरा भोजन रो भाणो लगा दियो।

दादे क्यो—"जीम्या बिना जावो पोल थोडी है। अया उतावळ करो जद गोधू सारस्वँ सू बच'र वगणो हो।"

पैलडा आया तमाम नेता सागै ही वोल्या—"दादा था म्हान आज तिरपत कर दी'हा, बिलाली विदवी बाता स म्हे सारा मुग्ध हुग्या। भोजन री मन म ही—नी रयो, जावक भूलग्या। कणो पडसी—सैंजरासर ऊनो-भूनो, मत सूनो गाव नीं, यो तो बातेरी पडित पुरखा रो नमूनो वास है।

जद दादै रो लाल, गोपाल सरपच बोल्यो—"म्हें या ही चावो के थे लोग अठै सू भूखा नीं जावो। बाकी म्हारै बापरी क्थावा तो कणै र लहज सू ही मीठी लाग। साच रा उजाम नी, सफा कूडी घडी मढी चालै।"

एम० एल० ए० सा'ब भण्या गुण्या मिनख चालतै प्रसग न समझ र बतायो के दादै जैडा लोक क्थाकारा रै कथा सनसा सू ही इण प्रदेस रा नर-नारी आत्म बळिदान रै अनूठै आदरसा न थुथकारचा है तो चालो आपणा वोटा नै अठै नी है। दूजी आच! कूड नी साच! सैंजरासर आपणो है।

गाँव री लारली वात

गम्भर गढ बडनो गाव धाकड घडो, सार सुव सम्प' चोभीतै रसै वर्स एक चूढा बामण। आररै केड -कडूबै माप घरु कामा साथ नाक निवण मन करण कारजा घणो खसै खट। सवेदणशीळ, सरस मानवी भावना सू वरम साठ पैल्या री घूटी गळ सूटी चावना पाळ उजाळ। रीस रोस अलूणो, सुख सन्तोखधारी, ग्रिस्थ रैवास पण सत उपकारी। दैवत दुनिया रम, आसथ्या सत्तर मू थोडी कम। पण सभाव चाक अणमैं ग्यान नमै खमै। दाता दिल दिया है—पार घाल। पण काठ राड माठै सू काठी, मूवाजी रै भरमाव चालै है।

गळ गळ सूणो घास खेत रो निनाणियो काढ। धान रो कोई सो ळट-पटाइ ज्याडो टाटूडो कढ। जेटा कुण कर? साथ रो पडयो है। डील मे पसेव रा खाळा नीचै न्हासै, जनेऊ रा ईला लड सुहणा बास। बाळ रो फोइ मूल्या-चूवयो लरको लागे। तावडो घमकहै, माछर चूट। सागै ताती धूड, ईल रो माव कूड पँलडी पडवा गाजी, दिन भोत्तरगो जाफली बाजी, धान बळ'र जाता रयो। मोटी आस धासडा कुचर, कदास नारा-यण सामा भाव ज्यावै तो लोक सर वसता रै ज्यावा, अडी धारणा कमिये री धार फफाफफ गवारी बाळ सी उलाळ है। दरागी डैण मरै पच।

कारण खेत गाव सू कोस च्यार पडै। माखर 'करणी सर रा डाडा, डेर रहारै चिपै अडै। पाळ रै ढिस्सै सुहणो झूपडी, वगता नै जाणा भाना देवै बलावै। मारग बवता तिस्सा वटावू घणे माण पाणी पीवै।

छिकता जावै है। दो मटीगण मूण (मोटा घडा), पण क्तोक पाणी राख? मैंत बारा आडोसी पाडोसी लोटडी कूजिया री भरणै आवैं। डैणमुस्कळा गाव नू पाणी ल्याय'र मेलै, गैलै वगता सण, सो रो सटाक वगो मो पौ चास ज्यावै।

डोकरी लोटा भर भर पावैं, मूज बळै नी, लाक-सेवा जी सोरा राख सुधिया साढी दस रै टम घर सू आटा पीम आव, साथै धीणाळा सू छाछ रा खाटो कुल्हड ही भरा ल्यावै। धणी नै पाथ म पाणी फलावै अर हुवै मो र्हारा दरावै। तातै रोटियैं दपारो अर लावण नगावण त्यारगा राख। स्यामी नित सिनानी, धोती कुडतिया धो दर्यै, डेरै रो बुहारो भाडा करै अर पछ वरतण माज घोयर मिझ्या पाछी गाव जाढूकै। जया रानै नैं चौमासियो घणो धिकावै। घरा एक खीखरी (दुबळो गऊ) उव री धार कान्णी, छ माल रै छोटियै छोरैं न जीमा जुठाय'र साथ ल घरा सुवाणना अर लिछमी वोवारू घर खुल्लो रारवणा ही जिना मुळाइ पाती मे है। पण वणी लुगाई दोनू गळगूगळ जीत वै मू मारो मुखी सर्मै गुजार।

पावली टोरडी खेत सू ही तडप पीटती चाल। अनाण ज्हाड री उत्तरादो घाट पक्को, ऊचा, पाणी रो तिखाळा तळ री बाब म नाच चिलकै पनकै। डोकरा माथा दा, दो न विरिया म हाफ्ना सा भर'र बारै ल्यावै। गाडा देवणियै जोग डाढा दारा, वारै म घाल र दटिया अर मदी तुम्बा दवोगै तया हैण वय र टोरडी नैं टिचकार खडी कर। पछ म्हारी खीचर सूमतै अधारैं पाछो खत ले टुर। एक आग माडो सा मावो मबकारा पडै, दूजाडी याऊी प्रीत पाळ। मारग काई उफाळो आदमी सागै हुज्यावै ता थरडायती टोरडी माथै चढा लवै।

मिम्या गै मम काई अेकलियो राही म रात वास वगी भाम्राम रै डेर आज्यावै ता डैण उवैं वेगी आप रै आटै री राटी करै अर जीमाव। कमिमा जेइ चौसगी गडासी कस्मी इत्याद किरसाणी औजार जे काई बढिया आदमी मागणै आवै ता डाकरा आप काम खाटा होय र भला देवै। आटा गुण, लूण, मिरच अर होकै रा पान सनला पडौसी माग-मूगर ल जाय। गाभा लत्ता नीरो फूस, आपरी राख'र आगलै री जरूत

पूर देवै।कोई बदो आपरै खेत म पाणी बगी कव्वी कुंड बणावै तो भारू राम उथै रै साथै भीर हुवै अर ऊरमा सारू खोदण मे घणो स्हारो देवै। लकडी लैंडा, लगावण जावण, मिनखा वास्तै सग जोगती चीज वस्ता हर वखत हाजर रासे। सिर सिखा, ठङ ठारी री वळा, आधी गिणै न सायो, मौडो वेगो ठा लागै सटाक आगलै कनै जा पूगै अर कुटकी चिरा यतै री उकाळी हाथा बणाय र पा आव। गोळा उतरज्यै ता मसळ दयै, हाथ पग टूटयाड बाध दवै अर जात-पात रै भेदभाव बिना लाक्हित करै। मन्यै मिनख न काठ-पूळा, पीपळ तुनछी री लकडी अर नारळ खोपरै सू जुगती पोंचावै। इस तरा, माण मेवा नै।, भगवान री पूजा जाण'र सेवा करै। मिनखा री मोयाब दाब सू नही। पसुवारै हीडै प्रेम ही हाजर रैव। पान्या नै चुग्गा वरसावै, साप नै दूध रा कटारा सरकावै, कीडी नगरै आटा अर कुत्ता नै रोटी नाखणी कदी नी भूलै। अकरा ढ्नाये आवै जद हिरणा रै पाणी खातर गोरव ठीगळा, कारा तगरा माडै अर माढै घणा ऊंचर उवा न भर आवै।

मनाव कया जाव? अभाव हीण जमार पळ्या है। भगवान रो दिया दुख ही ता सुख री तरिया सवणा जाण, धीर वाण पुरख कहीज। सै दिन अेक सा नी वीथ। सुख-दुख रा जोडा है। भारूराम साव—"काई हुवै छोटो है तो दूजा बटो ही है अर एक पोनाळी लट ही रामजी दे राखी है। जी ता टिकाणा ही पडै। काळै माटयार हुज्यामी अर पूरै रा भोळा भान नारासी! के कोनी हो? मा की हा ना! हजारा री ता बाकी खिंडी पडी है। 'का आवै आस हू अर का आवै तास हू।' हाटहाळ्या मालडो ही काई कुताई करणो पडया! उधारो पुधारा ही नाटचा खडा है। बप भाई का की सू लेवा? धेरसी उवैरी भलाई, नी दसी वा री भलाई! माईना री जी जडी, घर रो लाखोणा बेटा ही गयो ता चोजा री किसी चिकारी है। रिपिया रै फोडै रा किसा मरया है। मालक मन ही घर री माढ्ली जणा ही घुरिया जगन टढ काटै।"

भारूराम रा मोटा बेटो वडा वापारी गाव रा हर कामा म बलावता तेडा आवता। परसणियै रूप पूगा राम नाव, बरस बाईस ही नी हा नही इय साल चेथव आइ, साल नै लेंबती गई। बापडै डग न रूळागी। सगळै

वास नैं चेता चूक करगी । चूढळा हरदम चेतैं लगावतो करळ करळ कर परणायें नैं पाच वरस हुग्या, पण हम्में जाय'र घरा नू वा कान आपरवो। नानेरै म जलम्या महीणै रा हुया । वटा घरा आया जित्त नैं बाप लाध्यो ही नहीं पार पडग्यो।' डोकरी राव—' बाप री तो ऊगतै री मा मरगी, म्हैं धारजा ही नहीं। लागा कया—"भारूराम ब्याह कर लै, इ लेत न कुण पाळसी ? माटयार सू टावरा रा फाडा देख्या नी जावै । गुवाडा री खाग मट ला। मूधा मारी जगी।' बात मानी, आखर वरस जावता के बार लाग ? वटा हुया जुवानी उठा-बठी करी। गुवाळी न पाछी सूई बण्ली। गुवाडा छावाडा वणग्या। पण हम्मळ परळ हुगी। छारा छाटा साल छव रा, मावसी पूर री भाळी टाळी अर सूगी। ऊधी हव ता ही लुगाई रा जात काई कर सकै ? मेरा घोळा मडग्या, माथ भारी आपदा आ पडी। पूरै री बट्ट रा सामा दीखता दुख रात म्नि, साझ-सवार काळ अ सुग, जद घर मत, छाती भाठो मेल'र सभाळणा ही तो पड। माळा मिणिया गया लारली गळी। सो वयू ही चाही जमी। की डाळ रा ही दीम, काको भतीजा काल न वडा हुग्यासी।

भारू ईसरगा वास सभ वसता ही अेकलौ मुरजादी मिनख बाजै। वा मिनखा र वास्त सज वत्सलता वरतण वाळो अलौकी आन्त ओप साम। अडा सूध भाव हरदम उवै रै हिडद वस। पण वा नी जाणै क म्हैं की रै ही आडा ऊभो आ रयो हू। भारूराम कदमकाळ यो पपाळ जाळ नी पाळ के म्हैं लोगा रा काज सारू। उवै र हिडद म आ बात ही नी आवै क म्हैं कोनैं ही की देवू साज हू। भारू आप रै भाग सारू हरेक न तन मन धन सू मैजाग दवाळ वण्या रव। पाछा लवणा अर असाण जतावणो हरगज नी जाणै।

पण आज र वरतार लोक हिडदै धेखी अर ठगी जाम। मन मला मणचूम घरे आय पुरख नै पाणी नी धामै। गला अर छिनोर नर, बकार डोलै डबक। दूजा र कूडा आपरा बणै, नडा लाग सगा-सवधी मैग हरामखार आयाडा डकारण खातर ऊंघी मीख पाव तथा एक रा दो घर करा दव। दुनिया परायैं सुख दूबळी, भल बुर मार काइ जोण ? मरघोडा नैं मार। आप रा सुवारथ सारै। गुलामी मजूर-गूमा नर, लुब छिग

घरं उगाळै ! छेलकी वलकी लगावै, चप्पर की न्हाळै हालै चालै । भोळा स्याणा न मूवाय नाखै अर करजै रो पइसो पचा ज्यावै। चेला हा, पण गुरू कुहावै बोहरा घुरिया माग वगै । छाटा-माटा रो मानखा अेका कर दय । जगती री सीख पूर रा ववा, आपरै सुमरै सू लड़ लेव, धन रा ठोकाव बता नाखै । नाव-नामून माथै घूड फेर दी। परवार म पाच ही प्राणी हा, हरामडा, दो अर तीन रै जदापण मू दा वडा घरा वसा दिया। भारूराम बाळक पोतै नै गोदी लेवणो चाव खेलावै, वेट पूरै नै भूरै बाकै ! पण पूर री बहू छार नै खास ल ज्यावै, गाळा ठाव । कुण रोकै-टोकै ? जगनी तमासा देखै ! गाव री वात नगरा न मात दव ।

मजाकियो मिनख

सठ राठी वस्वै रो मानीजता मिनख हो पास। पडौसरा गावडिया माणस ही राठी सू पूरी मुलाकात मानता। जद कदे मडी म मिल जावता, हरघा हो जाया करता, बैठ र भेळा जीमता। वा आपरै हाणहार नगर रो ता वाल घन सरूप वाजीदा ब'दो हो।

बया तो लोक-वल्लभ, मिलतारू-माणेत चोखो मन-मेळू अर अनोखो मिलणसार मूरत हुतो। जकी गळी कढतो, लारै हला हेल मच जाया करती। छात्रारी कोक्ळ कीडी नगरै ज्यू जुळवुळर नाळ फाळ लेंवती। वो ही चाचै जी म्हारै । काको जी म्हारै घरा रै कार म थारै म्हारै रा भेदभाव भूल'र आपरी भावुकता वस कनतै ही गुवाडै म पला जा वडतो। आग "चाखाजी', चाखोजी" री चेतणा म पुडी पराठा छोड र चाय रो गुटक्यिो गळै उतार परो पूठो मुड जाया करतो। फळसै सू कढतो जै ज जमुना मया री कैवणो राठी कदे नी भूलता।

सरस भावुक अर साहससीळ मानव! बटवा काळा गुच्छैदार बाळा सूलटारासा भवरिया पडना वुगला छाटेडी सीस सोभा सदीव फबती रती। पचेतेर बार कर माईत मरग्या जद दूजा साथै वगालै गयो, जका जुवान वण र ब्याह करणै ही पाछो गाव म वडचो, सगाई सरदारशहर बठै री बठै ही हुई परणीज'र आया अर घर खोल्यो। तेणत्र चौणव दस मारयो। जद पैल्यापोत, गावगोत रै लोगा इयै नै जुगत सू जोयो। काना मे बाळा, माथै ममद मोळिया अर उवै रा अठलडा जमायडा आडा पच, स्केच नाव री सीवीरासळ उघडता। गुटगुटियो नारेळिया सो छोटो लूखो

सूको मूढो, फोफळिया वेगी बनारेडी टीडस्या री खपरीवाळी वारा ज्यू ओठा री बणगट, बधती हरी कचन बेलारै नाळा सी मुरटीजती मूछा, सफाचट माडी चाटी उनारडी टोपसी सी ठान्ी, चूपचढी बत्तीसी रा आणद दिया करती।

लाम्बी वाया री कमीज, सियाळै री ऊपराकर अडायेडो काठा सूती सुइटर, पागडी ने त्यागर टोपी धारणवाळै जमाने मे आटा घालेडा काटा सू लडाळूम अेक मफनग्ी माथै लपट लिया करता। ओ स्यामगढ रा रामनेमी अर सही विणन करीणयो सेठ श्री हरखचन्द राठी नहीं, हद-दरज रो मजाकियो तथा हमाड जीव, समाज रो गुणी गिणी जणो माड जमनादास राठी हुता। रास रम्मत, नाटक चेटक अर मैंममेरजिम जादूगरी म आपर भद्र भावा सू देखती जनता री आतडया उथल पुथल कर देया करतो। इयै री रग रग म तान पग पग पर नचको तथा आख होठा, लाट अर लिलाड, सारा अग उपाग अभिनय रै मम माज बाज रै सुरमे रळर चरभर री कागगी वायल ज्यू चाल पकड लिय करता। अेडा अवसरा इयैरा मोखी सागडद गावडिया बाजावाणिया अभिनता अर आम्वा आदमी हस हसर लाट पोट हा जाया करता। कया रा पट दुम्बा लागनो, कथा रै पैमाब री हानत उफण पडती लोगा रा माम डरक चढ जाया करता।

देखणिया टूट पडता ? पण जमनादास री नकल गे असल हतबा मद ना रकतो।

'सरस्वती नाट्य परिषद स्यामगढ' मडळी रा राठी अकनित चत आवणिया चिन चार चिनत हा। परिषद मे इमा जोमीला चटक चनर अरवेस बदळू दम दूजो काई नी हुता। राठी री तीस साल पुराणी बाता चेत आता ही आजू लोगा रै दिल रा बीत्यो बचपण दमकवा कूण लाग जायो सराड उपड ज्यार अर हुसन्डी चट त्तडी हुवै।

राठी माहेश्वरी म्हाजन हुता, पण हरेक जात बिरान्री र काम म आपरै सेवा भाव स् सै जाग रा हाथ बनाबण न आधी माप ताइ त्यार रवतो। वडा जिन्दादिल, हममुख अर हिम्मतवान हा। हाटा र म्ना आरौ गाव नै स्वाग दिखाळण खूब भाग राळ देवता। पनरै म्नि पसा ही

राठी राठ, पठाण, सेठ, कूजडा, साधू अर कनाठ रा साग नरया करता साथ पटी, ढोलक वाळा सायी, वाजा वजावता वगता। राठी आप र घूघरा री घमक घालतो चालतो। सेठ रो साग आछो ओपतो। बाजा री तान मैं पट इसा कूदावतो जका दखणिया टाढो अचूभो करता। सा न बाज ~ साथ तान मिलवतो थको चसती बीडी नै होटा सू ही ऊडी घालतो अर मइ मू बार काढतो, चटाचट चकमा दिखालता नाचतो।

जका दिना नाटक खेलणै रो जार रा चाळा चालतो। प० राधेश्याम कथावाचक रा लिख्योडा वीर अभिमन्यु श्रवणकुमार, दानवीर, कणभक्त अम्बरीस अर उवा रै नेडै सरदारशहर रा वासी सेठ शोभाचन्द जी जम्मड रा बाल विवाह वद्ध विवाह विदुसक जंडा सामाजिक नाटक वठै री मडळी म घणीवार खेलिज्या। राठी उवा म आछा टाटका मेलतो। उव न रिहसल री कदे जरूरत ना पडती। उवै रा डील ही पूरी रिहसल हुतो वो वधस म रास रो ढाई सरा, रम्मत रो चाचक बोहरो अर सिनमा रो कुदरती जोकर हुतो। नाच गाण अर हाव भावा री तिरधा कळा उव न मा री कूख मू ही मिल्योडी ही। स्टेज पर आय'र ऊभतो जद चुप्पा छा जावती।

चिडया म भाठो पड जाया करता। दरनक दडादड गोबर रा टिगला मा रसर पसर फैल जाया करता। कावुली रै वेस म हीगरो प्रचार करता थका काई नी जाणता क यो अभिनय हा रयो है। वो चौक चढतो ही बोलतो— 'यारमारो कोसना नोळाना! हिंग लो हिंग! चोखी सूधी हिंग?'

"हैं' वद्ध विवाह विदुसक नाटक रो लाभी सठ धिवकारचन्द बणतो, लोगा रै हाथा मू पाघ वधाय र माक्ळै माण स करडावण करतो अडवामो रगमच माथै ऊभता! पण राठी हाफेही का जन टीकी कर परा र कोरी दूजा सायता विना सेठ वण जाया करतो। वाणी को लर्ज लुळनाळ भावा नू ननना री डोडी वा वाही लूट लेवना। मृढै हडफा अर माथ बुरकी टानी आछी ओपी रती। मूछा री मरोट कथणी रो हथाव अर जुड्या चरपाडी मी जुवानी जनना री हमी रो कारण वण जाया करती। डील पर रामरज अर मूढ पर पाऊडर पोत'र विना वाले आटखणी म नी

आवतो ! हरख रै ब्हाळ म म्हैं ही वै जाया करतो अर उवै माय सवाद करनो हस पडता। राठी स्टज छाड'र ओठा नेपथ्य म घुसता जद पसेव सू हडाडोव, गाभा गीला लिया वडता, पण नाच गाणा म क्द गावो नी राखता ? घणी सासी भीड देखर पखडा तोडण लाग जाया करतो जानता ही जमनादास ! जमनादास ! री रट लगाया राखती !

अेक वार कस्बै रा धणी राजाजी पधारचा। बडै अदब म आवै गाव रा नजराणा हुयो। जमनादास ही म्हाराजा री भेट चटावण हाज्र हुयो सग लाग टम फम हुयाडा नजराणा भेंट करा अर धूजता टग्ता अपूठा पग धरा। सेठ राठी आपरा इक्कीस रिपिया महाराजा र ववळा हाथा माय घर परा'र हसर मजाक म दूजा र नजराणाळा दियोडा रिपिया फट उठा लिया ! आपरै सिर पर फेर'र नाचत से घूम'र, म बणाय'र इसो चितत नटका रच्यो, जका म्हाराजा री सारी गम्भीरता गइ सारती गळी ! रिपिया पाछा आया, उवै राठी र मामणी खुद हसण लागग्या। राजाजी हुया हरखा, लाग डरया, उवा रा सग हाकम मुसदी हस पडचा। म्हाराजा सेठ रो नाव गाव पूछचो अर माफ्ळा मैग्नान बण र रीसरी बजाय राजी हुया, कायदा वक्स्या।

राठी रा घर जोराराम गोरधन धूत रै बरोबरी म हा। उव रै ऊपर मूथा री तिमजली हवेली, हरदम भाक्ती र बती। मूथा रो परवार डाढा ठाढो, जको जमनादास सू सीख अर स्याणप रो हर बखत लेण देण राखता। रिपियै-पीसियै र काम म मूथा जावक माडा अर मडचूस, सफा कि्नी काट जाया करता। टाबर सू लेय'र बूढा तार्णा हुम्स दान दिखाळना थका चटता उतरता हुमस जमनादास री राळ रिगटानी सू मूथा पण हरया भरयो विगसाव लिया वसता। मूथा रै हल राठी र हाथ री माला छुट जाया करती। राठी जिसो ही भगवान भगन, बिसो ही मूथा रो पडोसी सगत ! सर्दी गर्मी तथा ब्याह बेमारी मे उवा र कद्वै जमनादास रो पूरा धघो धिक्तो। कातीसर र सग जमनादास री खेडी माय मूथा रै टाबरा री अेडी भीट लागती जका दूजा पाटोम्या सू आखे नी देखी जानी। मूथा अभमान रा घर, राठी इमी रो सर !

जुग बीत गयो, पण खेती दाव नी दियो ! दा दस आना आग हो

रया। राड मू जेवडा घडो ही घस्यो पण बाणियँ रैबटै रा लाली खेती मू किसा पूरा पड़ता ? ऊट मरग्या, तागा टूटग्या अर काला रिण्ड खूटग्या। तीन जण मिल'र साझे म काठ कबाड़ै री भळे वाडा दुकान खाली। रतनाडी माटी अर खाती-सुथार घटणँ बठा। पीजरा, आलमारी, चौखट किवाड पाटा पीढा रा थाट लगा दिया। गाहक लाग्या, भाव ताव बण्या, जमनादास ता आपर भावुक सभाव सारू जाणकार मिनखा न उधार ही खळरा दीना। लोभ लालच तो हा नहीं, करडा नगा'ा ही नी कर जद धिमाण कुण लाय र नगदी बक्साव ?

सिनमा वापरघा, राठी न बुढापै रै दुखा आ परा घेरयो। नाटका रा रग फीका पडचा अर राठी रा कळा म अकाळ बडघा। आजाद पीढी कुण जाणै के जमनादास अेक जिन्दादिल मिनख है।

मेसमरिजम म राठी रा साथी साभाचन्द हाटो बण्यो। विद्यालय में काई आयाजण एकाकी तथा परव मनाइजतो, राठी नै जरूर याद करयो जावतो। केई लोग ब्या-साव रै मौकै ही खेल करवा लिया करता। राठी आपरै जादू रै जार टाबरा ने अधारी काठडी मे काळै पडदै माथै मूत री छिया दिखावता अर छन ऊपर मू हाडी उतार नाखतो। काच रा टुकडा उगाळ खावणा, पाती न चाग जावणी अर साबती चादर रा दस्तो गिट र पट मू रगील फूल काढणा इत्याद तमासा राठी रै डावँ हाथरा खेल हुता। इया रै खेला रा गाव म लुगायी टाबर घणा कोड करता। 'मोट बटै रा ब्याह ता माटचा, पण राठी रा हाथ सफा अटक्या। उवै आपर माथ घोटी मुलमुल रा साफो (दुम्माला) बाध्यो। लागा डकराया टोक्यो क्या 'बटे रै ब्याह म केमरिया कसूमल ता स बाध, राठीडा गजब करघा त धाटा पगडा धुकाया लडकाया है।' राठी रा रिफ्ताळू मन हुस्या, जाण्या—"काठ अर तगी म हू।
कम्या। म्हारी ताक एक चौधरी नै धरम भाइ बणाण री तूठी लाव है। अबार जावू, नाज काटा अर नाको भाल काढ आवू।

उवा घर मू कढघा, गाव रै ऊच घर चढघा। चौधरी आसाजी रै घरा जाय'र माफा उवार सिर मल दीन्हा अर पातिया वारा आप माथै आन लीन्हा। चौधरी डाको राजी हुया। धन घडी धन भाग। मजाकियो

सेठ घर आय'र धरम भाई बणग्या। धापना फाटतो जाट, हरख काड सू बोल्या—"सेठ धरम भाइ तो हुयो जका चोखो, पण रिपिया सारा ब्याह म म्हारा वरतणा पडसी ! इया ही धरम भाई रो के ठा पडै। 'भापातणी भीड भयेला नाजै नहीं। भायप पण पूरी पाळणी हुव ता खाली हाथा नी, रिपिया रा पावरो एक चहरै माही मिवर दीपता हाथू हाथ लेजावणा पडसी। आदमी म्हारो पुगा आमी।" राठी घटचा रिपिया लिया घरा वडचो, दखणिया मुणनिया अचभो करचा।

आज र वक्त सुख री सीळी वाय अर ठटा ल रुवा कठै ? चारमेर काठरी ताती लाय बाजै ! जफड इ्याव फळ ग्यान गुण गळ अर कव्वा-सापकारी साजत बीगडै। सेठ राठी र ही राळी लागग्या पैंदा हटगी, अेढा माथ आ जम्या जद सागी जागा जावणो पडचो। पण हम्मैं यो देस वगालो नी अगूणो पाकीस्तान वाज। राठी अठै ही छोटै स्यू माटा होयो दूजी जागा कठै जावै ? पासपाग्ट बणाय'र पाछो लालमणी'र पारबती-पुर नेडै जा जम्यो। पण सन् पसठ बार कर हिन्दू अर मुसलमाना री लडाई सारै देश म ओजू चाल पडी। अेक दिन आखा भारतवास्या नैं पकडणै रा परवाणा आग्या। पाकिस्तान सिरकार उवा सगळा नैं चुग चुग र जेळ मे जडणै लागगी। तकडी कडाकडी लगाय दी अर रस्ता घाटा माथै आपरी पुलिस तैंनात कर दी। डारा न जतर, समाचार न पतर, काई ठा कठै ले जा वाडसी ? बासण ही नी देवै। मारा कूटै अर धरम भ्रिष्ट करण रै वंधै पाकिस्तान मे सारा भारतीया नैं सीधा लगवरगा वणा लिया।

राठी मोच्यो डबग्या काळीधार, तुर त चमार रै माग रो सरनाम करचो तयार। आरी गपी, सूई डारा अर दो च्यार फाटचा टूटचा खल्ला खूसडा, चप्पल अर बूटडा अेक झोळै म भर लीना। काळी-भूरी पालस री डब्या बुरस-रग अर मेख कीला, टायर रा टुकडा तथा दो च्यार चमडै रा वडछा ऊपरी पासै सजा लिया। लोव रो जमुरियो हाथ म लेय र जूना ठोकण रो स्टड अर लाढो झोळै मे दीखता अडा दिया। झोलो हाथ म झाल परो'र रुळतो फिर तो राठी देस काकड र नैडै आ पूच्यो।

सूरजजी घरा जावता आधै मूढै अपूठा देखा, पखेरू आप रै आळा

बैठ'र अठा मेका, डयूटी मू लौटना सिफाही डेरै मायँ विसराम लेता गहस्थ सुख अेका मेका हा। "हाथी बादो 'पाकीस्तान अर 'चगटाबादो" हिदुस्तान गाया घदा दुरती सामी दीसै ही। राठी फ्लोळो मेल'र आपर तैमन री गठ काठी क्सी अर काकड री पुलिस चौकी कने वगतो गयो। फौजी सिफाया री आख्या चढ्या अर जोर मू बतलायो—एक सिफाही—'काथाय जाव ?" (कहा जाते हो ?)

राठी—'आमी काथाय जावा ना !" (मैं कही नही जाता)

सिफाही —"तुमी के आछे ? (तुम कौन हो)

राठी —"आमी मोची आछी" (मैं मोची हू)

सिफाही— तुमी अे खान की काजे आस छो? (तुम यहा कैसे आये?)

माची—"आमी आपनार जूतार पालीस कारीते चाई।" (मैं आपके जूता की पॉलीस करना चाहता हू)

सिफाई—"अेइ काज तुमी मोकाले कारीया दीव" (यह काम तुम सवेरे कर देना)

पाकीस्तान वणण रे राठै म विहार मू आय र वस्याडो मुसळमान हवालदार दूर खडा ही हिंदी म गरज्यो— 'अरे ! ढेट कोई गडबड मत करना। लगर म रोटी खाकर रात का पडे रहना और सुबह सबके बूट ठीक कर देना। खजाची स पूरे पैसे दिलवा देंगे।'

मोची— 'हजूर, माई बाप ! दो नम्बर क कैम्प पर बुलाया हुआ हू, सत अब वहा जाकर हाजिर होना है। उनका काम करके सुबह तुरन्त आ जाऊगा।'

हवलदार—'अच्छा जाओ, सुबह आ जाना।

उव जमीन पर माथा टेर पग सलाम करण रा इसा माग वणाया ज्या हवलदार हस दियो। राठी चट हुकम केद र अधारी पडत पोर सेना साठा मू सुरत छिरत दिया लापडा जवा "चगटावाना आना ही दीस्या नगी म फ्राठो नास र वगनैय के ट्रामराट रै रेर ट्रक मू सीधो मिनो गुर्जी पौंचग्या। टिकट कटाय र रेल मू दीना ठोका सा चौथ दिन ग्न म आ बडग्या।

राठी आपरी बळा घुमतना रै पाग जीया जित्तै पन आपनार मू जियो अर मरता मरता कस्व म मोटा नामून नावा छोड्यो।

मदकमाऊ

वारलो गाव । फूम रा टापरा । टाळवा टोड चवडा खेता खडा है । गाया-भस्या रा धीणा । अेवड रा छेड अर बाछडा रा वगेला चर । कूमटार-कैर खेजडा रोहिडा रै विचाळै छाकोटा अेक ढाणी वसै । तळ मे कूइया, पळ म पाणी । डबी सी तळाई भरी हिलोरा खावै । बरसाळो वभक लोक-परलोक री छिया पळकै । आपरी रगीली दुनिया म टबकतो फिर, मन छाकै नही, पण आज वो उ नै वुनै भाकै नही । दिल रा दरियाव छाला घै । मनडो गहर रा गिरथ पढ रयो है । नूव गाणा रा गायबो तथा राग रागणी रो रायबी है ।

धान सू भरिया खेत, मतीरा रा मावा, साग-तरकारी री क्यारी जीमणवारा सू मरीर सिव । रागळी करै अर ताना छड । आपर कठ री किलकारी मे तरास भरै । डील टूटै अर गरब फूटै । गगद वण्यो वैठा है । मुळक मावै नही । रूप रो म्हैदरो बरम । वो सदीव सोच के कोई तरस । पण आज जी जजमै नही । सुधिया सासरिय सिधावैलो ।

खेन मे लारै सोना चमकै, उवै रो गात घणो गमकै । चालतो छिया दख, जकी सिनेमा रील री सीवी-सी मरक । मोवण धारै भूवै, घर चाल सूवार तथा आपरै ऊपर सागीडो रीझै । जाण—"म्हनै घडगी, आ वाड म वहगी ।" जागळू धोरा मजेकलै वगतै रै जी मे नै जाण कठै सू फूठरापै रो घमड घेरा घाल ? ऊगती जुवानी रा साचेलो घणी है । इमी ऊजळी सदूड आभा कुदरत कया कारी ? वो धोरी सग जगती न आप सू फारी जाण । मन मन म ही हसै—"म्है ता म्है ही हू ।"

बीच रास्तै खेत म खडै साळै, जीजाजी वँय'र बनै बुलायो।
बोल्या—"ओ खेत आपणो है, या जाणो नी ? घरा सब्या चालस्या। तावडो टाळल्या अर जीमा-जूठो करल्यो। दफारो हुग्या, आड-टढ लगाय ल्यो। पाडोसी हमरा अडीकै,-थारै गावणँ रा कोड करै। हण काम छोड'र आ ढूकसी।'

कनलै मेता सू सघ-साईना आया अर कोई पन्नजी, जीजोजी, काई बहनाईजी कवता घणा हरखाया। कँण ही गूजरी माग राखी, कँण गोपीनन्द चाया। काई आरसी अर इढुणी री फरमायस ल्यायी। पण पन्नजी सगळा नै वहै गरब सू पाछा अेक ही उथळा दिया के—"आपण घरा चाल र साज बाज सू सग भजन थान सुणाय'र सागीडा छका दस्या। रोही म काई फोही दाई बोक'र बाका फाडा।"

साळी माळेली अडीकती रयी। रामी रुसर जा सूती। आधी ढळगी, पण पन्नजी कोनै ही वाता नै पाती नी आयो। बेली अनजी आपरा सग भजनी भायला बुला ल्यायो। ढालक अर जोझा री जाडया झण झणायगी, पन्नजी पारवा बोलै। ऊभा होय र गावै। अेक हाथ मे खडताल है अर दूजै म गमछा। पसेव नै गमछो सू पूछै अर हवा लेवै। बीडया रा मडल सना रै सामणै घडी-घडा फक अर खापरा री चिटक्या चलावै। गावतो ही हुक्म करै तथा सामा फरणावै। चोकी माथै मिनखा री चळ पँळ लाग रयी है। घर मे लुगाया री गँगट्टमाचरी है। पण पन्नजी रै सामरियो सोखी अनजी ससू आघूतो है।

तीन दिन रास्या, जका गावण मे बीत्या। चौथ दिन सागी मारग चाल भीर हुया। पण फुटरापै री बडाई सारी पन्नजी नहीं, प्यारी रामी भळ करती वग। वा इयै गानरू रूप रा वारणा लेवै अर वारी जाव गळ री भरावणा मे तो डाढी गैली वणगी है। पारवी भजना री पीठ थाप।

दूजी दूनिया म आवसी उना। अठै वाई सागी अर सघा मैंघो ही नहीं लाघ। खेन आपरा मा लागै। जका मे आवती वखत आखा पडौसी मानन सुणनै आया। उव ने आपर घणी रा गुण चतै आया अर हिडद म ग्यान रो पारस लुकायो। अन्तरपट खुल्या, दे घूजी। पूरी रीझी ही नहीं के बालम री बोली आई—

"काई जावा ? फूटरापा या गारो बणाव ! इमी कळा अर बोवार कठै पड्यो है? म्है जित्तो रूप अर गुणा रा डळो हू । थारै बाप मा री सूझ जका म्हन परणाई । टाबरा री माईन बाजू , पण ओजू ही सुरग री अपमरावा मी घणी हला मारती फिरै। रीम अर दाव ही म्हारी माकळी है।स लेवणै सू घर काज वण ता बणै, नही तो चाल घाडी पावलो ही सही। नित नूवा माख जुडै सापजै। चुडलाळी नै घर घर नूतो है।"

बाल्या'र बोया ! रामीजाण्यो पल्लै वधगी। बमाता काई ठा, काई लिख भाजी ? लारलो गम्यो, आगला जम्या नही ! आज रो वरतारो मूडो है तथा आउखो उळल्योडो ऊडो लखावै है। आपरै गाव रा भूरावा आया। पण हम्मैं पीरै पाछी कैया जावै ? कवळा दस्तूर मुउचा, छेक्ड खूटे सू आय'र जुड ग्या। मोकळा वरसा सू माईता री ओळू आई। उवा फटरोपै म फस नै लाडेसर वटी नै अठै परणाई। भाई अन्नू री रीभ ही चेत आई। पण कन बैठै पन्नजी पैल्या ही कै नाख्यो कै "थारे तो भगवान रा वेटा-बेटी है, म्हारै भरासै किसी पार पडै ? म्हे तो फक्कड हा, घर बेगी सूका लक्कड हा"

काळा रा पोरा, कुसम्मा बग्या। पाच वरसा सू घरा दाणो नीपज्योडो आखे नी देस्या। 'जळो ही जथा'-टाबरा रो जजाल बारक्र फिरग्यो। अेक दिन सुक'र भाज भीर हुयो। रामी नावडी अर गाव सू परिया कढतै राजा पग पक्डचा "पाच बरस पीरै रयी, थारो काई घरायो ? आपरी रीत गडक्रा काटता। पइसो तो जाणै सुवाडही अेक दियो नही।"

बोली— "हाला टाबर, लुगाई रो जमारो। सूनै गाव म अेकली रा वसवो कैया हासी ? गाव रा आखा लोग आप आपरा बच्चा-खुच्चा धन-पसु अर टावर टीक्र साथ लियर खावण क्मावण नै मऊ गया। थे ही म्हांन साथ ले जावो। दो दिना सू टाबर पाणी माथै परखा राम्या है। अेकला सूना आख माढै। अन्न तो बाळरा जाणा ही नी जुटै। हाथळ मानडै री कारी बण रया है। म्हारो कुण धणी है ? पण पन्नजी वालो वालो पाछो मुड'र घरा आ सोवै। साल भर रो बाळक मनै आ ऊम अर सून बाप रा बोबा पपोळै। महगी अर मुसक्ल इमी पै धान रा तो दरसण

ही दारा हो रयो है। मिलगत टक्कै री नही, काठ तो भाठ सू ही कण्डो वग। पन जी सोचै—'जीवडा रात रै पल्न मही, जाणा ता है ही।"

सातवो साल है अर पाळणा हुवै। इसी कबत साची है—"जक मामनै म वाप की हिम्मत नी कर सकै मा उयै नै आछी तरा पार पानै।' नागा उघाडा भाजता-फिरता भरचट वण रया है। दो बटा अर अेक बटी। जका वास्तै मावडी, रात न्नि फफनी फिरै। जीवण र नाव डील नी मरी ल्हास ढावै। घणी विरिया घर रा धणी चेतै आवै। पण आज ताणी किन ही वतायो नही। आज भीम न्दै नै कैवण वाळी वात ऊकसी है। सुणी है जिसी वता दमी। वटी नै सार्थ लेय र दाद रै घरा पौंच। वटी पूछै "दान्! मा कैव हिम्मटमर वाळा नामभर जो लसाटिया आसाम सू आया है। वै बठै टाबरा रै बाप न बनावै। वै आसाम जाय र पत्तो लगावो। वाळरा रै हिया टाट जा ग्यो है म्हारै सू दग्या ना जाय।'

भीजा दान् बिरादरी रा चोधरी, गांव रा सिरपच। मावळा पग्वाडू पण माना रा ठाकाबड। पद्मा विना पाणी घर नही, माटा तारड, भिरसड आग्मी। डाडा भाग-फ़टा मिटाव अर माग सवध कराव। सरध पाणी रा टाको ही घर मू लगावै नही पैला घगय लेव। पनमी रै कलुम्ब म सागी बाकी साग। बाल्या—"छोरा तरी मा नै कय दन्साग पन्दा पडी उडाव। हुकै पना कठै? हुव ता जरूर घरा आव। हिवा पछाडी मेल्दा वगा' घाग न्नि मठै घाको पिकावा अर भीसा सुलग्या। टाबर नाग हुग्दामी, आमा पाडा भाग ग्यी।

मा गोड, माग मार बगबमाट बाग्नी छोरी गरढावग। माग म मू दन्द गो आगदा भोज ग्यी। गर्टी मार्ग म, नीं आ। भूखा पया दमाज,। दन्दूग न्नि तुगरा गावाग पूठ र दाग बन ग नू अम गै। छ गी बाली—'माग मा हिम्मटवाग वाग र ममवाग पूठ आग। व.र न ऊगरघी आसाम म बगाव। दा बगमो पन्ना निरग अर मग्य बगा बिग। प याव र रम्पगा अद ही पग बग्मी। गहा मा उरो नम बग्ट

राग्यो है। बेगा जावो भळे कठे ही रम जासी।" मा-बेटी दानू बोलती-चालती फीस पडो, दाद री छाती नी रयी कडी बाप बारा टाबरा रो दुख दग्यो नी गया। बोल्या—"बेटा कैयद तेरी मा नै, आजकाल म कोई चोखो वार दख'र गुत्रा जासू 'नासट न गूड प्यारो'।' लाघणो तो म्हार सार है नही, पण बीस-तीस दिन गोता तथा गबका तो माकळा खा आसू। काल सौ पचास रिपिया रा ब दोबस्त करू, थारै आघा दिमा पाछा जाव घन, जद दे दिया। नही तो किसा बैंसर्क पड ? अक दादै रा पाना हा।"

दादो गुहाटी गयो अर पूछणो सरू करयो—"अेक बिरामण, नाव पनागम, पतीस चाळीस रै माय माय! गाव रिडी सू रळता नीकळग्यो। पाच मात माल सू जामाम म वाल, साघू हुयोडा वताव। कैणा ही देख्या मुण्यो हुव ता बतावो।' दादा ढाबा टावा डोल अर छैनाती बिरादरी र लागा सू घणी पूछताछ करता फक! पण टीगरा रा भाग जाग नही, पत्नै रा पत्ता लाग नही। छेकड अेक दिन सुराख लागी। प नजी रे अनाणा सिबसागर म अेक साघू उघडचा है। दादा रातोरात जा पूग्यो। हट नाडी म सुरगै करणै सू सिवजा र मिदर म ठिकाणा पाया। दादै जाय र मठ रा किवाड खडखडाया। अगनी अवघूत माय बठा मस्त माळा फेर। जटाजूट, काळकूट किवाडा री भचाभच बाजै। पण माडा भागळ खाल नही। बठ्यो ही बूझै— 'कुण है ? मरी भगती मे भिजाक पडता है। मन्दिर सुलेगा नही।'

दादो— म्हाराज जरूरी कारज है अेकर सै खालदयो।"

साघू—"बच्चा अब मन्दिर नही खुलेगा कल आणा।

दादा—"बाबा, म्है हा सिवजी रो भगत हू, साघु म्हाराज री किपा हो जावै ता दरसण करल्यू। यथा है।'

साघू —"अरे बाबा! तुम घरबारी लोग कैस होत हा ? फक्कडा के भजन म बाधा मालत फिरत हा। तुम तो कुछ करत धरत नही, हमारो कमन्या को उजाडण आत हा।'

दादा— 'साघू महाराजजी सही परमाणी है। पण म्है घणै दूर सू चलाय'र आवो हू। दरसण दिरावा याय सा।"

माधू— 'अच्छा बावा ! फक्त पाच मिनट र लिये मन्दिर खाल देता हू। मैं हारा तुम जीते ! '

' भरडभट्ट ! ! भागळ खिची खट।"

माटा घाळो हुग्यो, दादो भाळो बणग्यो। चपा चुपी बात चौडै आयगी जद दादा बाल्यो—"पन्ना ओ के साग है ? लुगाई रो राय र डिया फोड लिया। टाबर अडीकता झीक्ता आधा हुग्या। वेटी रा बाप साधू ही जे होवणो हो तो ब्याह क्यू करचो ! दस चाल अर अब तेरी गुवाडी सभाळ।'

नफा नटग्यो। बोल्यो—"भेख नै बट्टो लगावू नही। तपस्या न धूवा चढावू कैया ? थे जाणा थारा टाबर जाणै ! पन्नै रो तो मसारा नातो जावक जातो रया।'

दादो बोल्यो—' भेख ता माधू रो चोखो पण साधू कीनै ही दुख देवै, आ बात कठै लिखी है ? भेख भगवो राख, पण नातेला रो जमारो ही थारै दरसणा सू सुधार ! भरथरी ता सातू पीढया तारी ! मा भैण अर लुगाई नै बराबर बतळाय र भिख्या मागी। जेक, दो पीढी रो उद्धार तो आज रै साधु म्हाराज रो ही फरज है। घर रा ही नही, आख गाव रा माणस सेवा करसी। जागिया डड-कमडळ उठावो अर गाव चाल र घूणो धुखावो म्हाराज ! देस मे पूजी जो परदेस अर परभोम म अठ कुण जाणै ?

बावै उठायो चिमठो अर झोळो, चढग्यो रेल, दादा रच त्याया गाव रिडो म खेल ! छेकड तो परचाय'र प नाराम कवा देणो है। घर म बाड लियो तेज काढ दियो, दरसणा वेगी भीड लाग रयी है। बावो फोगा, मोयो मूयो बैठो है दादो इयानका कामा म सदा सू सठो है। सतवाडै पाछो बतळाय के ' पनिया गाभा बदळ र झीटा उतरायले। की मिनखा र टोळ हुग्या। बैरीडा म्हान भाई परमग्या म हेठा मत दिखाळ। घणा ही ठिठ कर दिया। मिनख अर मिनखा रा जायोडो है तो मिनख बणज्या। मिनखा री कैयी मान अर ओ भेख (भगवो) अळगा बाळ।' पक्कड रा आम्बी छिया अक्कड उतरगी अर घरबारी बणग्या।

सरजाम जुटाया सत भगत राखी। रामी रै जो री कमोदणी खिली

गाण बजाणै रै कोड मे पग नी टिकै। पन्नजी रा गाखा काळजै मड्या है। चोराणै सू पाछो आयोडो सौ धन सभाळण-सुणन री घुखण घुलै। आसोज री सुबायली बरमा म् सूकी खेती पागरी। जमानै री पूरी आस बधी। समै री टूटी लडी पाछी सधी। आप अलायदै सूता है, बारी आया सू गावैला। पैली कनला गावडा म् आयोडा सतसगी लोग बाणी बालै। अनजी, पनजी सू मिलणो चाव। पण बठै तो भजनपूगै ना वाणी, हुसलै न घोडी ले उडी अलाणी। अलख नावो सत है।

रात भर जागण अर दिनूगै द'रा पालागण! घण भजन-कीरतण रै उछाव मे अरथी उठाई अर भजनीक जुलस टुरयो। टाबरा रै फरज अदा हुयो। पण रामी रै लामो ढकबाळ आगी। समो, कुसमो हुग्या।

बात चाली। बेमाता री लेख विसरायो। केया भेख सरायो तथा केई मिनख मदकमावूपणै री खुसर फुसर करता' पाणी वारै जा आया। लेख मे मेख नी लागै।

-

माधू—"अच्छा बाबा ! फक्त पाच मिनट के लिये मंदिर खाली देता हू। मैं हारा तुम जीते !"

'भरडभट्ट ! ! भागळ खिची खट।"

माटा घाळा हुग्यो, दादो भाळो बणग्यो। चपा चुपी बात चौडै आवगी जद दादा बोल्यो—"पन्ना ओ के साग है ? लुगाई रो राय र डिया फोड लिया। टाबर अडीकता भीक्ता आधा हुग्या। बटी रा बाप साध ही जे होवणो हो तो ब्याह क्यू करचो ! देस चाल अर अब तेरी गुवाडी सभाळ।

सफा नटग्यो। बोल्यो—"भेख नै बट्टो लगावू नही। तपस्या न घूचो चढावू कैया ? थे जाणा थारा टाबर जाण ! पन्नै रो तो ससारी नातो जावक जातो रयो।'

दादो बोल्यो—"भेख ता माधू रो चोखो पण साधू कीनै ही दुख देवै, आ बात कठै लिखी है ? भेख भगवो राख, पण नातेला रो जमारो ही थारै दरसणा सू सुधार ! भरथरी ता सातू पीढचा तारी ! मा भैण अर लुगाई नै बरोबर बतळाय'र भिख्या मागी। जेक, दो पीढी रो उद्धार ता आज रै साधु म्हाराज रो ही फरज है। घर रा ही नही आख गाव रा माणस सेवा करसी। जागिया डड-कमडळ उठावो अर गाव चाल र धूणा धुखावो म्हाराज ! देस मे पूजी जो परदेस अर परभोम मे अठ कुण जाणै ?

बावै उठायो चिमठा अर झोळो, चढग्यो रल, दादो रच ल्यायो गाव रिंही म खेल ! छेकड तो परचाय'र पन्नाराम कवा देणो है। घर म वाड लियो तेज काढ दियो, दरसणा वगी भीड लाग रयी है। बाबा फीका, मोया मूयो बैठो है दादो इयालका कामा म सदा सू सटा है। सतवाडै पाछा बतळायै के 'पनिया गाभा बदळ र झोटा उतरायल। को मिनखा रै डोळ हुग्या। बैरीडा म्हानै भाइ परमग्या म हेठा मत न्हाळ। घणा ही ठिठ कर दिया। मिनख अर मिनखा रा जायोडो है तो मिनख बणज्या। मिनखा री कयी मान अर ओ भेख (भगवो) अळगा बाळ।" फक्कड री आखी छिया-अक्कड उतरगी अर घरबारी बणग्या।

सरजाम जुटाया सत सगत राखी। रामी रै जी री कमोदणी खिलो

1

गाणै बजाणै रै कोड मे पग नी टिकै। पनजी रा पाग्वा काळजै मड्या है। चोराणै सू पाछो आयोडो सो धन सभाळण-सुणन री धुखण धुख। आसोज री सुवायली बरमा म् सूको खेती पागरी। जमानै री पूरी आस बधी। समै री टूटी लडी पाछी सधी। आप अलायद सूता है, वारी आया सू गावैला। पैली कनला गावडा स् आयाडा सतसगी लोग बाणी बानै। अनजी, पनजी मू मिलणो चाव। पण बठै तो भजनपूगै ना बाणी, हसलै नै घोडी ले उडी अलाणी। अलग्व नावा सत है।

रात भर जागण अर दिनूगैं दे'रा पालागण[1] घण भजन-कीरतण रै उछाव मे अरथी उठाई अर भजनीक जुलस टुरयो। टाबरा रै फरज अदा हुयो। पण रामी रैं लामी ढकबाळ आगी। समो, कुसमो हुग्या।

बात चाली। बेमाता रो लेख विसरायो। केया भेख सरायो तथा केई मिनख मदकमावूपणै री खुसर फुसर करता' पाणी वारै जा आया। लेख मे मेख नी लागै।

झैर झाघूट

घुट्टिया ढेबा, बरयक कुवार। चचल चादडो, लग्खाणा रो लाडा। मा-बाप रा प्यारो दूज लम्बर छारो। वत्तळ छागटा, टम्मरका करतो फिरै घिरै। घर गुवाड रा दर्नै रानी हवै। उलाड पणो सवै। उवो रागळी कर, मरा रू रू रिभा नाख। ढोलकडी कूट जद तो गळी बगता रुक रुक र भाक। कांई रामलीला करै वलावै, भात भातीला साग घुट्टिया नरै। दरसकारी आतडया उथळ पुथळ कर दवै। हसाय मारै। मजाकिया मर पाट म सळी रिगटोळा करता मा बाप सू ही नी चूक। पण लुळनार कीडो लाग थुथकारो घान, वाहवाही दवै। कवै—'ई रो ही नाव खिलधार है।'

घुन्नो अंडा मेळा मगरिया अर खेल तमासा र मौका रयात राख। चीचड मा चढ, होठ हाल, आगळधा फरफरावै। गुण गुणावता रंव भाड भुवाव। दरमका नै जोवै, तुरता फुरत कीं मडचूसिय मिनख रो हसीलो टोटका फटाफट बणाय र कोकड मेल देव सुणनिया बदा हसता हुया न्हाल हुज्याव। नीद काढण रो नफो लेंवता खिल खिलाता आप-आपरै घरा जावै।

इयै रा बाप इसो नावडयो छाटै थक न ही नरड नारयो। गोडा देदिया। उवै आडू आपर इयै लाडेमर स्याडू, टीगर र मस बकरियै री जुडत जरू जकड नै ब्याह दियो। डावडी सटाण डावडी सू परणा सरकयो। घुट्टियै रै गळै एव ओबधू खवागळ, भबरक भूटणाळी भीटल बीनणी ल्याढ कोई। ओमय्या म बरोबर पण उवा अकूरडी रो घन दिन दूणी बधी-सधी। चान्ता,

चवदव वरस मे सासरै आई। घूमडोसी अळग थळक, अडक मोथी भाळी। उण रा मोगरी सा माडा अर माट वरगा पग, दग दग करता धूजरैया हा। मूडा ओवरा मो जडघो खटघा। उण रै सुमरै घणै चाह फुरमाया- "वीनसी धारी सामू रामजी रो जीव अर मीठी वाली वाळी दा नणदाली है। वास म घनवाळ जाटा रा छाकाटा गुवाडा, उवा रै घरा हजारा जिनावरा रा जेवड जूछर। छाछ ल्यावा चाय दूध, खालो हाथ नी माड। आपा तो नळ गवैया, पूरी दस्ती सू पर वस्ता अर सामणै नरसती कळा धार है। राजी राजी गावणा वजावणो सीखा वटा! तीखो वालणो चानणो पिछाणा!" पछै डैण आपरी आसीस मारु दस रो नोट भलाया।

घर ग्रिस्थ, धाटा फासी, घुटिय री अबाध मस्त फकीरी माथै लूण मिरच लकडी री तकडी गरद चि त्या चढगा। झब्बा झोळ राड उत फागडा उळझाड, मस्त मनारी न मार मध करी। पण छार हिम्मत नी हारी। उवा आलमगिरी आम विस्वास सू पहलवानी मे जा ढूक्या। खेल्या कूदचो अर अखाड दौड वडया। आप स टूण न उछाळ वाया। मिनखा मूढै म आगळी घाली, अचूभो करचा। क्या— अरे! कत्यक आळो च भरिया गजब गुदारै। माटा माटा तोगड लडधा न उनाळ उळटाव। साचो कर दी मोटा देख र डरिये ना, छाटो देख र अडिये ना।' जित्ता मू बिती वात्ता। काई बाल्या—"भो विगाड दिया। वान्यि ना दिधा छोरै री मलाई रा जार जमारो। मण पक्का पत्थर गळ म लटका दिया। गाणो वजाणा गयो ज्यू ही कुस्ती अर अखाडा माल छ महीना म गयो ही जागो। मोटयार रा दत्त अलमस्त चित्त हुवै, जका ही नाम काम उजाळ। लुगाई टाबरा री काम सू कालजा खजज्य। छारो तो माथाळो हो, पण माथाळो ढगळ इण न ऊचो हरगज वधण दवै नही।

दूजा वाल्या—"क्यू भूठा भिगत करा, दूजा रा कथ्य छडण म क सार है? आप-आपरी निवेडो फाडो सीडो नो। पैल्या तो कोई बुरक्या ही नही, कवतारचा आपणी पारखी सीख के कारकी है। हूमैं वोरा थूक विलोवणा है।' बद वकवोही सुणो वाम आळा पूरो जीदोरो करचा। ब घुटिय न एक वधियै कळाकार रा समाण देवता। आडोमी पाडोमी उण सू भारी सनेव राखता। उवै खेतर मे खाली उवो ही नाच गाण रा कळा-

कार हो। लय ताल रो चाखा इम्याम, गूघरा री धमक सू हर किस्म रा बाल काढ'र लोका रो मन प्रसण कर देवतो। देखणिया सुणनिया सग अचूभो करता। गणेश वदणा रो नमूनो निहारता ही थामला सा चरण घरता सान्यात गणेशजी सामा दीख जावता।

विडद विनायक धिरक धिरक थेई
ताता थैया, थो थों द्रँ द्रँ
मवाग थुन थुन, दिग दिग दिग थेई

लोग भाठ री मूरती वण जावता। घुड्डो रयाली, मोटराळा सू सघमेंघ जाण ची ह घाली। सुरताल जाणै, जागण जम्मा मे खूस करदर्य गाण। तातो तवलची, च्हैरा सा चालै। रग रग हालती रैवै। तावड धिन तावड धिन तिडड धिन्ना तिडड धिन्ना री जवान हरवखत टेर टिर। आरया फुरै डील कामडी ज्यू लुळै, नसडी हलाळा खावै। ठलेवर लाग तई खडै खडा ताकै, कदास घुड्डियो सामणै भाक। पज्यो रयो। ह्माया, गाणा सुणाया, खलासी रो खोरसी सयो अर फट स्टेयरिंग भाल लियो। पण पग वडी गाडी र ब्रेक ताई पूरा नी पावै।

अरे वाह घुड्डिया!! घुड्डियो जा लाग्यो जपर म एक मिनिस्टर री कार सेवा! सिचाई मत्री री कोठी उणा री कार गाडी रो ठलेवर रैग्यो। चालतो रो नाव गाडी! माटा बुम्बोई जा आयो। हर्मे यो कीरैं सारै? पाछा आय'र मात भाम रै सेतराय मुख्यालय रैवण लाग्यो। जनता रा हलुला तथा मददगार, थाणै तैमील ताई रा काम सारै। अस्पताळ रा हव्रो थावै, उपज मडी रा भला पचायत समिति मुळावो, भलाई कोई निजामत, घुड्डियो लागा र साथै जाव अर लटवारी लूळताऊ जवान सू काम पूरा करावै। खापटी सो मूढो चिरफाड मी आरया तथा लापडी सो तळतूळियो रिगदो डील लोह दिल राखै। मोटा माटा हाक्मा सू हाथ मिलाव साथ उठै-बैठै, खावै पीव। चसको हाय आग्यो, ह्याय खलग्यो। डेढ दो वरस म समचै तैसीत खेनर मे खातीलो नेतो वणग्यो। कमाई रो चेनो उघडग्यो। निम्ळा री जमी खोसी, किणारै थप्पड जमाइ, कैंया न राव सू ठग्या अर आख दिखाय न डाट पिलाई। सेत घर घिणाय कब्जा, आछा उसटड फला दियो।

हाथ म चीमटो, गळै म रुद्राक्ष री घणी मोटी मही माळा एक दिन राख घाल र आपरै गाव आया। गाव आळा देख्यो मिन्दर म एक फकीर धोक देवण चौक माथै पसरया पडयो है। मिनखां तकाय'र जोया—अरे पुहियो ! सागडा कनै गया जवा सू पैल्या ही हाथ उठाय'र बाल दिया—"सुन रहा बच्चा ! मालक री खैर है ! म्हारै वेगी उण रै घर रा इसा ही लेख हा। खुद हाथ पकड'र खडयो कर दियो।

कबीर सोता क्या करै, जागन की कर चाक।
यह दम हीरा लाल है, गिन गिन गुरु का साप॥
कबीर मन तो एक है, चाहे जहा लगाय।
चाहे हरि की भक्ति कर, चाहे विषय कमाय॥

उव फाटक दो च्यार कबीर री साखो बोल दी, बोल्यो मनै परतख परचो हुग्यो।" कनला लोगा हाथ जोड लिया, लुगाया परसाद ले आई अर टाबर पगे पडग्या। पुहियो सेवरनाथ नाव सू पूजीजण लागग्यो। मोटर आळा पूरी साख भरो कयो—"पाच साला सू बराबर वाणी गावै, जत-सत स चालै। कुण रोकै, माधा-सतारी सगत कर। हुकम हुग्या पट खुलग्या तया भवन बुहारै। म्हारै स्टाफ तो इयै फकीर री चाखी नाक निवण भाल राखी है। साप सळीटा लटघोडा तो सइकडा रोवता आया अर हसता मलता गया है। म्हू ता इयै रै सरण ही वगा। म्टेरियग हाथ धरता ही नावो लेना।"

एक टराइवर वाल्यो—"राजा-जागी, अगन जळ है भाई ! अै घणी प्रीत ही नी पाळ। एक दिन म्हे उतावळ म 2856 नबर वाळी गाडी नै बिना धोक पाधरी स्टाट कर टोर दी ही। घूणै रै रस्तै सू सौ पावडा ही सरखया हुवाला, इत्तै नै तो भड भच्च भचीड बोलग्यो। टायर पिचर हुग्यो। धिकाय'र पाछी ल्याया, परमादी वोली, जद सागी चक्क, चेपै माथै घाल'र जातरा पूरी करी।" खनै खडै खलासी कयो—"अबकै एक लूलै पागळ नै म्हू रूट री बस मे नाख'र बावै र सरणै ल्याया। घूणै पौचर धाक दिखाई पट पग ले लिया। दवको कूदतो पाछा मुडयो, सागळा सग साच परच राजीखुशी पाछा ठिकाण पौंच्या।"

बाप आसू भारचा, मा करळाई। बेटा साधू वणग्यो, जो म नी रयो

सोराई। खन गया धोळा री नरम वेगी खोळा म ले लियो। कयो—"बेटा आपणै घर चाल! छोरी कूकै मू दाज, म्हारा बोदो जमारा डाढो लाजै वेगा सा भेख नाख।" धॅवरनाथ मार कान मे मारी फूक, बोल्यो—"राजरी दण दारी चनो चाढा लाखा री नहरी सहरी जमीन भेखमे हाथ लाग। कड़ कूडम्ब रो तक्दीर ऊघडै जागै। रोवता कूक्ता पाछा गिड ज्यावा। माल उडावू चिलमा पक्री चोसू। फाज म भरती थोडो ही हुयो हू ? मौज मस्ती बैठो गल्ना मारू दर्फ हवो अठ सू। सटकै र डणनी डेणियो खुरडा घमता घरा आवट्या। मिरच रोटी खाय र सूता जक दिनगैराइ सत्या ही नही।

गाव रै भोत वार रोड जोड री जागा, राज कुम्भाणो वास वसाव है। बठ ही स्कूल अर वठैई अस्पताळ, गावा नै खाली करावण वेगी खाळ काट्या है। कूमटा काट अर वारट्या वाढ, पण मटी कानला सूबो चौगान पामा, माडिया दार्जै बैठा है।

अगवा गाभा जट कट काळा दुमाल धाटो, तूम्बी अर तासळी! हिरणिय री गोन्ी ऊपर हवै जिया ठोडी माथै मूछ्नी री वूजी सा थोडा साक बाळ तथा एक कच्ची इटा री साळ म मिर घसाया गाळमाळ गट्टो सा एक पटल पट्टा साधुडा ऊचो नीचा हव अर मामली सडक न घडी घडा दख जोव। आर सी पी री जमीन, मीला रा वाडा वाकी थाळा रूप वडी वत्ती वधकी जमीन माथ लपचेटुवा रा लालची क्वजा डाढा करी ज्याडा है। निवजी, हडमानजी गागाजी रामदवजी, जाम्भोजी, जमनाथजी, हरिराम जी सन्तापी माता करणीजी रर काळका माई अँडा मकड दवी देवनावारा धार्मिक कब्जा नै देख र भेख धारी माधू ही अँडा काज करण न जमघट सू आ धमक्या। पाच पाच पट्टा ज्तिी जागा घेरली और घर कोला वणा बैठा। राज रा नोटिग मामला चाल्या अर हर आदमी न क्वजा उठावण रा करन्ा ओडर बन्धा। अफसर आया पण माडिया नी उठ्या, साव नटग्या। घेवरनाथ अगडी स सू आग आयो अर चीमटा बजावा। बोल्यो—"अलख निरजण निराकार, जमीन जिसकी ससारी वावार! बदो कुछ तो खुदा का खाक रखा। फकीरा को भी वमन दो!"

स्कूल रो भवन बणग्यो, कमठाणो चालै। मजूर चेजारा लीपे-पोतै, सिमलो सताई करै। जाळणा चढै, कब्जा लागै। आखा कारीगर खावा-पीवो तथा सोवा उठो, उठ ही करै। जाग-सजोग, एक रात छात माथ सूता बीमा मिनखा म सू च्यार जणा नै काळ भगवान आप र काम छाट बुलाया। सापा किमा मनेस! मणक मणक आधी री कोमळी सख-चूड आई अर च्यारा जुवाना रै गजब जहरीला चपकिया सा चेपगी। गहळ म उबक उठ्या, जी दारा हुवतो बतायो। भागूड आग्या, वठ रुक्ग्या। दुवा दारू री भाजा हासड घणी करी, अळी गई। लवर लागग्यो उव मोहल्ल तकडा अन्न चाळो छाग्यो। कदेई कोई पटवारी, कणाई कोई सनार, आज्याव धबकै, वेरणती द ज्याव धार। जाडखो हुवै जका ऊबरै। साचा ओखद लाग ज्यावै, नही ता ऊभी चोटी ऊम ग्वाड जा पौंचै भगवान र मोट दरबार?

"माडा कर मलार घरा परघा ऊपरा।"एक दिन सिझ्यारी, उवै बास र सग माधुवा सैल सतसगत करी अर नोजा पिस्ता बादाम घाल'र दूधिया भाग घुटाइ। माय न जूना ताम्बाळा गोटिया पइसा घस्या, धतूरै रा बीज रगडघा मटका भर'र छाणी अर गडवो गडवो चोसी। रात सू भखावटै ताई गाजै री चिलमारा गाट सा चाढ दिया। धूवै रा कुरळिया उपाड नाख्या। नगा मे धुत्त, धेवरनाथ बावळी बुत्त बणग्यो। माडोसो बोल्यो—"अरे पोगी! वेगा मा घरे पुगावो मावडी सू तो मिल लू पीटळी पीगी! डब्या आवै, कठ रुकै, थूक सूक! जीप ल्यावो, जीभ खच। उतारघो भेख, सनाळो कबजो, कदास प्राण बचे। गाव ले जाय'र डाक्टर न बलावो।"

सूरज री उगाळी, जीप आई। गोरीधण चप्पड चूधी आत्या सू चमकी उठी। पेट बुशोट मागया, भगवा पूरिया खात वगाया। चादा बरवाडी बोली, गाळा रा' मूकण सुणाया। कयो—"मर जाणा कमाल्याया धन नीप जालिया बीग्घ म बीस मण गहू? गिरणी खाव, किमी धामळी पीगी? भाग पियोडी लागी। ढागी!"

डाक्टर कया—"हुवणो फरेब करै, ढोली माळा लखण-नखरा दिखाळै। इ र तो सखचूड नेड कर ही कल्चोडी कोनी।"

कौरो भूठा पडघो, दखा देखी मरघो।

लकड़बग्घो

सावळमर वाम, अेक लूखी सूकी भाम तथा फोड़ै नोड़ै रो रैवास मान्यो जावै। वो बीकाण प्रदेस मे विगसाव री दीठ जोत सू ओजू अळगो अर अजूवा इलाका वाजै। थोड़ा उतरादै पासै पडाला खेत अर नहरी खाळा नू रूखा कीकरियाळी छीदी पतळी हरियाळी आन्या म अुमड आवै पण अठै सु दिखणादै छेड़ै इलाकै म पजाबी पण री पडत जावक नड नी लखावै। इयै री तै सीली ताळिका मे धाराळा छोटा ठाटा गावडा वसै। लाग सीधा सरळ अर निस्कपट, उवा अणभणिया सादा गावा रै बीचाळै आजकळै कदे वदे फाळतू, फरेबधारी, सागैगारा धूत लोग ही आ धमकै। अठै रा लोग नी जाण सकै के व खोटा रदखळ खीला है अर बै आपरी बोदी बू अर गदी बाण सू जनता साथै पेस आवता थका भला मिनखा नै सागीडा फिडावै। पण उणा री सासरव्रति न व्यवस्था अर अधिकारी तकात नी समझ सकै। कारण गाबडिया माणस उवा रै धाखै री पूरी पोल ही नी खाल सकैक किया एक पळगोडपलीन आप रै खरीदेड़ै माळी पान (उपाधिपन) रै पाण कूड रा कामण रच र भोळा मिनखा नै हाकमी रिस्वत सू रळावै।

सा व जिलै रो नामी जूनो गजिटेड हैडमास्टर, भाग जाग सू कसव री हायर सैकण्डरी म आ पूग्यो। नाव तो मकडदत्त पण लाग वाग नीकन कोळियाळा दस्तखत दग र लार सू लक्कडदत्त कव। क्यू क अधिकार मू सडयाडी आवरू मावै हाकम गे धाक मोटी छाक ज्यू माथ मल्या अठै आया वडया। आपरै लारल बीसा वरसा म इयै मूमळ रा मारकैदार

कबाडा विघोडा हा। बीकानेर जिल मे ही नही, श्रीगगानगर अर चूरू ताई री स्कूला म बापडा मास्टरा अर चपरास्या री जिनडी बरबाद करी बताइ जावै। भणनिया असख चतर अर स्याणा टाबरा नैं घूस मिले बिना फैल करया है अर गिजा गूगिया लाबरा न टक्का अठ'र आगली किलास मे टरकाया चढाया है। ठाली बैठ्या इसा कबाडा री कथा आपरैं दोस्त मितरा नै सदीव स्वय सुणावो कर। गप्पीबाज कदेई खाती, कदेई सुनार पण कणाही आपनैं गुजर गौड बामण बता नाखै। अर दूज र पसाव पडता ही मामळ नीं राखैं। पाठसाला मे आवतैं ही उव चौथी स्रेणी रैं क्रमचारया माथैं रोब गाठणो पळा दियो। बारला मास्टरा रा अेक् अेक बढर इसा घणा घूसखोर घाघ दख्वोडा, हां मे हा मिलावणी पळा लीनी। सा'ब' सा'ब' कैंवता आग सग आखा आछी माडी पी जाया करता। लारै सू लक्कडदत्त कवता रता।

लोग बात कर—

"दत्त कुलछणो जीव, इसा मिनख सस्था मे नीं राखणो चाय। स्कूल मे धूवा काढै अर टाबर बिगाड।" साची है—बारै रिपिया री बीडी अेक रात मे बाळन्यैं, दारू मीट न्यारो। भार मे हमस इग्यारैं बज्या अुठ। उव रै अुठण सू पली चपडासी बीड्या रा बडल अर इडा रो कटर बन ल्या मेलैं। दो बडल अर पाणी रा डोल पाखानैं मे राख देव। सा'ब साप सो सूसावतो फूफावतो हाथ मे तूल्या री डबडी लिया बड अर फारिग होय'र आवैं, जत नैं फटकार बीसो बीड्या फूक गेर। पेट हलावतो पाडा सो अेक बज्या दुपारैं, रोज रो साळा पौचैं। विद्यालैं रैं बारड री डोरी सोरी अेक फेरो गडको मार'र दो बजा देवैं। चपडासी रो ल्यायोडो खाणो खावैं अर बीडी सिलगाय'र घूस रा हुकम काढैं। चार वज्या घरा चाल पडैं। दूजा रैं भरोस स्कूल चलावैं। दिया वत्ती र टेम आपरी जुर्वबाज मडळी घरा बुलावैं। मजलिस जमैं। माल री चिलमा चाल। चादी बण जावैं जद सुलफिया यार खिसक पडैं। जार अर जुवारी जमैं तास रा पत्ता खीच। रात रा दो चपडासी फुरवा लगायोडा हाजर रैंव। ठडी नी हुवैं, धुवैं रा गोट अुपडैं, रात काळी हुवैं। कदे बदे काई



चपडासी भोळी भाळी नूई आयोडी अध्यापिका बाई न ही परचा ठगाल्या बाडै। जैडो चडो बिलिया तोड, नीला तो लक्कडदत्त री घणी करेडी है। भैणा री बात, आखी साखी समेत जीवती माखी गिट'र रैवणो पड। घणी काई कवा? पीचोडो हुवै जद घर री वैन वेटी तथा वेट री बहू न ही जा भाल। बापडी जोयड धावा घूड नाक्ती खल्ला मार'र आवरू अुवार पण अटल मंफिल लीला इणा री अेक दा वज्या बखास्त हुवै अर बो बागदो खाणो लेवै। या ही हाक्मी हर रोजानी चर्या है।

बुरै मिनख रो मतळब राखमी रगटा भगडा करणिया कुमाणस! अेडा राखसी कबाडा क जका नै दख र दूजा मिनख डरता थका दरसणा सू ही मूढा लकोवै। राखसी जीवण बुराई अर आगण अपणाण सू वण। वैया तो आगणा री काई गिणती नी, बुराई री कोई सीमा नहीं, दुनिया म अेक सू अेक बघर बुरा माणस हुया है अर ओनू लाधै! पण केई बुराया इसी है जका माथ आचरण कर'र वो कुजीव राखस सू ही वत्तो बुरो वण जावै अर नरक नडाल्यै।

जनाव दत्त समैसर नी कि क्मचारी न मुगताण दरावै अर नी साची तरक्की री सिफारस कर। हक री छुट्टी मसाण दवै कोनी। अनुसासण राखणो जाणै नहीं, कोरो चमचा सू काम काडै। छात्र बेफिकर खुल्ला घूमै फिर अर आचाय रो अनुकरण पकडै। प्याला भरै अर वहळ फाड, पास हावण रा लावा लूटै। आपसी बाता कर—' पढाई म काई धरयो है? अक्क्ल तो गुरु री नकल छूट म है—जका हैडमास्टर ने दाम काम दिया मिलसी।'

एक छात्र बोल्यो—"अरे भाई! काल रात रा अेक ट्रक बीकानेर ग्यो हैडमास्टर जी उव म स्कूल रो माकळो छटवा समान धणखरो आपरै घरा भेज्यो। मनै बलाय'र कयो—'पाम होवणो है तो प्रयागसाळा सू सामान ल्याय र ट्रक मायै लाद।' म्हैं उलातर मेल्याही दो वडी जाजमा तबला री जोडी, [बटरी कमरा, गस, ताम्ब रा माटो कळमा, वत री कुरस्या, चार बडा बाळटया इत्याद चीजा आधी ढलया ताइ ढोय र लादी।

दूज छात्र कयो—"साळा! तु भ्रिस्ट अर चोर है। साळा रो सारो

सामान रातू रात लदा दियो।"

पैलडै उथळा दियो—"थे किसा सचला हो? हैडमास्टर रै सूगलै पखाडा रात्यू हाडता-रोवता फिरो।"

परिघा खटा आखा छात्र अेकै मार्थै ही बोल्या—"आपा नै तो पास होवणो है भाया! पोल मत उघाडो। परीक्षा नैंडी है, दोना दीना सू जावाला। घरवाळा मेता रै कामा लेजा ढुकावैला। चालै जित्तै चालण दयो पोल पटी।"

पोथी पढनो आतरै अूभो अेक छात्र हस'र बाल्यो—"भाइडा! था जाणता हवोला भेडियरी जात रो अेक जगली जिनावर हुवै। जका कदे बद रात रो गावा म जावडै अर घरा सूता साल छ मीणा रा छोटक्या टावरा नै उठा ले जावै। हिन्दी वाळा उवै जिनावर न काई क्व? वो ही आपरळो तकडो सा'ब है। हा! जनता इयै रा नाव रारयो है लक्कड-दत्त, जको दत्त री जग्या बग्घो लग्या साळ आना साच है, क वो विना कारण ही आपरै मातहता नै मारै वैर कर। 'आप कवोला कतरोक वैर? म्हैं बतावुला बेहद! आप भळे बूझोला पण बेहद कतराक? म्हैं क्वूला—आप काई वूभो, लावा म या वानकी अेक ही है। ममलन अेक-अफसर अडा हव—जको आप रो काज छोड र दूज मिनख रो काम बणावै—वो दवना वाजै। दूजो—अडो हवै जको आप रो काज ही बणावै अर आगलै माणस रो ही सुधार देव—जगती उण न मिनख क्व! तीजो—जैडा हवै जका निजू फायदा करण खातर दूसरै दुरवळ रा काम नस्ट कर'र नुकसाण पौचावै—जगती उण रो राक्षस नाओ काई। चौथा—अडो हवै जको आपरो तो कई लाभ नी कर सके पण बदळै पारको तो बुफायण कर ही नाखै—या वाचणिया सिरदार बतावाला क उवै लटै न काई क्यो जाव?"

लक्कडदत्त री दुसमणी अेक कुदरती कळा है, जको म भूडापा, मूर-खापो अर जरीलो जोस-नसो भळक। कुवाण है—मरोज मर जावो, हावा री लुगदी बण जावै। पण दत्त कदा आपरी बाण सू हरगिज बाज नी आव। निलाबित करावण म, चाज सीट दिरावण म जर डिसमिस रै आदेसा सारू आपरा अधीनस्थ लोगा वेगी रात दिन कागजिया काळा

करै अर यितिया हौ थोसिस लिखनो रैव, मरै पचै।

पूरी सीढ़ी नी आवै, सागण वारता सुणो। छ साल पल्या लारल गाव रा कारनामा मिर लिया रत्त मावळमर आयो उव रैनावै भ्रिष्टाचार वभवार रा छप्याड़ा पैम्फलेट पाय वठ रा छात्र ले डूबया अर अठ छात्रावास रा टावरा नै यवास र भड़का दिया। छात्रा हड़ताल कर दी। पण तिनमान र फर सू एक भला मास्टर दत्त री गिडगिडाहट र चक्कर म आगत्रा अर स्टाफ मिटिंग कायम करवाय र छात्रा नै मदरसै बाड दिया। दत्त अर आवा मास्टरा स्थानीय जाण र उवै जूनै मास्टर नै ही स्टाफ सचिव चुण लिया। क्लासा लागगी अर भणाई सरु हुगी, दत्त रै लोही घिर आया।

कागळिया काज चाल्या। कुम्हारा सू माटक्या रो कूडो मोल चूकण री रसीद वणाई। दफ्तर रै स्टेशनरी सामान री कीमत सू दसगुणी भर पाई करवाई। फरनीचर अर भवन मरम्मत रा बिल दवाई पाणी तथा जात्रा भत्ता री रकम मजूरी ली। आपरा इया कामा मे स्टाफ री सलरी रो ध्यान समैसर कदे नी धारचो। आपरा वेतन बिल जुदो वणाय'र पास करा मगावै पण लारला पड़ो कूव म! सचिव आप रै पद रो त्याग पत्र पेस करयो। दत्त मफा इ कार करदा दियो। पण स्टाफ री वेतन रूक चालती रयी।

सिगरट, सराब अर जुआरया म जमगी। उवै छात्रावास उठा दिया। डर भा, सराधिया बादल सा खिडग्या। मणवत्ति बणग्या। सचिव देख्यौ लक्कड रग बदळवा लाग्या। जार रा अत्याचार अर परपीडण वो मचिव अपणा नी सक्यो। मौनवण र मफा मास खीच लियो। मेज माथ मुक्को बाजतो सुण्या "रगड दूगा! रगड दूगा! सबको मजा चखा दूगा।" एक हरिजन लिखार बाबू नै सागै रळाय'र कबाडा पळा दिया। यो जद लारल कमवै सू सिकायती तवादल रै दाब भजायोडो आयो, बूढ़ै गहक ज्यू दातरी रैवना! हुर्मै पारको

खडका धमका सुण र सचिव दफ्तर म जा बड्यो। दत्त बरस पड्यो अर बोल्यो— 'सबको देख लूगा। मैं ।

साटा सो सूमावतो बोल्यो—"मेरा कोई क्या बिगाड लेगा?" दारू

री तेज गिघ सू सचिव रो माथा फूट पड्या। देख्यो उवैं री आस्या खच रयी है। दत्त बोल्या —"मैं प्राथमिक कन्या पाठशाला का माइना करूंगा, निरीक्षक जी नैं हमारे नाम ऑडर भिजवाया है।

सोपो ही नी पड्या। चोर! चोर! हाको हागयो। सचिव ही लागा र भेला भाज भीर हुया। आगै जायर भीड मङगी। हैड बहनजी रैं क्वाटर में रोवणै री अुवाज आई। मायलो कूटा, दो जुवाना कूद'र जोयो।" "लक्कड़बग्घा है।" बारै खड़ी भीड़ नैं बताया। अेक जणै आपरी रिवालवर ताण र पूठो उथलो दियो। कया—"किवाड खोल र काढो-आवणदयो खतम करा। गाव में क्या हिलग्या। भळे कोरा ही टाबर ले जासी।" गुरी झालर मायनै सू दिखळाया कै—"यो तो टावर लेजावणो मासर नी, लुगाया पकडणै वाळो कुमाणस लकडबग्घो है।" सा'ब री सूरत जायर आयोडा सा लोग उवैं रैं मूंढै थूकता थका आप आपरैं घरा टरया।

सुहागरासो

सगळा रै मन मायै सदा सू उवरी भाळप अर नामरदी री कूडी साचीं माख छायोडी ही। घर घुसिया डरपोक, ववविस्वासी अर जोल वठर खावणै-वीणै जिसै समावा री उवै री वाता गाव मे ही नही, दूजा गावा मे ही जा पोंची। उवै रो मन सफा कारपाण, हरजगा कुढनो कापतो रैवतो। एक अलवेली वाण वणघट री डील हा उव रो। डरू फरू, अकेली कुवारी छोरी री तरिया हरेक आदमी नै दखना अर पछ उवै वन पोंच्या दान् हाथा री आगळचा गूथर भट पाछो नीचै नाखतो थको पणाम क देवता। जद आगला मिनख ही कुसल समाचार पूछ लेंवता।

गली मे माता जी भैरूजी री छालो एक मूरता अर देवता वारा फूनडा पैग्या घर री पाळ अर आगण वीचाळै आवा-जावो करतो रवता। गळी म कोई ओपरो अपरोसा मिनख दीख जावतो जद खिडकी री बारी थाठी जड लेवतो या भाज'र मोडै रा किवाड वद कर लिया करता। फळसै मे वड'र कोई नूतै पाताळो हेलो मारता नद उवै मिनख नै आळग'र ही-ही ही हसता हुया हकारो भरतो। छेकड आपरी रटी रटाई बात बालतो अर मोटै सरवजाण आदमी री भात उवै नै चनर समभावणी री चेस्टा वनावतो जातो—' भाई म्हारै वार जावणियो कुण है ? माजी ने भीगन है अर मनै पलेट मीठो खावण री डाव पर री सागीडी मनाडी है ' वेगीसो वात वनाय र मुद आगै टुरता। आपाड नै पाछा टोर देवता अर पोळ री बारी ममडर करता थको माडो जडणैरी घर लालमा म आसतो आम्ता भाज'र माओ नै आखी कथा मता दिया करतो।

वो पोपलमाटी, लधडा, अर ढीलो ढगळ सो थूळ मथूळ ढीलाळ घनवनो धणी डीकरो, ऊन अर बोछरडो नी लाडेसर ढोल हो। लीवर रै मरीज री टानिक दवा गोतल रै ठकसी ऊडी-सूडी, डनलप गै तकियै ज्यूं लथ पथ भिचनो-उभरनो पेट तथा थूमडै थाग भाग झुवयो फिरता-घिरतो। गोळ बोरियै री गुठली सी गुदली आख्या, कीडी नाळसा छीदा पतळा दाढी मूछ रा माळ, जका रै मरदानगी नसै माथै घरा आयाडा लुगाई टाबरा मू मुळक मुळकर बगनी बाता किया करता। लाड उवैरी जलम धूटी सार्थ घोळ र पायोडो हो। घणोसारो खिलाणै पिलाणै वगी उव री मा-दादी अर बाप इत्ता घणा नारा करता, जके आप मूखा मरता आख दिन र जाया करता। पण अैडै लाड रै पाण ही वो घणा घणा माथै चत्तो। प्यार पुचकारणा र वखत उवो छैक्ड रोवणै तकात रा ताणा-बाणा बुण नैंवतो। उव सग 'लाडी-लाडी' करता, जद वा माथा सूजाय र मा दादी नै हरामजादी अर गाड तार्ई रा सबद बक देंवतो। वैं मूढै में क्वा दावता जद वो उवा रै घूसा मारनो जातो। छेक्ड कोई रडलो पाडोसी उवै न डरा धमकाय'र जीमावता तथा घर परवार मैं थाडी ठड चापरती।

थोडो बडो हुया—माईता, वाज्या कुम्हारा री एक दो बहू बटया न उवैरी धरम मैंण वणा दी ही? लधडै रै बावळवडा मे की कमी नीं आई। माईता मदरम सो नी मेलयो, पण विद्या देवण न गोमती हैड-मास्टरणी नै घरा ही बला ली ही। मा घणी घणो जीमावती-दावती रवती। लधडो आया काढतो मीचतो बिना मन गासिया गिटतो जावतो। मा न मरज्या तू मरज्या कवतो हुयो वणावटी विस घोलतो, माळा ठोकतो पर मा बिना इयै र घडी सरतो नही। सग मनावणा मूतावणा मा कन चटी करावती। मा मिनट एक ही अेकलो छोडती नही। वो बिलडी सू ही डर,अेकला बारै पग धरै ही नही। मा री मजबूरी,एक आख री के उघाडै अर के मीच? च्यार घरा बीचै आख्या देखण जाग एक ही तो औलाद है। दुखियारा माईत जद ही दबोम्या राखता। उवो नित हमेस खेलण री जीम करता। वाम रा टाबर ही बाळ सुलभ हेत मू उलळ पुलळ आवता। पर लधडा डफोल लुक लुय'र किवाडा रै बिजोकला माखर देख्या करता।

दादी आरया री सेन मू कूडो सुवाणन रा साग भरती। मा बारणें आया बाळका न 'जावो जावो' कैय'र पाछा तगड काढती। बाप अँडी लुकावणी बाता स डाढो राजी होवतो अर खखारा करता बीडी सिलगाय'र नचीतो सो जावता। इस तरा लधडे माथै घर वाळा री पूरी देख-भाळ निगैदास्ती चालती।

वनलो वैद्य घर्ण सू ऊधो, टाबरा मे बैठं उठं नावडो रुधा! लधडै रै माईता नै बतायो—"टाबर नै थे खेल प्रवति म राखो, घराडियो मत वणावा! मदरस मेलो भणावो-गुणावो आपर्ण इयै कुवर रै डर भोरी ग्रथी वण रयी है। डाढा फोडा घालैली। म्हारा मनाविग्यान है, बाळक नै लुवाया राखर्ण सू डरोक हुज्यावै जको सुभाव जीवण रै अन्दरूणी स्वास्थ्य रो भयावणो वैरी हुव।'

दादी बोली—'घणा भणा गुणार म्हा न नौकरी कोनी कराणी। माठर थोडो ही बणाणो है! यो तो सेठ बणसी अर माठर जिसा मिनख इयै रै लार फिरसी।"

कदे कदी लधडो माल खावण वेगी खुदत्यार हो जावतो अर हाथा जीम लेंवतो। कवतो—"हर्मै जुबान वणना है नी? दिसावर री दुकाना म्हारै ही आमनै ऊभी चाल। बापूजी तो माचा पकडग्या, पण म्है खा पीयर मोटो हो जावू अर वेगो सो बठै जाय र धूवा उपाड दस्यू। मुनीमडा गुमास्तिया री रटका कढा नाख सू!" इयै बात सू घर वाळा घणा राजी हुया करता। दादी खोळ मे बैठावती थकी थुथकारा नाखती-सूण गठडी बाधती तथा सिरमार्थ हाथ फेरती। एक बार अडा खगदा हुयो क लधडा एक नाजतै छार लार घर सू बार कढग्यो। मा दादी नारै भाज भीर हूई। बाप हाफ्ना लकडी र ठेगै लाधडा दे नाल्यो। वो धुनिया नपाड आगली गळी मे छारा रो खेल देखतो लाध्यो। मादरा रै जी म जी आयो। वो ही तो घणो राजी हुयो। उवो ग्ग स्याड लाटेसर पाछा अेकला घरा नी जा सक्यो। उवो पाळोकड गग्य हाट नटकाय र आरया फाड न्क्या। भळे ता वो वारली बाता घरा वैठा ही सुण दग लिया करता पण धूजता डरता बार कद नी कढनो! दूजा रा टाबर तरमता, पण उवै लदपै रै अग्गाण पग्गाथ भजा मिस्टान पन्या रळना-रूळना क वार र

लाखा रो लेखो ? दूसरा टाबरा नैं माटी रा ही नी मिलता पण उवैं वगा सोनैं चादी रा रम्मतिया पगा म अडता गडता जद मा दादी मेळा करती मेलती। वो लाडेसर उलाडो उवा रैं हाथ सू खोस'र वगा दिया करतो। सूवैं मैंना रो पीजरा ना हाथा उठाया फिरता। वो ऊन नहीं, घण लाड काड सू बोछरडो बग्घू बणग्यो। होळी दिवाळी उवैरी धरम बहणा मिलण आवती, नौ-नौ ताळ कूदण लाग जावता। उवा नैं चूरी री थली खोल'र धिगाणैं खुलावतो। मा देवारी नाक निवाण हाथ जाडती, गैणा सिराणैं मेलती अर एक आगळी टाळ र ओट राखती जीमती। गुवाड में लोटी ढाळती कुत्ता रैं रोटी राळती अर घरा जायाडैं मिनख रा पग चुग'र लूण मिलाती थकी चूल म बाळती ही। मढैं म राग री चिमटी, लिलाड ऊपर बभूती रो टीका, पितर रैं नाडैं धाक दिराय'र लघडैं रैं मगरा रोजी नैं थापी दिया करती ही। उवा आखा दिखाळणना, रात जगावणो अर भोग मतपाई जैंडा टूणा टसमण तथा माक्ळा टटपज पूरा करती। दादी पोत मायैं हर हमेस टक्को पइसो फेर'र आरा रैं छारा नैं बाटती। इस तरा लधडैं री खैर मनाईजती।

एक दिन लाडेम्र लधडैं चादी री वणी एक थोयी चिटकाली चुपकै स आपरी कुम्हारी मैण न सूप दी ही अर कै दिया—"बताव नहीं!" बात रो ठा लाग्यो जद घर रा सग मडचूसिया डाढा राजी हुया। बहनडी बापडी उवा चिडी पाछी दवण लागी घर वाळा सफा नाटग्या। लघडैं हसत मुळकत भाटैं मायैं पटक'र टुक्डा कर दिया अर बार फरणा दिया। पर घरवाळा उवैं नैं जाबक नी हुटकार सक्या। वा दादी रैं घणा हज, उव नैं वा रोज रिप्पड देवती अर घर म सोनैं चादी रीवूरेडी सिलावा रो बेरो वर्तावती रवती।

दादी मरगी, ढाल ढलगी। बाप घटता पूरा कर हो। उवै रैं ब्याह रो जमैवार पुराणियैं मनीम रो बेटो वण्या। नदी कराडैं रूख ज्यू बाप लामा हुया अर लधडैं रैं ब्याह रा तेटो आया। उवो पळगाड नाव सुणता ही उछळ पडयो। लोगा री घोडी अर हथणी गाईजती आपरैं वारणैं आग क'र कढती उवैं घणी विरिया सुणी गुणी। उवो मा रा घणो लाडेमर अलौल लुवारो वहडखो टोघड ब्याह रैं कोड म सागीडो ल्हाढ वणग्यो। पर बनडो

दवै। उवा देवी खफसेड कुशळ लीपै-पोप, कारी कुटकी करावं अर देवता
धम जिसडो घर उघाड देवै।

'सुहाग रास' मरदानी महिला, थूळ मथूळ घम्माघोडी कागज हाथ
प्रसू करै अर सामा वाल्या धणी रै थप्पड थरका देवै। नाजर नाव रै रज-
वान, घर री आखो जटजर पीवर ले वडै। लधडा लार आपरै सागी घर
अक्लो रवै भूखो भटक फिरै क्यारी ल्याव अर काई वम्न वणावै ? हाथ
बटा वैठो। घराडियो, की जाण न बूझै, डरू फरू हुयाडो डबकै-टाल।
काईकर? टावर पणाळी लाडवाळी आदत्त दुसमण वण र फाडा घालै भाळ
रै यौली कुण छोडै ? छेकड बैंक री जमा पूजी रकम रा हिसाब अर
परदस री दुकाना रो काम, सासराळा साळा तथा साढू मिल र साभ।
सूत सार, चूनो चाढै, केठा कीरा पग वाढै ? किण रा बाधै ? सरब
तेराताळा, मण र नाव आखा लुगो तुगो ले लग। घर पकड लेवै, सासरै
रैवणो चावै, पण पीवरियाळा लारा छाडै नही। लोगा म लधडै रा भाळा-
पणो, ढील अर मूल चौडै आ ज्यावै। सुहाग रासै उळझा पडग्यो।

मूळी री गूग

मडी ! मळै री भीड ! भात भतीली दुकाना लाग रयी। चौवटै मे बा ओपरी छिया जिया ऊभी। घणी अचपळी हुस खिलै, डोळा काढ, आतरै ऊभा माणसा सू छाटा लेव। पूछै जकानै लटकै सू डकरावै। क्व— जा रे ! रस्तो नाप ! थारै जिसी केई पाबूटी पडी देखी है।'

फीकी लाली, तीखो सुरमा तथा पालम प्या'र मूढै टीकी-ाळिया चेप्याटा हा। उजास सू लिलाड आपता टघाड खाव हा। पला र लायाडै वधिया पाउडर सू थोवडा थथड र चाखा रुप मजा आई। सादी साडी ओढी मोढा नकली बाळ राळया अर हुरियै •लाउज री मराड म गूजरी पण फढो। मोटै चौकाळ सोन री चूप चढायली, जके क्दई मूढा दिखाळी री सासू सू मिलियोडी ही। मात्था जडो इढूणी माथै चीक्णी नागळचोडी धडक्ली अर हुवा हालती उवा लामी लटछ लुगाई भरिय बाजारा हाट-माठ जा जमी। गैल वगता चौक ना हुया, टावर गुधाया तथा मडी रा मिनख उवक'र खडा हुग्या। डोकरया डरी छाकरया चिमकी अर पलदार खडा ही तिडकी जग्या। लोग लपया, हाका हुया, तुठ माचग्या अर चोट फारम ताई खबर जा लघी। बाना रा गडाछा गूजरी री गप्पा, लाग बाग रीझग्या, निताक नी कर मञ्ञा। बतळावण करै दूध रा भाव बाधौ। उवा कव—' दानुवा वखता रो टमाटेम पुगा देमू अर सतवाडै रै हिसाब मारू पइसा लैसू। 'दुरमख री दाझ,' घन पसवा समत कैनाळ री क्राड घास पाणी सारू चौडै चौगान बैठा हा। काळ जाळ सू झुलसी-ज्योडा काढ रोटी राजी हा। सात दिना सू वेसी री उधार पासावा

नही।' पण लोकी लबार, उनैं सुनैं पडताळ पूरी करणी चाव। काई कै मूनणी बडचोडी है, काई क्वै भाड अर कोई रहठी बतावैं है।'

सैनून सारनी होटल सू कढ र हाफीज्यो हेमो बाजो आयो रर आख मुचाय र गूजरी नै तकाई। ओळखी, बोनती सुणी वकारो कढचा। "अरे आ तो देवैं नायाळी बीचेटडी छारी मूळकी गैली मर! कठ सू चाल'र आई बठी है? सुणा, माया सराब हुग्यो, जका पुन वग्याडी वावळवडा करती फिरै। परणाई पत्ताई दो टाबरा री मा, कीरैं सार? कमाद मठी, सात भारा लाग। पण सासराळा सैं मरग्या के? है ही गईवाळ! वार क्यू कढण दवै? आपणा फरज घरा ले चाला। बचारी र वन री वात थोडी है। जुवाईड नै बला र समभा देस्या। परणीज्यो है ता इरा बन्दोबस्त राख! म्हानैं भळे हेठा क्यू न्खिाळ? बानूगरी छाट? परण्याडी लुगाई तो गावा गाव, ठिट करती फिरै। का माईता नै बना'र सूप दम्या।" डोकरै हाथ कान न माथै सू मघली उतारी अर बाल्या— 'मूळकी घरा चाल! त नै तरी चाची बुलावैं!" गूजरी सैंथरी बथरी ऊभी रयी। बचपण रो नाजो सुण्या, असली चेतै आई। टाकै र काक रै साग हायली। ठीक ठिकाण जा बठी।

गूगा हुयो मिनख खराब मायाळा बाजैं साफ मनरो जर आतमा ग्यानी! वा जैडी साची दिखनी जर शोभती बाता रिगला खळकाव जका सू सुणणिया लाचारी रग रग राजी हो ज्यावैं। भोळो गूगा ब्रह्मग्यानी आपरै अपराधा रा हुकारा टाबरा नै दरावैं। पण उव नै काई फोटी माडी बात री उळटी सीख देवै तो मानैं नही तथा खुलजा व तो आप बीती सुणा वोकरै!

मूळकी मन मन मुळकी, पण काकी आग बूक पडी। उवा कैवणै लागी "काकी मरळा जामी तीन गावा म तडा साय'रआयाजददेवाराम नाव सू एक कोभ कस्व मे अस्पताळ रै कम्पाउन्डर री रोटी सकतो। सफाई र आखै खोरमैं माफक दस रो महीणो पावता। जूनैं वखत री जाण बावळिय र जाळ सरकारी अस्पताल रै पाण राज री नौकरी वणगी। कुरप-कायद ठाढियो ठटग्यो। म्हे म्हार बाप नैं झाडै बुहार तथा टाव-ठोकर, वासण भाडा धावण-माजण म पूरो स्हारो देंवती। पण टाली ऊभी

गळी बगणिया सूं आठ भठवारे ही तर नेवती। मदरगै जावणिया टावरा री बूत करा दया करती। भणणिया छोरा कर चूकना ? उय मन दानती दानती करता थका विहावता राज आवता। म्हारा दांत माटा माटामा दूजा नैं हाटा रैं पगवाड लटकता दीमता। पण मांटा निरळज मिनार इसड़ा हा क आपन एक मा ब री स्याहजादी समझता। नाग बाग, मूठकी नाव म वनठावता, चोर री चालता। बारला गावा रा लाग अेमार बमार नैं मपावानैं लावता था मू मनैं बिना माग टुकड़ा टगा मिल जाता। चटाकडी जवान टुगी, क्ूई रात बगनी दिरनी ता लेवती। पं रण बगी बगा पूर पलनो ही माग-नाग नावनी। म्हारी मा ता बाप सू अलेदै गावडै रवती। आपरैं ब्याहू रैं आठ बरम पछ उर्वं बिनी बूं वडे रैं सू सुणनिया क 'मूठकी रै बाप दामी अर हीण ओलाद, आपरैं बाप दादे रैं गाव म हाडा सू कूटीज'र बढघोनो है छाट छिटकाया। वा मान बरस री टाबरी न मन कघाळ चढाम र जिल र काठै पाणी, मर आवड़या। इयकारया सू उघा नाग्या सूवा पत्या अर चाम वास जमायनी। म्हैं आवरैं ऊनरगी हाडे गाड डिनाळ पण घटिया अरकल जुवानी आई। बगना बिगडावता थया बन्मामा म्हार डील उाळा गटाया। जिनी बमीणी हुरकता सू म्हैं उबळ आई। मरदानी बाछरडी बाग, धपावू गाळा ठोकती। घण सू राटा मगडा खाटघाअरउव बारण एक दा मन मेलुवा सू मुलाकात रणा बणी पडी। पण नारी पण री रुवाळी, जाण नीं सकी क 'लुगाई जातरी सुभावी भान मरदा सू जुरा हव। वा उणा री बरोबरी म हरगज नीं आ सकना। मादियार वलरा हो उलाडपणा करा, काइ बध घट हुण कव ? पण सुघा लुगाई वापडी अेरली खडी किणी आपना रैं समैं रौं दर्दे सू बाल लेवैं ता देखणिया चट मखौल करणी मन कर देव तथा तुरत छत रो पनवा कस भनाव" मन अैडी घणी नाव जादी उपाधी बकसीज्याडी है। म्हैं खातर कवत ही कहीजी— राडनी रा छारा विगडै अर राडिय री छोरी।' वाह रे म्हारा आध विमवान आळा, भेन भरिया दश लखदाद झूठमूठ लुगाई जात न बद बतावणिया मिनख ही अठैं चाखा गिणीज अर थारी उनळी कूख सू उपजोडी मा मैणा न मूड तारयवाणैं ज्यू जोदन।'

काकी साचैं—'इणैं मळकी मन री साफ है। लुकावो छिपावो जावक

नी राखै । उवा बीती बाता माची माची बतावै ।

"क वाण जोगडो म्हारा सुभाव ही टाबरपणै मे सळचा नी रयो । सामी बापरो ही कैणो ता कदी मा यो नहीं। तादिस्ट उठावू बिसन बणालियो । कम्पाउन्डर रै घर सू चारी री टक्को पइसो पच्यो अर माटा डाक्टा ताणी हाथ वध्यो खच्या । पी एम आ सा ब सफाखानै री निगराणी आया, रात नै सूता री हाथ सू घडी खोल उचका लाई । बै अठीनै उठीनै दख हारचा, माटा अफसर की रो नाव लेंवता ! ठानी डटा सा घडा मूनो हाथ लिया रेल चढग्या । लार सू म्है फटकार घटी रा फार धडा कर नाख्या ।

एक दिन इन्चाज रै क्वाटर मू टावरा रा कपडा काढ लाई । कपा उन्डर सा'ब मनोरलाल लि ही लवडधक्क । कयो—'मूळवी एक घर ता डाक्ण ही छोडया करै । थ्यारा चारी अर पीरा दगा देणा कद सू माख्या ? और ता हुई सो सग गई करी, पण पी एम ओ सा'ब गी घडी उडा जेब म धरी । तू छारी म्हारी निजरा सू सफा गई परो ! बेटी रो जमारो घणा लाजै । उवै नै लाणत लाग बाबळी ! म्ह तो थार बाप लार टाळो कराग्रा, उव रो उछाव बधावा । पण हीणपण री बाता पुखना चौडै आवै । उव नै कै दियो—'देवा थारो काई उलातर घर सोधलै, राज री कुवाटर खाली कर दे भाया ।'

बाप, बापडो म्हार परवाडा रै नित सवा ओळमा सू मागीडा आखतीजग्यो । मनै फेरा देवण री फिराक म फिरणै लाग्या । उणा री भाजा न्हामड देख न मनोरलाल थोडा मोळा पडग्या, थमग्या । पण म्हारी सूगली बाता रो जिकरो काफी वधग्यो ।

एक दिन जात बिरादरी आळो एक कनलो आदमी मनै दखण न इस्पताळ आ टकया । ठा लाग्यो कै बाबलियो म्हारै ब्याह री बात करै ।

दोनू धणी एक धधै, सगा वणनिया रा पक्षा रळ मिळग्या । घरा आयोडा रो नाव रामूजी, उवा म्हरै हाथ सामो रुपिया खापरा झलाया चायो । म्हैं फट खास'र खट आन'रै जा ऊभी ! बचारै देवणिय री जाडा चिपगी । बाप बतामा—'थोडी बोछरडी है ।' रामूजी कयो—"थोडा दात ही मोटा है ?"

उरतो सो बाप बोल्या—"चौकाळै रा च्यार ऊपरला दांत, थोड़ा'र थोडा बड़ा है।'

उवा क्यो— 'किसा गाव थारा बसै ? रूप तो वेमाता रो दियोड़ो है।'

बाप गिटगिटायो— ब्याह ता इयै आवती पीपळ पुन्यू रो ही राखा, अपूछ मावो है। टावर मोटा है, म्हार चौकीदारी आळा सासा घत।'

रामूजी बोल्या—"थारी बाई रो काइ नाव है ? '

बापू बतायो— 'मूळको ? म्है सुण्यो, सिर म डाग री सी लागी।

रामूजी क्यो —"म्हारै डावडै रा नाव डेडरियो है।' दानुवा री वैरनी वरडो वालो मिलाण खाया, म्हारै जी मे जी आयो।

नैडा मावा घर री साफ सफाई पळाई। वाप मनै वतलाइ। "मूळी !

म्है काडाई वाली—"हा बापू।"

'अर छोरी ! आज तेरी मा आवैली। साथै भाई बहन ही हासी। ब्याह री खुसी चौगणी वध ज्यासी रीत नग बतावण रा फाडा नी रैवै।

"मा' म्हे घण अचूमै सू बोली—' बापू थानै ही दरया जाण्या क मरे बापू मनै पाळ पोस'र मोटी करी अर थोडा आकडा ही सिखा दिया है।'

नही बटी काल तेरी मा र आवण रो सागू समाचार आया है। उवै नै तरै ब्याह रा ठा पड्या अर भेद भावी रीस रास न छोड र चालगी है। दपारै री रल माथै साम आवण का लिख्यो है। म्है छुट्टी माथ हू। मनारलालजी रै जरियै जास्या अर ब्याह रा समान ही उवा र भरास भेळो करस्या। दिन कठ ?

ब्याह हुया, सासरै आइ। लाड काड रा थाथा थेड, गाट उपाड चाढ दिया। सुसरै ही नही, दाद सुसर तांई रा पग पकडाई हुई। सिक्का सू छल्याडी कांथळी म हाथ घलाया। हाम्बाळा पइसा गोटिया रै सवाय रुपिय रो हानो नी हो। बाही वार आळी जजमानी चाकरी घूमनी निजर चढी। व आपर बाप दाद रा गाव छोड र गुवाडचा रो काम करण वास्त उत्तरादनै आयाडा हा। पण मोटयार च्यार आकडा सीरयाड्यो मिल्यो जको गुमास्तागिरी नै पग फावो। म्है चारा री चाटी मालगाडी अेकरम

में ही जाणगी के ई घर मे तो आ इत्ती जीवती जड है, पकड़'र जरू भान लेणी चायै।

सोपो सणक-मणक हुयो, सासू मन लारलै छपरियै म सुत्राणगी। दड़ा छट सुल्ली फिरयाडी म्हें राडधट मे आयगी। पण थोडी ताळ म पति देव बरोबर आ विराज्या। बोल्या—'सासरा है। नूवा नातेला लागा सू आछो प्यार-प्रेम जाडणो ही जस रो कारण वणै। पण घणी लाज ही की कार री नीं हुवै। म्हैं झट समझगी—'अर या तो लपरै लखणा लाडो, मुरगी म्हारी फस जासी। सुख अर मौज मजा' पैलडो काम आयणो मुगतो रो करणो है खुल्ला, बा अेक्ला रेवणै रो जावा जचावणा है। बतळाई, मुड'र अपूठी बठगी। बोली—"छपरिया म नींद कौन आव ? म्हैं ता कमरा मे ही बिना पर्दै कदी नीं सूती। इयै घर म अठै क्या रया जासी?"

बोल्या—"घर कीभ? घर लारला गाव म रैग्या। अठै तो सिर घमावण नै दो टापरी जमीदार सू माग र लियाडी है। म्हारै मार्थे मकान दखजा' म्हन म्हारै अचूक निसाणै सू सतोप हुया। सुण्या—मरद कित्ता चाखा हुवै ? सगला सू लड झगडै ना, मना करै, पण लुगाई नकर कट्ठ रै आग ही नाड नीची कर लवै। करै नी जूझ सकै। साची कूडी सुण्या जाव, बुरकै ही नही। बिलडी बण्या रैवै।

बोल्यो—"हुम्मक नौकरी जावतो थनै पीरै सू सीधी सार्थे लेजास अर बठ आपा कम्पनी रो क्वारटर लेय'र रै लेस्या। घर आळा म्हलीण अठै किसा काम कर र ठारै? उणा सगळा नै पाछा गाव तगड देस्यू।'

म्हार सायबजी एक घर रा दो घर करचा, सार्थे सगळा रा मन ही चीर फाड राळचा। माईला नै भरमाय'र गाव कानी काढ दिया। म्हारो नाव फेर बदळ'र मेम राख लियो। बापू री सीख लेवा देवा पळाईज्या। म्हारो भाग जाग्यो, राजस करणै लागी। सागीडी बूझ बूझाकडी बणगी।

घणी ही म्हारो कोरा सरोढ ही नही, साग बचकूकर छटल है। उवै र कैवणै सू आखा पखार जापरी जलमभोम रै गाव सावळ सरियै गया परो। रुपिय पडसै री काठ-पील मे अंकर तो वडालै साझ आळी जमीन

दोरी-मोरी उणा नै ही बेच नै चेरा साधै काम चलायो। कई साल पडचा भरचा। मरता-पडता राढू सू जेवडो घसता रया। पण अंस भळे सुसरो म्हासनै मागण आ वैठो। जद म्हारळै बाप नै ले साथ'र थारळो जुवाई गया उवा खनै गाव अर और पइमा लेवणियै लोभ मे उवा वग्सा री बेचेडी सागी जगा जमी रो पाछो धणी आप वण बठो। म्हैं ही भेळो ही। जमी वाळा जोर जचायो जद माया मू आया ठोक्या गाळया रा भूकण, घर रा गिण्या न पारका। सारा म्हारै सू डरता परका करता भाज वहीर हुया। ।'

ववजै वेगी वठै ही थोडा काकरा अर इट लाधग्या। म्हा, था म्हानै लाय'र चेजा पळा लियो। वडै भळे पाल्या जद बायेडै रै अलावा म्हारा बाप राजतेज ले चढघो। लोगा अचूमै सू कया—"थूक्योडो चाट लियो।"

काकी, वखाण बोचाळै ही मूळकी री बात बोट'र बोली—"मूळी हुम्मै घणा दळिया न दळ। म्हारै सू काई छानो कानी। थाधी लीद अर जादा गुग ववेरण सू ही थारो दिमाग खराब हुयो है।" सागी नावो सुण'र उवा की सहूर आई, जजमी।

बोली—"काको मेरो बाप ही स्यानियो है। उवो ही ओजू संग माणसा आगै मूळको नाव सू वतळावै। काई हवै दात वडा है तो, म्हैं तो मैम माफक साजबाज, मूढा उघाडे, गुत्ते गुदा वाघे मैडम डौल डौल हू। थारै पगे पड़—कालोसा नै कै परा'र म्हार बाप मू मूळकी नाव वतळावणा छोडाय दे। पछै देख म्हारो दिमाग किसोक हवै। रीस्ट बळू, लडाय राजी रैवू। लोगा मू लगा'र विगाड दी। मनै थारी जूवाइ जाणै, हाथा माथै धुकाव अर मेम सा'व-मेम सा'व कवतै रो जी सूकै! जद मूळकी नाव कैयाडो क्या सदै? सागी बाप रा ही मूढा ताड नाखू।"

अंग्रेजी अनुस्ठान

बाल रै एक खूणै म बैठी डाकरी आपरै बटै री अंग्रेजी पढाइ रो असर चितारै र कळपै—"की लूण लक्खण कोनी, पाधरो टोघड है। भण्यो है पण गुण्यो नहीं। इत्तो मोटो लडधो हुग्यो, कुतडी भेळो खाव। बिस्कुट अर चाय, सागै बटावै। पालाजद कवै—'आ तो अंग्रेजी जात री कुत्ती है। लाट वेवल रै कुत्तै री सागण पड पोती लम्मी नाव री कुतटी है। रिश्वत रा दा हजार बाळ्या जद हाथ लागी है। हजार नफै रा देवण खातर नोरा भळे घणा काढ। हेली री इज्जत बधारण वाळी है। वडा बडा डाक्टर अर जज घेरा घालै। दखण आव अर लेवण ललचावै। पण म्हान इय नै बेच र किसी भोळी लेवणी है। म्हारै तो या बडी मानीत है। लामी आरबळ अर मोटी मत्ता लम्मी रै ही प्रताप सू हामी। भण्या गुण्या रा म्हारा कुत्ता कुत्ती इप्ट देव हुवै।' सगाई पताई रो बवा ता सुण ही कोयनी कवै—'म्हारै तो क्लब ही गिरस्थ है। ब्याह रो काई वाळा? अंग्रेजी सस्करती में नित नवा ब्याह है।' अळाय-बळाय खावै, पट-बूट पर है अर बडिज्यो वग।" मोवै बैठी मायड आज री भणाई नै बिसरावै अर मवर नै स्याणो करण वेगी भरूजी नै मायो नाव।

मवर आपरा नाव हाफे ही फार लीना। बो आपनै विलियम बतावै अर सबू मोटो गिणावै। आवती जवानी, जावती अक्कल अर आज री ऊधा भणाई उव नै सागीडो आंधो बणा राख्यो है। बो आपरी सुहागण भागण मा न ही राड कै नाखै। बाप र बतळाया बटका भरै। बठ'र पैसाब करणा ता अळगी रैया, गडक्डी न गोदी लिया, खडो ही खल्ला वैरया खावै।

"सूट रो गाठियो अर नाव पसारी ।" आठवीं दसवीं ताणी ए बी सी डी रा केई आखडा मीख र वडा अलादो अर उडग्या वगडा वण रहया है। कुनडी माथै दोलडा मिनख राखै । हुवाव घुत्राव नहीं ता नौकरा रा फून काढ दय भूवा अर दादी ताणी भींठ हाग्वै। उवा र जाया, भाया अर काका नै ही कानी छोड । घर म माखळा जणा है, पण इर्यं मू डरता स रा जीव जाव। माऊ उवै न वनन मू राक्णा चाया विलियम उळटा गुरराया— 'देखा मम्मी मैं जा काई काम करना हूं उसम तेरा डिसीजन बिल्कुल नही चाहना। माता पिता न अपने सुतानद क लिए पैदा कर दिया । हम भी उसक लिए स्वतन्त्र ह मना करन नमी कौन-मी बात है ? '

आज आठ बज्या रात न विनियम वनब र सग साथ्या साथ अंग्रेजी डास करसी। घणा मिनख लुगाई मिल'र खासी पीमी अर खुल्ला हुन बालसी । जक वेगी विलियम रा मन दिनूग सू दबक्या कूद । उव मांग्या नै आपरी सारी बाता बना दी है। क्यू क किमारपणा कढता थका कुलछ पण माक्ळा देवता जावै नी ।

बाप समझणगर मिनख। चोटी जनेऊ धार। पूजा पाठ करै अर धरमात्मा वाजै । मा हाथा पावै खाव, धोव माज अर करडी उछतार्ई राखै। वटे रा लाड-काड कर । एक ही है। एक आख रो के मींच अर काइ उगाडै । वागा र मवरै रो अणकिया कर बुण ? पण अकूरडी माथै चढणा चाव नही। घरा माक्ळी मान मत्ता, पूत गिदी रो गदेड वण । गुवाड र पाडोमी अर हाळी वाळदया रै वैणै म हालै। मा एकलियो हार (सिंघ) बणावै चावै, पण पून गादन्त रा खाज काढता लापरवा मौज कर।

मिन्या विलियम माडा पाच बज्या विना खाया ही नौकर मू स्कटर बार कढा लेव। उव नै आज अमीरी फतमन रा डंवा आवै। कदेइ साल पैला कनन वगन रै कलचर प्रोफेसर सार्थे बो अंग्रेजी डास म एकर स गधोडो हा। लाग र लुगाया रा आपसी मुह मिल धब्बा, गळ बाथ घालेडी मुवाळी अर खाटा गिदरा मार्थे माथ गुटना पडना विय नै धोखी तर्गे चेत हा । हमैं रंळ्युगी जवानी रै पलडै पगोथियै खानी सरकतो स्कूटर रै हैंडल न हाथ घालै—"गुड इवनिंग, मम्मी ।

"जीवतो र बेटा !"

फट्टण फट्टण फट फट करतो फटफटियो तुरत उडतो थको अग्रजी डेरा र ओळै लुक जावै। विलियम नै डाम रो कोड लागरियो है। मा वधा वधाओ मिध करा जिमा सब्द कैय कर, ही जठै ही बैठ जाव। उण री कैयाडी सीख सरगम ताई चालै नही।

"यू आर नाट वार्किग फास्ट बिऽलियमऽऽ !" एक मैंडी जवान लुगाई री उवाज आई। विलियम मे थोडो चेतो वापरयो। पग भारू हारया, धाजा सू लारी चाला। नौसीखीयो विलियम सरमावै घणो हा। धन, जोबन अर ठावरी मिल्या पछै विलियम जावक बावळो हाग्यो।

नस मे चूच, पसवाडै गुडग्यो! फुरणी बाजी, चेतो मुडग्या। आयूणो सम्यता आभा, सूपनै लो लागी- मरी लम्मी भूखी मर रही है। मैं अब इस घर म नही रहूगा। सजे सजाय मजे क्लब के सिवाय कहा हैं! घर म मान क गहने और रुपये हैं, वे सारे मेरे हैं। खरचूगा, खाऊगा, मुझे मना करन वाला कौन है? डैडी आल्डमैन, मार्केटिंग क्या जाने? इसीलिए स्कूल छोडकर क्रिश्चयन कालेज मे आया हू। पढ़ना है न लिखना, फक्त मौज कर लेनी है। मम्मी मैंनी वुढिया, जल्दी से जल्दी मरने वाली है। रास्ता साफ हो जायेगा। नौकरा का हटर मार मारकर सीधे कर दूगा। मेरी प्यारी लम्मी प्यासी मर रही है।'

सुभाखा हुयो, गडकडा आया, क्लब म रात रा एँठा पडया वासण रडमडाया। माग्या उडाई, मूडो चाटया, वाको नीचिज्या विलियम रो फाटया। गास्त रा चिवळयोडा पडया टुकडा लेवण लट्टा जूटया जद उवै रै गाला न माछरा चूटया। फट! पडापड थप्पड खावना थका उठ बैठया हुया। क्लब रा आखा मिनख उठ उठ र आपर घरा जा रया हा। सलर गिणिया सा बडता उडता खल्ला खायेडा सा घुघी निजर आ रया हा। गडका आपस री मे करा धोरका, विलियम न सास आया जोर का। बा सपन में रीस बळतो आंख मसळता सूका होटा सू बरडायो—"मेरी लम्मी! अम्मी !"

विलियम मारै जीव री जडी, गुळ री लडी रो ओनतो सुमेर, आपनै घणा स्याणो मानै। पण सफा सरळगठ, आडू अर ठोठ? आदम्यां सू

आगणो भरयोडो रँवै, वे भाग्या रै हाजरी सू लार कुण जावै पणविलियम रो सुभाव सग थाक्रो बतावै। घर मे वडै जद नाग वाग, एक पग रै ताण ऊभ जावै। पाणी, दूध, चाय, दाळ भात, दही-पापड सारी वस्तुवा त्यार राखै, तो ही विलियम कोई चीज सरावै नही। कोई रो एक दा कवा लेवै अर पाछो मुड जावै। मा नै रोजीना डाट अर हाटल रै खाणै री बडाई छाट। बुतिया नै वन वैठा र छराव अर भळे भीत भान मुळावता वारै जावै। आव जद लम्मी नम्मी करतो ही आवै। पण कुतडी आज आठै-भोठै ही घर मू कढगी। सुतन्तता री सैल म उतावळो हुयाडी लम्मी सामली सडक चढगी। च्यारा कानलै माल सू लदयोडा ट्रका रा हाण वाज्या, गडकडी गूगी वैरी हुगी। बीच म आगी अर चिगयीज'र मरगी। कचूमर कढग्यो। विलियम रो नौकर लम्मी नम्मी करतो लारै भाज'र आया पण सिबदी रो सनाण लाडयोडी सडक पर लिदरडो लाग्या। हाम उडग्या, होलियो मूइजग्यो अर माईत मा मरग्या। खाल काढ लेसी, हाड तोड दसी, डरतै मरत घरा जाय र मा न कियो। सगळा रा मूढा उतर गिया।

मठाठ र मीट म डब्बल रोटी खाइ। होटल सू तिरपत होय र घरा मूढो सिफळिया सा लेय'र बावड्या। रात भर रै थाकेलै सू थिगतो बडयो अर रिडचो-पिडचा सो माचै गुडग्यो। पडता ही घरू मिनखा नै उदास जोया अर विलियम पूछ्यो—'क्या हुआ ?"

' !" कोई नहीं बाल्यो।

भळे गरज र कँया— 'बोलते क्यो नही?'

जद धूजतो सो बाप बोल्यो—"तेरी लम्मी मर गई है।'

विलियम समझग्यो अर हाठो म ही गुणगुणायो—"मम्मी !

वन खडा तमाम मिनख घणा डरया, पण वात भरमा नम्मी मे ही दब गयी। विलियम मम्मी भरणै रै भरोस म राजी खुशी सा रैयो। लागा रो थोडो जी जम्यो। अगाडी मोड'र पाछलै पौर उठ्यो।

सिञ्च्या रो पौर। मराविया रो जोर। हम्मै जाय र डील ज.बक हुळको हुयो है। क्लाळा चढ अर लम्मी नै बुलावै। पण लम्मी बापडी आवै कठ सू ? वा ता कालै ही ट्रक मू किचरीज'र सरगा सिधार गइ।

विलियम लम्मी हाळै नौकर नैं धमकार पूछ्यो—"लम्मी कहां है ?"

नौकर—"उवा तो आपनैं बताई नी—काले ही मोटर नीचैं दब'र मरगी।"

बोल्यो—'मम्मी नहीं ?"

अर डागर ज्यूं अरडायो—"हाय लम्मी एऽ!! मेरी अम्मी एऽ !!"

मा आसू पूछनी माकळा रुपिया धामैं, बाप ढूकता गाळा ठोकैं। पण विलियम रोवतो रैव ही नहीं।

कवै—"फादर मेरी कुतिया मर गई, मैं भी जीवूंगा नहीं। मरना एक बार है।"

समक आधी रा पाडोसी राळो सुण'र भाज्या आया नैं बूज्यो—"आ काई तिगडो है ?" विलियम नैं कुतडी खातर रोवता देख'र घणा हस्या अर बोल्या—"गडक मरग्यो, घर रो ऐंठवाडो (जूठन) गयो। कोई दूजो पाळ लेई! रोवणो भळे क्यारो है ? सग मोहल्लैं री नींद विडार दी। माईत ही मिनखा रा मर जावैं है।"

बोल्या—"माईत मर जाते तो इतना रोना नहीं आता। मम्मी मर जाती काई बात नहीं थी। पर लम्मी बडा धोखा दे गई है।'

भल्लै-मल्लै री चुघरै

लुगाई नगत हैडमास्टर जी डब्बल नहीं, तिरवल चौबल एम० ए०, पण मोती री मा नै पूछ्या बिना पमाव नी अुतरै। म्हारो अेक सगा-साचो जोरू गुलाम, साख पात अर सग घर कामा मे टक्क मण पीसतो फिरै। तीजी म्हारै अेक जलमन्त तथा दिलदार बाई, उवा जीजाजी सू सागीडा हीडा करावै, घूपटा अुडावै। इया सगळा नै क्दे वदे दखण रो काम पडै, जद म्हारो राम ही पप्पुडै पोत री दादी नै जीकार सू बतळावण री जी म करै। पण जब काळै वरस, अेक मिनिस्टर रै घर रो घारो देखण रो म्हारो काम पडग्यो। उवै घर री अधपढी मूढै चढी, नकचडी बीबी आपरै धणी नै बेपरवाह तू ता करती थकी नाक चणा चबावै ही। देखो मिनिस्टर बापडा दूज रै सामणै बीबी रा हुक्म पोख हो अर म्हारी फाटेडी आम्या सू आत्मा री लपटा न सवतो गुणै गोखै हो। म्है मन मन मे ही अेक लाक कैबद रटतो हा के—"गाडी रो पाचरो अर बिगडायल लुगाई रो चाघरो भाग्यो ही चोखो।" मिनिस्टर जीमे क्टै हा अर मनै बतावण चावो बीबी मू आपने अळग तथा अपरोखो। पण म्हैं चोघो, चारा रो चादयो पैल्या सू ही जाणै पिछाण हो क मिनिस्टर री श्रीमती—घर लिछमी री या, स्याणी पुराणी सदा री वनळ है। दूबळे मरद री बीवी नै दख-सुण र म्हारो मन फाटग्यो। लुगाया रै नेह सू सफा ह्ठग्यो। पप्पुड री दादी रा इमा भाग कठै हा के उवा थकारै सू बतळाई जावै।

आज री राजनीति मे मिनखपण (मानवता) रो चुणाव वोटा मू किया जाव। जको मडाणी जिसी भोळी जन सम्कृति सारू अूधा फळाप।

नै अेक साडी री खरीद स, स रैवाला सदीव खातर खरीद राखै। घर री वात, माण अपमाण कुण देखै ? आपरै इलाकै मे तो भलजी, सिंघ री खाल ओट र भीसरै।

हम्मैं वाप अर बटै री भली मूडी छत्तीसी-सेवा लाक नै सामी दीखवा लागी। वैनडी सरळ सीधी अर भलाई भरी! दूजी दोरी, दगबाज, कुबधकारी! मल्ना अणपढ वूढो, पुखता पुरख जनता रो खुद मनो हिमा यती। भण्यो-गुण्या भरलो जम्मवारी–अजाण, मूढ लाभी, लाकी नै चक्मै चूघावणिया, जकै रै काम्है कामा वडा उपन्याम लिखो जा सकै! इकात्तरै रै चुणाव म सागीडा गाघा अमूनग्या। काम कर'र ता पन्दर वरसा मे कां ठारया कोनी, कारा लुगाई रै चेला न पाळचा पास्या। जनता भलडै नै हा जिसो जाण लियो। अपरग्रेड मे जावणै वेगी घर घुसिय घणा ही तरळा हाफळा लिया, पण ताव जाबक खाई नही। जद पाछी अठ ही ढोल मे पोल बजावणी पळाई। नूवा च्यार चुनिदा उम्मीदवारा रै साथ मच्योडा काघो मिला'र खडो हुचा अर पुराणो पापी वाज्यो। ईजियो तेली, नारगियो ढाढी, पन्नियो खाती, डालियो डाकोन अर सनियो तेवग, सग जणा मरवरा म जुटया। दाळ माठ रा टोक्णा तथा टोलडा माटा गोवा चन्ना दिया। खरच खाया अर पारटी रा नारा लगाया। लामा धोळा चाळा पैर र बाटा खालर टाबर लेवण हाळा सा रूप ओपा मे चढग्या। गावो गाव माटा नेतावा रै गुणा रा गीत गाया, अर पारटी रा काम वताया। गरीबा न पाच वरसा वगी भळै गाडा लागग्या। गाळा इलाको पीदै बठग्यो। भलजी जीतग्यो, आग रो आखरी हबको ग्यो।

वा लागी, बाप नै ठा लागी, रात कद गई मानूम ही नी पडी। डाकरो वगो मो अुठ'र हा धा लियो। दूध सा बाळा रै साथ कुडतै अर सार्फ रा रग, अेक मक मिला लिया। न्निगै सारै गाव म खुसी रा वाळ खिरता मीठा। गोगा सू पना पाडया के—' भल्लू नै आज बधाई दी जाणी अर इलाकै भर रा मौजीज आदमी अुवै रै गळ नोटा री माळा घालसी। आथणगै जीमण जनमै री वेळा मिनखा रा मिलणा मेळा है। बापी आम्याग फ्ळत खेत रा आणन्द अुमड आया। गडी गटडी हाथ वसू की

अर सैर री सुआरी रै आटियै जा जम्यो। "मेरो नेटो जीतग्या, वन्‍डारै क टाल वाजै ?" बाप री छाती छावड हुगी। टिगस भना'र घर कानला मैलो लियो। आग बगन म हरचद दवारा लाग रया। आवना चावला हुवा अर हाथ मिलाइजा। "राम रामस्या ! राम रामम्या ! दिन थाडो है जीमा।"

कोलोमीटर री वास लिया वगल पूच्यो अर जीपा री भीड न चीर र माय नै वडयो। बीजली री सळपळाट तथा छाटै वाग रै फूला री मैं कार सू मलजी रा मन बासा कूदना लाग्यो। बिछायन हो री, कुरस्या गी कतार जळगै ताणी जोरी। रग विरगा फुवारा र फोटू मिनखा रै मलै जोग फवना। काजू किणकी रै भेळ खुल्ला सीज्या घटिया चावल खोटिय रा पुडी पराठा, साग दाळ अर छोटियै केळा री छनेडी पलटा मेजा माथै सहरी मैंमाना री दिखावटी मनवार कराव ही। गव भरी फूलेटी नामा मे सुगध चढी अर मनजी रै मूढै री सळा कढी। थकेडै भूख जुमाव म खावणै रै चाव खोयोडै डाकरै मूघारै भट पळमे सू पग-घर म सरकाया। गबकै'र, सामण मम (भल्ल री भू) छाती आगी। वडीफट ! भाल पूचिया र पिछाक्ड घीम लेयगी अर गाया री ग्हार मे लारनै बैठाण आई। डैग हुक्को बक्को हुग्यो। बोली 'सुणो ! आगण अबार पारटी री चीजा चालै, लार सू कोई कुत्ता बिल्ला कूद र नाखळ नी जा वडै। ग्यात राख जा, बाखडा गाय टोघडा न ही चरा ना देई।"

मलजी क्या "तिसो हू, पाणी तो पियू ?"

मम बानी "तिस भूख सू किसा मिनख मरै ? घर मायनै मती आ बडो। मोटा माटा आफिमर अर नेता आ रया है। तन देखर माजना जावला। पाणी रो ढाल भरचो पडचो है। कोई धपावू रो पीयो भलाइ। कुत्ता-कागना ही लिकै चोसै, खुल्ले मूढै रो है।

भूख भाजगी, नाद नाटगी। तापडधिग सुण बोकरी, काना कोम बान्ती रयी। रान भखावटै रो रूप ले लिया। वो कुत्ता काढै हा, पण बौं र पट मे लडता बिलिया नै कण ही घेरचा वतलाया नही ! बटा वहू सग सारा, डोकरै रो की ठा नी ? खेत बीज्यो सीच्यो, रास लाटण

ताणी , क्सिाण लाय लूवा रा फाडा देग्या, खेती नैं हरी नरी जाणी। पण कारा खडका-भडका सुगर अूबरया डबक्यो , बलाण काइ नी आयो। अडीक तो आ लेयर वड्यो के "भल्ला मोटा माटा आफिसर माणसा क्नैं, मनैं मिलावतो थको कै सी—"अ म्हारा बापजा है, जका रै पुण्य पाण म्हे वग्सा सू जीततो थको माण मायाब खमेन विघान सभा रा मेम्बर बणू। पण भूख तिस रो ही नी पूछ्यो। जे आज इयैं (भल) री मा हुवै तो मनैं जाणै।" मलजी नैं राल री रोडघट म भल्लैं री मा, रैं-रैं'र चेत आई। छेक्ड हिया पछाडी लेय र मचली माथैं पडग्या। चावतो तो अक्न ठोकर क्याडी ताड बावतो।

विचारा रैं व्हालै अुजाळो चितक आयो। मम रा वडका तडका सुणीज्या। अुवा भल्लजी न कै रयी—"बूढियो तो कालै ही आ मरया। म्हैं राल रोक दियौ, नहीं तो मिनसा म मानखो विगाड देता। काई दख लेंवतो तो स्यान रा टक्का बट ज्यावता। इज्जत घूड मे मिल जाती। अुया तो म्हैं सोच राखी गुवाळा क्यक्र बार नैं टिप्पा द आवती। पण मायनैं आया न, क्ण ही पूछ्यो। थ मूडै चढा राग्या है, सुधिया ही गळगोना दय र लारल बारणैं काढो नी।

भल्लजी बाल्यो—"ठा है, यो काम थू ही क्र अर तुरता पुरत लगड। डागडी सू टटा भान जका भळे नी बानड। सूरजनराण नीक्ळै ज मू पली या काम कर'र टटो मुक्रा। लोग बधाई न्वेण भळे आवैला, जी, सारकैं जावलो। वेगी लायर ओलाया। या सू काई छानो है। मनै बतावण री क्द जरत पडै? भूत'र ही पाछा नी भाकैं जिसो ब न्दोबस्त क्र नाख। बाभी रैं डोल। बाप धाप नी है, पलातर रा पाप है।'

डोकरैं रा खापरा सा कानडा खटा हुग्या। रात भर जैर रा गुटका गिटत री आरया तणगी जाण्या— बटा'र बहू अेक ही डान? छाटिया ही लुकग्या। अ सै म्हारैं मू लाजा मर दीसैं? आ बटा वहुवा रैं सुख, म्हैं घनी विरिया भूखा सोया अर सागी मनस्यावा मारी। मुह मायलो काढ र दियो। हाथा पोंतीस र पाळ्या। हुवाया घुवाया। गानी क्घोठा तोडचा चुग जाण म्हारो जावन क्या ढळ्या? रात दिन खोरमैं रायाद। वाया सू वर पाळ्या अर इया न पढा लिखा र मुखी वणाण रा यो फ्तवा लियो।

विपता मे सीज'र राता आख्या काटी जद जाय र बेटा मल्या अर आबरू बणी गाढी। भणाई नैं सोनो चादी, धन पसु अर घर गुवाडी आड हाया बंच'र रोटी रा सासा मोल लिया। कनला गावा माथै भागवानी री धाक हुती, जै नै नीचै नाख'र कगाली री साख ओढी। इया री मावटी मरी जद म्हू बूढो नी हो तीस मू पाछा ही तणै हो। मगळा भायां पर-सम्या दूज ब्याह वेगी जोर देर समभायो, पण अेक नी मानी। लागा री मोटी मोटी बेटचा रैं साथै हुवण वाळै म्हारै मात्र नैं आया गयो करचा। दोलडा बेटा र भा, आख मीच बठचो। काई ठा मौसी कैंडीक होसी ? मल्लै रो मूडा लाल होय'र घर सू कढचो, भल्लै री मेम भाज र पाछी घर म वडी। अठ पोरो भूखो मरतो ओठा गाव ढूक्यो। पावलै रा चिनासा झगडा रेल मे चाब्या।

जगती जुगळी कर, वाता वणाव—"डैण खोडिलो इक्ल खोरिया अर अणखचूण है। करम ठोक भूजाक्डो, वळोक्डो, अक्लो ही राजी रैं। बेटा मिनिस्टर घरा आधा-पीगै, कुत्ता खावैं। आया गया री भीड लागी रव। जोधपुर, बगलो, जैपर काठी, बेटा नेता, सुहणा पाता पानी, बडूवैं रा ठाठ लाग रचा है। पण यो तो ठालो-भूला, ठियै सू ठरका'र खावै जद ही रजै पतीजै। बोदळी जुवार, ठूडिया री कार डाकरा हाथा पो पीस'र घाळियो वसाव।"

वृढियै रो निस्तै है के—मैणतियै जीण मे ही सार है—'गाडा-बळद पगा है ठेसण वाळी जगा लकडचारी टाल चलावणी चाखी रैसी। आ बहू-बेटा रैं भरासै चिणा चाब'र कित्ता दिन काढस्या। करमहीण आळमी र कपटो, अमीर वणै। फोकटिया नेना, काम सू नफरत करना भोळा न फाक्री गिटा'र पार का बोटा सू आपरा स्वारथ माजै। किसा सवाकार कर ? कूडी धोखैबाजी आज रा कागजी लाग धणी चलावै। काम सागी बाप रा ही सार नहीं। हाथा काम करैं अर मिनखापो पाळै जका साचा जीणा जाणो।'

दूजै मीण ही चाधरी मल्लाराम रैं मोणती वा पार गावा गाव नाव पा लियो। गाडा अर टरक अूलळचा आव जाव। ढाण्या सू ढूकै सैरा नैं

चाल लक्कड अर ठूढ ठरकै सू बिक। नफै पर नफो, लाखा लेखो, इयो टाल मल्लाराम नै लालकर'र आछ ठेकेदार रै रूप मे पाछो ओळखादी हा देखता देखता चोधरी रो वोपार ठेका देयो। मोत्ळा मिनख इणा री टाल मार्थ हाल हो रया है। वडै ढग री कार करता चोखा गुजारा चलाव। आज मल्लाराम री टाल किसाण मजूरा री मोटी सस्था रा काज सारै। पण भला सिध री बेईमान नतागिरी काग कूड रा कामण रच, साच सू तो,बाप नै ही ठारै नही !

"वाप रै किसी टाल वाजै ? लुगावडी तो घणी विरिचा भल्लै नै ही भूखा सुवाण दवै।' चनरा री चौक्स चुघरै चालै !

।

धरा पुराण

डॉफर काळजा काढै ही, लूरी लबडधबक ले रारया। मिनखा नै खड-खडो चढै हो, रीळ सू दात बाजा। कोई जरूरी काम ही बार वग हो। सहर री सडका माथै छीड पडी। बो गैळा, रोजीनै तावड छिया अर पाळै पून म मागी मडक माथ गोता खावतो फिरतो। गरमी सरदी मे छानी ताण्या, बरसा बीजळी सू सुख दुख माण्या बो पागल, लोगा री हाट-दुकाना आग पगा म पड्यो मिलतो हा। मूढै री माखी उडावतो ब्याय-ब्यॉय बोलता, भूखो मरतो जद कट्टर धरमी लागा रै हाथी सू नाख्योडा भगडा मुजिया चाब खातो। पूनमजी पान वाळै री दुकान खनली प्याऊ री खेळ सू धावा भर'र पाणी पीवतो। पण पुलिस रा आदमी दखतो तो नीचा नै दूड घाल'र जोवता। एक दो साल सू सगळारै सधो मैंधा हुग्यो हो। मुसळमाना आग हाथ ही माड लेंवतो। केई चतर मिया इयै नै देख र आपरै र लिलाडरी भौवा ऊची खेचता थका दीयामी आम्या चोडी उघाड लेवता। अर दूसरा रै सामणै कवता के—"बचारा बावळा फकीर है!"

जासूसी मरयादा सू गूगै रो भैदरो मुरभायोडो हो। उवै रै हिडदै रा जुलमी भाव च'रै माथ ढक्योडा रवता। बो पाळै मे भेळो हुवै हो, पण मन म मोकळा मस्त हो। दस भगती खातर दिल सू जूझ हो। या, हर समाचार आपरै वतन पौचा रयो हो। जकी उवै रै हिडदै री बात नै काई नीं पिछाण सक्यो।

बीकाणी वास, विसवासा रा बाद्ळा, भरोसा रा भडार अर खातरी

रा अठ खुल्ला वाळा है । धरम भीरू देस, धरमात्मा लोग, अल्हड नगर रा अलबेळा जाग, पागल नैं जणो जणो पुडी अचार अर मीठा विचार बाटण न लागग्या । हिन्दवाणी धरा नैं हासी आवै, उवै रा पूत आपरै पगा माथ कुल्हाडी क्यूं बावै ? "अ लाग हजार बरसा सूं अठै रैवै, पण इण धरती रा बफादार नी, अफगानीस्तान जिसै मुळक न आपरो देस कैव । बरसा भारत रो लूण पाणी खाया अर उव नैं फोड फाडर आपरो अळग पाणो बणायो । अळै ही यो हि दवाणी लाक ता इया वगी आपरो दया भाव नी छोड ! ऊजरया सूबरया न ऊंचा ऊंचा आदा बैठावै अर विसलै धरम नै मारी छूट वक्स राखै ह । हिन्दवा नै नियोजण जको मुसलमाना र परवार विकाम रो आयोजण ! आयावरती आपरै मीळ सभाव सू अेक ओरत वरतो । पण इया फागडदा फुड लोगा न दा चार बीवी सू ही नी रया है सरतो । क्यू के अठै तो सविधान री धरम निरपक्षता खुली है, दया भाव रो दरुजो उघाडो है । आप कमाया कामडा किण नैं दीजै दास वाळी कैवत न धरती माता साचै साची है ।

बागला देस म तोबा छाई, प्रधान म त्री (गाधी) री खुरसी मरणै आयाटा न दया देवण वेगी थरथराई । देस विदेसा हत्या री होळी रा समाचार घाल्या, बेहया याहिया रैं पापा नैं जोय र जगत नैं बतावण चाल्या । विमाण चढता वखत फौजा न सावधान रवण रा फरमायो अर सचिवा न सचेत कर र भी भगायो । नागरिका नैं सनसो कैयो के - 'वै खुद खतरै री जिम्मेवारी न समझै । म्हैं सग दंमा न भागना दन म आइ आफत वाळी बात जता र वेगी मुड आवूला । हमलो हवै तो जुड जाया, फौग्न पाँच जासू मन थारै बीच पाया ।'

अधिकरया रा हुक्म हुया । मिल्टरी आवारा मिनखा रा रिकाग मागा । पुलस वाळा रा गडका गाजया अर दस नम्बरिया र माथै जुत बाज्या । थाण चौकी सू हवालदार चढया । उवा किस्मी जासूस जाया अर साथ गूगा वानळा ही पकडीज र रोया । आप आपरै मौहल्ला म यारी-ब्यारी सडळया निगराणी वगी निकळी । काट गट राड मायाळी दुकाना कन गोना खावणियो एक गलो पकडीज्यो, जको पाकीस्थानी खुफिया लाध्यो । केइ हिन्दू भाई उवैरी आधी हिमरा चढ्या अर पाच-सात दुकाना

सू कढ्या । कयो—"या तो बावळो है ! दो तीन बरसा सू अठै पड्या फिरै है।" हवालदार तुरत परचा परखायो । बावळ फकीर री कमर नीचे बस्याडा छोटो विदसी वायरलेस कढा दिखाया । बावळै आपरो फाट-योडा हाफपट काटो बाधर फट हवालदार र हाथ सू वायरलैस सिमट री सड़क पर नीचे नखा दियो । पण जासूसडा पुलिस री पकड सू कटनी सक्या। सागीडो जरकाईज्यो अर मँग साची बाता हुकारघो। इयै बाव ळिय बनायो के—"म्हैं पाच साल सू अठै जासूसी करू। दा साल नागोर म र कर आया हू।" पुलस री इयकी रीस उमग जमी अर गरज गफलन गमी। दूजोडो तस्कर अळै फमकर निसर गया। आग चोर अर लार सिपाया रा जोर नालम जासूमडा जूनाडै गढ री खाई मे सरधम ऊमरग्या। पुनस रा कटो पैरो लाग गयो, मिनखा रा मेळा छाग्यो। जेवटा ल्याया अर मायनै बड र बारै काढया। नागरिक देखण खातर कीडीनाळ दाइ उळट्या अर मगरिय र एक रूप माय पळटया। दा सिफाया चोर र बडो घाली हर आपर थाण खानी लेय'र टुरया। केईमिनख पुलस र लारै चाल्या। पण केई थोथो थूक उछाळता आर घरा हाल्या। घणखरा लोग ता उव रो कूटा मारो देखणो चावै हा, पण केई खबर नवीम खूसट, उव रै मूढै री वात सुण नै खातर लफा हा। छेकडताणी थाण पर छीड नी रह सकी, पाछी भाजी भीड हुगी, सग लोग कुटनरी सू राजी हा!

बूटा री अेडी बाडी बाजी, थाणैदारजी आया, मासकारी गाळा काढी अर दो उळाथ खळकाया! कियो—"हरामजादा! तेरै पर मेरी पहल मे ही आख थी। शराब को दुकान पर देखा था, उसी दिन से तेरे पीछे सिपाइ लगा दिय थे। मगर दुकानदार के विश्वास दिलाने पर ही इतन दिन छाडे रखा। कल वह पागल फकीर पकडा गया, तब तेरा पीछा किया। भागन मे कौन छोडता था?"

वार खडी लागा आपसरी मे चरचा छेडी—"या कवरजी र घरा राजीना रोटी खावणजावतो अर उवा री मोटर म चढ र एक दो विरिया नाळ रै हवाई अड्डै ही जाय र आयो हो। पुलस बापडी काई कर? कारो दोम देवा! आपा ही तो इस्या विस्या मिनखा नै माय बडाय र राखा।" केया कया—"कमाई रा अै ही तो मारग है। तस्करी व्यापार

अठै इया सू ही चालै है" मूढै जिती बाता चाल पडी ।

राठौडी लेजै सू पल्लैदार धोती परया अेक सौखीन आदमी उवै थाण आयो अर थाणैदार रै खनै बैठ र गुणगुणायो । यो मिनख चोर रै साथ मिल्याडा ओजू छुटावणो चावै हो । इयै रै सिर माथै आटैदार केसरिया साफा अर डील पर पूरा काट हो, चोखो पुखता माणस लखावै हो। इयै नै देख र पकडियोडै जासूस रोवण रा घणा भाव बणाया । पण पुलस थाणैदार री भावुकता मे थोडा ही फरक नीं पडयो। चट्टो उपळा दय कर आयोडै सिफारसी मिनख नैं थाणै सू बार किया । चार न पछै धिनकार पगो'र सी० आई० डी० डार म दिया।

धर-पक्ड री ला लगन चाली, खाज खपत सू नगर रा नैडा अळगा खूणो रया नीं खाली । सोधा अर साधु नाय जर नक्टा, मोळा अर भगत आखा लोग लाय री लपट भेळा आया। पकड़ग चकामा चढया जद दुसमी जासूसणा रा काळज्या कढया । वै अठै रो आपरा अधूरा काम पूरा करता थका भाज छुट्या । सग लुक छिप र गैलै लाग्या । अेक जाते क्न जासूस आपरै वतन रो काम, नाळ रै हवाई अडडे रो नक्मा बणा वणो चायो । पण नक्सो ऊनार वतावणै रा काम काळ न आपर वनै चुलावणै रै बरोबर हो । सा उव साचश—' काळ ! काळ जेकर तो आसी ही अर छाडै नी, चोटा पकड'र साथ ल जामी भी ! मरणै सू पला मुलक रा या काम ता करणो ही चाय ' उवै सिइय। पडै जाय नै साधू र वस म नाळ रै नजीक अेक धावची रै धैरे नकली डेर रो धूणो धुखाया । गान पडी अर खबर भेजण खातर जुगत लडी । या माधू काले कांकड सू घड र पाकीस्तान रै धाम जा बडला । खुटा सू खरियत मागना खबर दणा मम कर है । जातो करता छाती धर दिन री दम्योडी सारी मीमा स्यारा अर नाळ र एराडराम ही हुम्यारी झोळी मू ट्रासमीटर काट र क्वणी पठाइ । दुसमी ज सूम, अडडै मू उलानर बठो निडर काम कर रया हा । उन टम कामड री गस्तवगी इय अडड मू दा तीन विमाण उडया । धाडा ऊचा चट र चाल्या ही इत्त न ता उवा रा वायरलम अटड रै खन बट माड रूप जामूस रा बोल्याडा (पाकीस्थान जावता) समचार सुणायग साग्या । उडना विमाणा म पार्सा... री रोटस्ट हावण लागी । अफमरा आपम री

सलाह-मोचना करी अर दडाछट पायलेटा नै पाछा नाळ रै अडडै विमाण घेर उतारण रा हीला मुळायो। पायलेटा धीराक सी वायाजी रा पालणा सा विमाण नीचै ल्यायर थाम्या। कमाटर सा'ब पैरैदार सिफाया रै हुवलदारा न अडड रै इडद-गिडद दा-नोन मील खोज करणै रो खौफनाक करारा हुकम कियो। हुवलदार अडडै री नाका वधी सू निकळ र जीपा सू दुसमणी अत्तो पत्तो जोवण लाग्या अर भाग जाग सू सीधा माधू खानी मुडया। इया नै आवता देख'र अेकलो वालता माडा वोला रया। माळा न गळ म घाल, बाळा मे वभूत बिखेरया तूमडी चकी अर आपरा डड कमडल झोळी र नाळिया गाठ देंवतो थको मावटण लाग्यो।

हुवलदार खनै जाय नै हाथ जाड्या अर मस्तर पाती दिखाळन री ओलियै मू अरज करी तथा अडडै री नीमा सू दूर जावणा रा आदस माळाया। औ नय फकीर चीपटो उठाया अर करामाती बाणी म उवामी खामत करणा पळायो—

"अलख भजा, मो भगत है। भगत लोग साधु सत को तग नही किया करत बच्चा! हमारे क्या यहा क्या वहा? हम ता रमत राम हैं! फक्कड हैं! यहा नही आग सही। चले जायेंगे। सभी भूमि गापाल का " अफ्टी राडी रोवणा रोया, झोळा पकडया अर दिखाण मू काठो काठो हुयो। हुवलदार जासूसी मता खिडार खटका कियो, बाव जी रा हाथ बाध र जीप मे नाख लिया। अडड रै अफसरा वता सूती, नपीड उपाडया, सिफाया सिट्टी मी कूट र घाण घाल दियो। नसो देय कर मगळी बाता हकराय नाखी।

भेखधारी जासूस वताया के— "म्है वरमा सू भीखेगा ठेकैदार रै घरा मावतो-उठतो अर खावतो पीवतो जासूमी करतो रैयो हू। म्हारी उणा साथै साठ गाठ ही। म्है उवा नै कोडा रो व्योपार करावतो। अमल, माना विदेसी साडी अर घडी जिसी चीजा बिना फून री छडी पाकीस्थान मू ठेकदार रै घरा आय पडी बिकै है। मीणै मे लाखा रा माल काक्ड मू पार करा ल्याया करतो। म्हैं पाकीस्थान रै मो० आई० डी० मे कनल रै पदमाथ हूँ। मीणो भी म्हारो मोस्ळा है। सरविस र मार्थे देस सेवा री हुमन पाळणै खातर ही अठै दर गुजर रया हू। रवा री ही हिद हवै?

कोई नी पिछाण पायो भारत म मुसळमान हूता ही हिंदवा सार्थ खायो-पिया। बिना माग मेहरबानी पाई अर जद ही आज या कुटळविद्या चौडै आई है। इयै ओरियै रा सारा समचार म्हारै सू माखर पाक पौंच्या है। मीण मास मू जावतो आवतो रयो हू। म्हारो कबीला वठै म्हारी तिणखा पर मौज करै। म्है अठै ठकेदार जिस्या तस्करी करणिया रै सार्फ स वसो कमावतो रयो हू।' कवत थकै नै बेहोसी आयगी। बूटारी डोकरा अर डडार गडीडा बडीडा म कापता डील हीगळू हो रयो हा। नर्सं म धुत कर परा र बेडया रै गणा म जयपुर री गाडी चढा दियो। पगो पग रेकाड रजिस्टड करवाय दियो।

पछै पाछी पकड चालो। पूलस वाळा उवै ठेकेदार अर दूजा तस्करी वेपार करणिया रा खोज कढया, खोट खोटर खाटा पर चाल्या। हाला-यता मे दाट दिया, सगळा रा माख सबूत नाट किया। ठेकेदार री जमानत नब्बै लाख री मागी, पचास सू कम किण नै ही नी छोड्यो। जणो जणी चारा रै खव चढचा अर आप-आपरै वेल्या री जमानत सू अेक रो अेक जणो बार कढयो। लाडकोड सू छूट र घरा आया, धरती माता रै भलापणै अर भाळापणै रा गुण गाया। नुगरा भारत री ऊपरी जै बोली जद सुणनिया लोगा उवा मतवाद री खोळी खाली। कयो— "साच नै आच कानी, ऊट चढयै नै कुत्तो नी खाव। आई अबळाई या ही तो आवै।'

गावावू इलाज

बीकानेर म जैया मडाण मारवाड मझ बैया ही बरतारै सू अजाण मालाणी री इलाको बाज। लोक कोरा धनवाळ, पसुपाल अर खोड रुखाळै, जिनडो रा मुख साधण बठै ओजू जावर नी वापरघा है। ना,रैल अर ना ही नाटक चेटक तथा खेल-खेल है। लोकी खाली खपत करती थकी कुत री भूण जीयँ मर। सिक्मा है न सफाखानो, याव है न डइ जखानो। वरसे बिना वाही नी अर मादगी म दुवाई नी ! मिनखापै रो राम रुखाळो है। सामरा दाई रामरै डारै डोलै डबकै !

रेवास ढाणी, ऊडो पाणी अर लाग भाळा भेड आळो लाणी है। मनस्या कर जको ही उठै जा कतर उतार ल्यावै। सागोडा सूधा है। ना, कर न काई लैकागो, च्या कर्न ने चकारो। अठै रा वासी आज र जुग सू पचासी साल लारै वगै। आयँ गयँ री पूजा करै, राज तेज सू डरै अर ठगा रा घर भरै। ढाढी नै अै राणो, वैद नै स्याणो तथा विरामण नै सरब मारयात राम रो रूप मानै। दूजो कीनै ही जाणै न बूझै ! सोचै न सूझै ! या कैवत इया माथै पूरी ढूकै के देखी अै सीधै री सोच, लेणा एक न देणा दोय !' इया रो तो सावरो ही सायक है, भाळा रै भगवान अर आघा री माखी राम उडावै।

छोटा गाव जर छोदा पाळा घर, पर की घर मे कोई नै सिर सिखा होय र ताव चढज्ज तथा बमार पडज्जै ता गरणियो मच ज्याव। सग साग भेळा होय र पूछ ताछ करण नै आव।

अेकर री बात गाव मे चौधरी रै डाबडे नै जोर रा ताव चढग्या।

सनीपात वणभी अर वा बावळवद्दा करतो थको बलण न लागग्यो। बात, ताप री मुगता ही आखा गाव चौफनो हुग्यो। भाजा नासण करी अर दाना दाठीक मिनख रातू रात जाय'र दूजें गावडें मू भट स्याणो बुला ल्याया। स्याणँ आय'र चट चौधरी रै वेटै री नब्ज टाही, जद जाय र वसती री कास की कम हौई। दूध म जावण सा लाग्या, लोग जम्या अर सामो भाग्या। सगळा रै जी म थ्यावस आ गियो।

पण स्याणा आयो जका ही स्याणा नही, जखाणा जाट अर अकड उस्ताद। नाड दख परा'र मूढा सुजा लिया। बाल्या न चाल्यो टूपीज'र करडा ठठ बणग्या। कणाही वडक सी दैव, होठा मे ही की नाव सा लेव अर घर आळा माथै मूज वळ। रीस म आठो टुग्ड हाय र फुफावै।

काटक र कवै— म्हैं हुमैं के करू ? थारा हियो फूटेडा हा के ? मनै इत्तो मानो कावर बलाया ? रोगी र तो घणा दिना सू सरद गरम भेळी हो रही है। इमो म्हैं किसा भगवान हू जका जरडकै'र दोना ने भेळी भान नाखू ! दब्योडो रागी कया झाल्यो जाव ? पण मिनख रो काम, जवाब देऊ ता दुरनाम ! इय रोग रै हुई (सूइ) रो जलाज करणा पडही ! (ममझ्याक नी मूई रो) वगा सा हुई ल्यावो। आजकळ आ ही अलाज चालै।'

गाव आळा भेळा भेळा हुया अर सग मुणता रिया। ना ता व ग्रामो फान री सूया नै जाणा अर ना हा काई गैस बत्ती या दूजी बत्ती कळ हाली नै पिछाणा। बार तो आडजिया मेखलियो सीवण आळी सूया ही घरा लाधँ ही। भाजिया अर आप आपरै घरा सू सोज र माक्ळी आछी माडी सूई ल्याया। गाव री लुगाया इत्तै ने बाडया चढगी अर उपराडै कर सप सपाटिया करण नै लागगी।

बूढी डोकरचा डरी अर आपस री मे वाता मरू करी। बोली— 'बिरया ! ओठ बिरतन चाल्यो है अ ? किमाक फैनाल वापरया है। म्है तो राग ही मोकळा देख्या, स्याना ही घणा ही आया। पण सूया स तो राग कैण ही आछो नी करचो ! आज ताई तो कुलडियाळी उकाळी अर चिडी खेतियाळे काढै रा ही औखद हा। घासा घूटिगो अर झाडो झपटा ही करोवता। पीड पर चाचवा तया साई सूजन माथ सीगडी-टोइया ग्यावना

कगावना गिरा, सूयाळो स्याणो तो आज ही सुण्यो इत नै पछै दूजाडी दाने बूढळी बोली—"मनै तो हूमैं रामजी उठाय लेवै तो चोखा रवै ! बोने आग्या सूं नूवा नूवा कौतक रासा लेणा नी जावै !"

स्याणे सूया जाई अर पाछी फरणाई। बाल्यो—"दीसै कोनी ? सग बागदा दीसा ! अटक्ळ हूं ही बमोक, काई मिनख ही है ? राम निसर ग्यो थारो ! रागी बरडावै, रोग बरडो वधता जावै अर ये काठा माठा आटा-टूटी सूया स्यार दिखाळा ! आग कोइ डागरा थोटो ही है ? मिनख रा काम है नी ? मोटी अर मखरी हुई त्यावा। नक्साण नी पूच ज्यावै ! बगा काम पर घाला ! का मन वजनाई दगाऊ हो ? मोटी अर हूखरी हुई बिना काम तारै जावै नहीं। नही है तो जावक नाट ज्यावैं, जश्ता म्हू म्हारा गत्ता लू। मादै मिनख नै हाथ घालणो हसी-खेल थोडो ही है ?'

स्यण री लूठी दबडक सू घर वाळा मैग दडकीजग्या अर हाथा जाडी करण नै लगग्या। बोल्या—'वार गाव रा जाया आघा चूसा हा, की कानी जाणा ! म्हारी आग्या अधारो थारी चडूड च्यानणा है। माच पन्यै डावड री चिन्त्या मे चूर होरया। उपाय नी सूझै। हाथा वामण छूटरया है, पट म पाताल चाल गया है। म्हारी मूरखता माथ धूळिया दवा अर सूई रा अलाज करणो हाथ म लेवो सा ! म्हारै तो थ राम बराबर हो। मालक हो सा ! उबारस्यो तो उबरस्या। गुवाटी रा दीया बुझ ! मानखा दरावो सा ! डूबती नौका नै वेगी कराडै लगावा, पार उतारो !"

दूजा मिनख भाज'र गया। गुदडा म डारा घालण आळी लामी माटी वद सूया बठे ल्याया अर सगळा स्याण न सूपी। स्याणै आग्या चाढी अर सूया मामन आयोडी माय सू अेक ऊजळी दल'र काढी। लुगाया टाबरा स्यू घर खाली करायो अर बेमार रा बुडतियो फाड र अळगा बगाया। एक तूकियाळै मास मे लामी सगळा घमोड दी ! अकूणो रै खनै मू माढ ताणी चोड दी ! ताव म सूतो चौधरी रो बेटो चिमक्यो, चिरळाया अर जार मू अरडायो। जद स्याणो क्यो—'वैस !! वैस ! हूमैं हाकेही सायरा आय जासी। सूई साची जगा लागगी है।" लोगा हाथ जोड लीना रोक्ना, रिपडा सू स्याणै रा गूभा भर दीना।

जेक कवत है— 'ढाणो म ढोलण ही मूवा ।" दूध पीयें अर चूरमें। जीम गाव म आडू हकीम अरड फ्रावें। छार रो हाथ पीडा सू सूज घर-घ~ रो लोक बूझें तथा स्याणो गूज कव—"दखो, रोग हमें टाबर र डील सू कढे अर एक जगा आवे हुड रे को चर हू बारें जाव। डेढ ~ो दिना म हफ्ता (मफ्ता) उठ जाही। रेंयो खेंया रधी रें रुप हु वे आहो, टरणें री कोइ वात नहीं। मरणें री पुळ टळ गई। अलाज आवरो अकरो असर उठावें। रोगी नें गाभा हू जरू दाबटे रारया, खोभा जावत रोग रा चालेला।"

पलाण पाछो माडयो घासिमो घाल'र स्याणो पुगायो। पण चौधरी बाल्यो—' बटे रें सायरा नही आयो। रात दिन कूकें बकरियो बोकें जिया विलारें। हाथ हाथी रें पग रें लगभग होरिया है, काई दूजा हेदकी ल्यावो म्हारें सू ना जायडें रा रोवणो सेंयो नी जाव।' उवें टम भाग सू कोई महरियो मिनख थाय मिल्या। रोवणा सुण र उव रोगी नें खनलें सहर रें मफाखानें वेगा ले आवण करडी मला दीनी। बळदा गाडी पर गूदडा जिछाय र सुवाण्या अर महर खानी लेय र चाल्या। छारो हावतो जुवान हा, देखण हाळी ज्यान न चि~त्या लागगी। महर पौंच्या अर आव टळा। मफाखानें म डाकघर अर कम्पाउडरा छोर न देख्यो। पण छारा आपरें हाथ माथ दूजा हाथ नी लगावण दवें।

अळगें सू ही गूघावें, टोळी मारें अर गाभा फाडें।

डाक्टर पूछ्यो—' क्या हुआ ? यह हाथ कैसे पक रहा है ? इतना सोजन क्या आ गया है ?

छोरें रा बाप बोल्यो—' तप चढ्या अर बरडावा लाग्यो। जद स्याणें सूई दीनीमा !"

डाक्टर भळे पूछ्यो—"कौनसी सूइ दी थी ? और कहा स खरीदी थी !

चौधरी बाप कव—"लामी माटी खरी सूई ही सा ! नवी नकोर गवारिया खन सू लियोडी ही। चाढना ही छोरा चिग्ळा उठया अर चेनो कर लियो। नही ता गूम छूम पडयो।

डॉक्टर पूछ्या—' पॅनिसिलीन दी थी क्या ?

बाप बताय—'पैरवामोसन हाळो नही हो ना! सोदैई हाळी ही। मूंडा, राती अर उपरान भीषण हाळी मोटी हुई ही। म्हू तो भरकर बदा अर सामा उफराट सूई सू ही भींयो ना। सूई म कोई खाट ना हा। खाना सा पड्या ही, स्याणे पूरी मो म बजाण दानी। बाप बतावै छोरी बीच बिबाळ ही बिलबिलावै अर निना पानै हाथ ताता तवा कूं 'दिरा मचा रात्रा है। डाक्टर बूनिया टावै, हाथ लागता ही छोरा रोवै। नाट माहरा साफल्दा नकन। नहर्वै!

डाक्टर दस'र घर आळा माथ भूंज बडकै।

कव—"अरे मूरखा! यह सूई किसन गडा दी?'

बाप कव—"स्याण दोनी सा! मसरी सूई लगाई। आप वम मनी करा थाई म्हाटो नीलो नी हा। बिसवार राखा सा, उधकी सूई ही। दम काना म सू छटवी हो।'

माना माल्या, डाक्टर रै जी सवा दुख माल्या! रागी रै मार्ईला न गाठ निवाळी अर औजार मगाय र टावर र बूनिय म सू सूइ पाछी, काडा लाही राध रा तूनिया नीर हूना। हाथ रै मलम लगाय र पाटी बाध दी। गाळी दय र वैद माथ भुवाण दिया। वडै सनव प्यार सू थप थपाया अर तुरत आछा अर दवण रा धीरज बधाया। पछ थाणदार तमीनदार न रिपाट करी अर आपरै असपताळ चलाया। पचायत समिति रा प्रधान अर बी० डी० ओ० नळे डाक्टर र चपरासी साथै आया। सग जाण सफाखान बढ्या। डाक्टर सूई री सारी बात बनावता थका जड्या। रागी रै हाथ मू काढेडा गुनमरा स्याय र दिखाळ्या अर डाक्टर र घरम न पाळ्या। बारनै गावा रै भिनखा री मूरखता माथै आयाडा आखा आदमी हस्या-बस्या।

थाणदार चोधरी न कया—सूई किसने लगायी थी? नाम बताओ। मैं उसका हथकडी लगाकर चालान करूगा।

चौधरी कयो—'स्याणा हामा! मसरी सूई लगायी। उव र हथ-कडी कांइ बात री लगावो सा? मायरा आयो नी आया, उवै रो काई कसूर? वा काई भगवान थोडा ही हो? म्हारै ता बापडै गुण ही करयो, गुण न आगण कैया माना। डाक्टर कांई करै? मुइ ना काढै? पली चाढणी

दारी है नी।"

थाणदार भळै पूछ्यो —' वह तुम्हारे गाव का था क्या ? उस अनाडी वैद्य का नाम क्या था ?"

चौधरी कयो—"गाव रो ठा कानी सा ? गैल वगतो वटाऊ हो। म्हारै ता छारै रो अलाज मन सू करयो सा। बापडै आपरा काम छाड'र म्हारो पल्या करया। म्हा सू तो का कूडी कहीजै नी, सूई रो अलाज हर काइ थोडी ही कर सकै ?'

प्रधान बीच बिचाव करतो बाल्यो। "गाव रा आदमी डोफा हुव ? काई पूछो ? करसा रै काम नै अब्बाँ आप घणो वधावो मतीना, गरीब मारया जासी। म्हारै कैणै सू ही माफी दिरावो थाणेदार साब ! म्हैं ग्राम सेवक न मेल'र हणै री घडी मगरै ताई सारै इलाकै म डूडी पिटाय दसू। भळै कोइ इसो काम नी करसी-करासी !

पुलिस थाणेदार चौधरी नै कयो—"चौधरी जी आज तो मुझ प्रधान जी की राय मान कर फकत आपको एक मौका दना पड रहा है, आइन्दा एसा इलाज फिर कभी करवा लिया तो सदको जेल भिजवा दूगा समझे !"

चौधरी उथळो दियो—"क्याने सा! इसी मती करया ! सखरी सूई ही, आजकळ तो सुणा, सूई रो ही अलाज चालै। स्याणा नै जळ कुण कर ?'